आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अगस्त, 2012 ★भाद्रपद, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

व्हिएतनाम, मलेशिया, फिलिपाइल्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया, इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारै, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सौदी अरबिया, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहीरन, अझबैजन, तजाकिस्तान, अल्वेनिया, नामिबिया, चीन, अफगाणिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र

'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगाँव ✆ 0257-2223903

''स्वर्णतीर्थ'', आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद ✆ 0240-2244520

''नयनतारा इस्टेट'', उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक ✆ 0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है। *मानवीय आहार शाकाहार।*

R-04.09.12 2748

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। श्री महावीराय नमः ।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

– आचार्य श्री हीरा

S. D. GEMS

Exporters, Importers &
Manufacturers of Diamonds

Add. : 202, Ratnadeep, 76-J.S.S. Road, Mumbai-400004
Tel. : +91 22 23684091, 236666799
Fax : +91 22 40042015
Email : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष श्री जैन रत्न युवक परिषद मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Mobile : 9820350814, Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी *हिन्दी-मासिक*

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

एयमट्ठं सपेहा,
पासे समियदंसणे।
छिंद गेहिं सिणेहं च,
न कंखे पुव्वसंथवं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.4

यह अर्थ समझ निज प्रज्ञा से,
सम्यग्दर्शी मन भाव धरे।
आसक्ति स्नेह का मूल काट,
परिचित जन की ना चाह करे।।

अगस्त, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
प्रथम भाद्रपद, 2069

वर्ष 69 अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार,जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	कर्म-सिद्धान्त	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
	वाग्वैभव(6)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
प्रवचन-	आत्मालोचन से होती है आत्म-शुद्धि	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	14
तत्त्व-बोध-	मिथ्यात्व एवं उसके भेद	-श्री जशकरण डागा	25
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (75)	-श्री धर्मचन्द जैन	61
चिन्तन-	अपरिग्रह : नैतिक आचरण की समग्रता	-डॉ. शिवनारायण जोशी	31
समाज-चिन्तन-	बात कुछ और है, पर खास है	-श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरडिया	36
शोधालेख-	प्रतिक्रमण से करें आत्मा का कायापलट	-डॉ. आर्या सुप्रभा 'सुधा'	37
प्रासंगिक-	क्षमा : सुख-शान्ति का प्रशस्त मार्ग	-डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन	45
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Social Relevance of Caturviṁśati Stava (Hymn in Praise of the 24 Tīrthaṅkaras)	-*Dr.Samani Shashi Prajñā*	49
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(17)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	55
नारी-स्तम्भ-	इण्टरनेट की दुनिया में गुम बचपन	-श्रीमती बीना जैन	65
युवा-स्तम्भ-	तनाव तथा चिन्ता से मुक्ति	-श्री के.एस. गलुण्डिया	67
स्वास्थ्य विज्ञान -	प्रभावशाली निर्दोष चिकित्सा पद्धति : एक्यूप्रेशर	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	73
बाल-स्तम्भ -	स्वतन्त्रता का आनन्द	-डॉ. दिलीप धींग	81
कविता/गीत-	मत भूलो जिनवाणी को	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	59
	नव इतिहास रचाता है!	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	60
	नाम की भूख	-श्री हनवन्तमल लोढ़ा	63
	पर्युषण	-संकलित	64
	हास्य-व्यंग्य क्षणिकाएँ	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	70
	एक सच्ची दास्तां	-रेणु सिरोया	71
	दोनों की महिमा भारी है	-डॉ. अजित एच. जैन रांका	78
	जीवन की भोर	-श्री दिलखुशराज जैन	79
	हम स्वतंत्र है	-श्रीमती कमला सुराणा	83
	गुरु शरणम्	-श्री निर्मल झामड़	89
	सन्मार्ग दर्शिनी जिनवाणी	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	84
विचार-	जीवन की प्रगति के लिए	-श्री नितेश नागोता जैन	72
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	85
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें (29)	-श्री नमन मेहता	87
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (29)	-संकलित	90
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		96
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		117

सम्पादकीय

कर्म-सिद्धान्त

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

कर्म-सिद्धान्त जैन दर्शन का विशिष्ट सिद्धान्त है। कर्म का जितना सूक्ष्म विवेचन जैन साहित्य में उपलब्ध होता है, उतना अन्य किसी धर्म-दर्शन के ग्रन्थों में नहीं। कर्म सिद्धान्त का प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को असत् कर्म से सत् कर्म की ओर प्रेरित करना है। यही नहीं मिथ्या और सम्यक् का भेद निरूपण करते हुए सत्प्रवृत्ति के माध्यम से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करना भी कर्म-सिद्धान्त का प्रतिपाद्य है। मूलतः यह माना जाता है कि जो जैसा कर्म करता है उसे उस प्रकार का फल प्राप्त होता है- यादृशं कुरुते कर्म, तादृशं फलमश्नुते।। यह सिद्धान्त स्पष्ट करता है कि जो शुभ कर्म करता हैं उसे तदनुरूप शुभ फल की प्राप्ति होती है तथा जो अशुभ कर्म करता है उसे अशुभ फल की प्राप्ति होती है- **सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवन्ति, दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवन्ति।**

समस्या यह है कि मनुष्य बुरा कर्म करके भी अच्छे फल की आशा रखता है। वह बाहर से अपने को अच्छा दिखाने का प्रयत्न करता है, किन्तु भीतर से मलिन वासनाओं एवं विकारों से युक्त होता है। वह बाहर में लोगों को भले ही धोखा दे सकता हो, किन्तु भीतर की चेतना के साथ सम्बद्ध कार्मण शरीर में अंकित कर्म संस्कार दर्पण की भांति सत् और असत् कर्म का लेखा-जोखा रखते हैं तथा तदनुरूप फल की प्राप्ति होती है। जिस प्रकार एक कम्प्यूटर चिप में अनेक प्रकार के प्रोग्राम अंकित रहते हैं तथा जैसा प्रोग्राम उसमें फीड किया जाता है उसी प्रकार वह उसमें अंकित रहता है। इसी प्रकार सत्-असत् कर्म का संस्कार भी कार्मण शरीर में अंकित रहता है। वह संस्कार कभी सुप्त होता है तो कभी जागृत। जब वह जागृत होता है तो हमें उसका अनुभव होता है, किन्तु जब वह सुप्त अवस्था में अथवा सत्ता में रहता है तो उसका अनुभव हमें नहीं हो पाता है, परन्तु वह सुप्त संस्कार भी अपना फल देने की शक्ति रखता है।

व्यक्ति वैसा ही बनता है जैसी वह दृष्टि रखता है तथा उस दृष्टि के अनुसार प्रयत्न करता है। यह कर्म सिद्धान्त का एक प्रमुख सूत्र है। विषयभोगों में सुख मानने वाला व्यक्ति उन भोगों की सामग्री जुटाने में ही अपना प्रयत्न करता है, तब उसे वैराग्य दूर की कौड़ी नज़र आता है। भोगों से विरक्त को ही वैराग्य का फल प्राप्त होता है।

'कर्म' शब्द भारतीय परम्परा में मुख्य रूप से दो अर्थो में प्रयुक्त हुआ है। एक तो प्रवृत्ति के अर्थ में तथा दूसरा प्रवृत्तिजनित संस्कार के अर्थ में इसके अनुसार योग और कषाय पूर्वक प्रवृत्ति करने पर जो कार्मण शरीर में संस्कार अंकित होता है, वह कर्म है। भगवद्गीता में जब '**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**' कहा जाता है तो वहां कर्म शब्द का प्रयोग प्रवृत्ति अर्थ में हुआ है। इसी प्रकार सत् कर्म असत् कर्म आदि शब्दों में कर्म शब्द का प्रयोग

प्रवृत्ति अर्थ में हुआ है। मीमांसा दर्शन में कर्म शब्द का भूरिश: प्रयोग हुआ है जो यज्ञादि प्रवृत्ति के अर्थ का ही सूचक है। जैसा कर्म किया जाता है वैसा फल प्राप्त होता है इसे प्राय: सभी भारतीय दर्शन अंगीकार करते हैं। योग दर्शन में शुक्ल, कृष्ण आदि कर्म स्वीकार किये गये हैं, जो शुभ अशुभ कर्मों के ही द्योतक हैं।

जैन दर्शन की स्पष्ट मान्यता है - अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे। दु:ख स्वयंकृत हैं परकृत नहीं। इसका तात्पर्य है कि अपने दु:ख का उत्तरदायित्व अपने पर है, कोई दूसरा हमें दु:खी सुखी नहीं करता। समाज में प्राय: लोगों की यह धारणा रहती है कि अमुक व्यक्ति हमें तंग करता हैं, दु:खी करता है अथवा अमुक व्यक्ति हमें हर्षित करता है। यदि यह मान्यता रही तो कोई कभी भी अपने दु:ख से मुक्त नहीं हो सकता। वह सदैव दूसरों को ही अपने दु:ख का कारण मानता रहेगा। जैन दर्शन का मंतव्य है कि बाह्य रूप से कितनी भी दु:खद परिस्थिति हो किन्तु कोई साधक उसमें समभाव से रहना सीख लें तो वह दु:खद परिस्थिति उसके दु:ख का कारण नहीं बनती है। वह दु:ख की परिस्थिति में भी भीतर से आनंद का अनुभव करता है। बाह्य परिस्थितियां प्रबल पुराषार्थी साधक को नहीं डिगा पाती हैं। तीर्थंकर पार्श्वनाथ, प्रभु महावीर, मेतार्य मुनि, गजसुकुमाल मुनि आदि अनेक उदाहरण इसके साक्षी हैं।

चेतना की शक्ति पुद्गल की शक्ति से बढ़कर है। कर्म पौद्गलिक है तथा आत्मा चेतन है। पूर्वबद्ध कर्मों का प्रभाव चेतना पर पडता है, इसमें कोई संदेह नहीं। तथापि आत्मा में इतना सामर्थ्य है कि वह कर्मों के उदयकाल में समभाव की साधना का पुरुषार्थ करता हुआ कर्म के प्रभाव को क्षीण कर देता है। पौद्गलिक कर्म और चेतना में कौन बलवान है, इसके सम्बन्ध में कथन मिलता है कि कहीं कर्म बलवान होते हैं तो कहीं आत्मा बलवान होती है। जब कर्मों का अत्यन्त तीव्र अशुभ फल प्राप्त होता है तो आत्मा की शक्ति कुंठित हो जाती है तथा वह कर्मों के परवश होकर अपना भान भूल जाता है, किन्तु जब तीव्र फलोदय न हो, तथा अपनी प्रज्ञा जागृत हों तो कर्मफल के उदयकाल में भी साधक अप्रभावित रह सकता है। महान् साधक तीव्र फलोदय काल में भी समत्व भाव को अपनाकर उससे अप्रभावित रहते है।

जो लोग कर्मों के फलोदय के वशीभूत होकर आत्मचेतना को कुंठित अनुभव करते हैं, वे भाग्यवादी बन जाते है। किन्तु जो अपनी चेतना एवं उसकी शक्ति पर विश्वास रखते हैं, वे पुरुषार्थवादी बने रहते है। यह सच है कि व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का निर्माण करता है। जो जैसा कर्म करता है उसका भाग्य वैसा ही बनता जाता है। इसलिए जिसे अपने भाग्य को बदलना है वह आत्मशक्ति पर भरोसा रखे एवं पुरुषार्थवादी बने। जैन दर्शन में यह स्वीकार किया गया है कि अपने द्वारा पूर्व में बांधे गये कर्मों में भी परिवर्तन संभव है। यह परिवर्तन मनुष्य के पुरुषार्थ को बलवान सिद्ध करता है। जैन दर्शन में आठ प्रकार के करणों में उद्वर्तन, अपवर्तन, संक्रमण आदि ऐसे करण हैं जो पूर्व में बांधे गये कर्मों को नये बांधे जाने वाले कर्मों में परिवर्तित करते रहते है। इस परिवर्तन के माध्यम से दु:खदायी असातावेदनीय कर्म की

प्रकृति सुखदायी सातावेदनीय कर्म में बदल सकती है। कोटाकोटि सागरोपम की कर्मस्थिति घटकर अत्यन्त अल्प रह सकती है। कर्मों की तीव्र फलदान शक्ति घटकर अल्प फलदान शक्ति में बदल सकती है। कर्मसिद्धान्त का ऐसा सूक्ष्म प्रतिपादन मनुष्य को सदैव लक्ष्यपरक पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है तथा निराशा के बादलों को तिरोहित कर देता है।

जैन दर्शन में आठ प्रकार के कर्मों का निरूपण हुआ हैं- ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अन्तराय। ज्ञानावरण कर्म आत्मा की ज्ञान शक्ति को ढक देता है। दर्शनावरण कर्म आत्मा की संवेदन शक्ति को आवरित कर देता है। वेदनीय कर्म सुख या दु:ख की अनुभूति कराता है। मोहनीय कर्म दो प्रकार का है - दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय। इनमें दर्शन मोहनीय कर्म मनुष्य की सम्यग्दृष्टि पर पर्दा डाल देता है। इस कारण मनुष्य को सत्य का दर्शन नहीं होता। जिस प्रकार कोई हरा चश्मा लगाकर वस्तुओं को देखता है तो उसे वस्तुएं हरी दिखाई पड़ती है इसी प्रकार मिथ्यादृष्टि व्यक्ति को जो भी ज्ञान होता है वह मिथ्यात्व से युक्त होता है जिसे अज्ञान कहा जाता है। वह पराधीनता में स्वाधीनता मानता है। वह नश्वर सुखों में स्थायित्व का भ्रम पाले रहता है। उदारता एवं सहिष्णुता को अपने दोष मानता है। इन्द्रिय ज्ञान को ही प्रमाण मानता है। विवेक ज्ञान एवं प्रज्ञा से विहीन बना रहता है। चारित्र मोहनीय कर्म के कारण मनुष्य क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी शत्रुओं से आक्रान्त रहता है। वह चाहते हुए भी उनसे छुटकारा प्राप्त नहीं कर पाता है। कुछ जीव भोग सुख में ही जीवनबुद्धि मानने के कारण अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ से ग्रस्त रहते हैं। कुछ जीव इन भोगों को बुरा मान करके भी इनके त्याग को ठीक नहीं मानते हैं। इनसे प्रशस्त कुछ जीव भोगों के त्याग को ठीक मान करके ही उनका त्याग करने में समर्थ नहीं होते है। जो त्याग कर देते हैं, वे साधना के मार्ग में आगे बढ़ जाते हैं उनको बाह्य परिस्थितियां प्रभावित नहीं कर पाती हैं। आगे बढे हुए कुछ साधक बहुत हलके रूप में क्रोधादि कषायों से ग्रस्त होते हैं। कामवासना, हास्य, भोगरुचि, धर्मअरुचि, शोक प्रवृत्ति, भय आदि के कारण चतुर्विध कषायों में वृद्धि होती रहती है, अत: साधक को इन पर भी विजय प्राप्त करने का उद्यम करना चाहिये। आयुष्य कर्म के कारण कोई जीव नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव भव को प्राप्त करता है तथा उस भव में निश्चित काल तक जीवनयापन करता है। नाम कर्म के कारण जीव को नरकादि गति, एकेन्द्रिय आदि जाति, औदारिक आदि शरीर, त्रस-स्थावर आदि विभिन्न प्रकृतियाँ प्राप्त होती हैं। गोत्र कर्म से जीव उच्च एवं निम्न संस्कारों से युक्त होता है। कोई नीच कुल में जन्म लेकर साधना के द्वारा उच्च गोत्र को प्राप्त कर सकता है। यह जैन दर्शन का अद्भुत विधान है जो चेतना के विकास की सम्भावनाओं के द्वार सदैव खुले रखता है। अन्तराय कर्म जीव के दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य आदि गुणों को बाधित करता है। इस कर्म के कारण जीव में उदारता, भोगेच्छाविनाश, माधुर्य, सौन्दर्य, पराक्रम सदृश गुणों का प्रकटीकरण नहीं हो पाता है।

अनादिकाल से जीव कर्मों से आबद्ध है, किन्तु वह अपने सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान और सम्यक् चारित्र के द्वारा कर्मों के बन्धन को समाप्त कर सकता है। कर्मों का बन्धन समाप्त करने के लिये नये कर्म बन्धन से बचाव आवश्यक है। वर्तमान में सम्यग्दर्शन पूर्वक की गई निरवद्य प्रवृत्ति भावी कर्मों के बन्धन को रोकती है, जिसे जैन शब्दावली में संवर कहा जाता है। पूर्व में संचित कर्मों को तोड़ना भी आवश्यक है जो सम्यक् चारित्र एवं उसी के भेद रूप सम्यक् तप से संभव है। कर्मों के तोड़ने की इस प्रक्रिया को जैन दर्शन में निर्जरा कहा गया है। सवंर और निर्जरा दो प्रमुख साधनाएं हैं जो व्यक्ति का रूपान्तरण करने में समर्थ हैं।

कुछ जैन विचारक यह प्रतिपादन करते हैं कि जिस प्रकार अशुभ कर्म बन्धनकारक है उसी प्रकार शुभ कर्म भी बन्धनकारी है, इसलिये शुभ कर्म भी नहीं करना चाहिये। यहाँ ज्ञातव्य है कि शुभ कर्म वह सोपान है जिसके माध्यम से अशुभ कर्म का संवर होता है तथा शुद्धता की प्राप्ति की ओर अग्रसर होने के लिये मनुष्य भव आदि की योग्यता प्राप्त होती है। कषायों में वृद्धि होना अशुभ है तथा विद्यमान कषायों में कमी होना शुभ हैं। इस शुभ के द्वारा यदि पुण्य कर्म का अर्जन होता भी है तो वह आत्मा के गुणों का घातक नहीं होता। जितना भी पुण्य कर्म है वह अघाती है, केवलज्ञान होने में वह बाधक नहीं साधक है तथा अंतिम शरीर छूटने के साथ सभी पुण्य कर्म स्वत: छूट जाते हैं।

जैसा कर्म किया जाता है वैसा फल प्राप्त होता है, इसका तात्पर्य यह नहीं कि मैंने किसी के थप्पड मारा तो वह वापस मेरे थप्पड ही मारेगा। वह चाहे तो थप्पड मार सकता है, चाहे तो घूसा और लात मार सकता है, चाहे तो पत्थर से या अन्य शस्त्र से आक्रमण कर सकता है और वह चाहे तो बिना प्रतिक्रिया के भी रह सकता है। अर्थात् वह उस थप्पड का बदला लेने के विचार से रहित हो सकता है, किन्तु मैंने जिस क्रोध के आवेग में आकर थप्पड मारा है उस आवेग से मैं स्वयं अशांत बना हूँ, उद्विग्न हुआ हूँ यह भी मेरे थप्पड मारने के कर्म का तात्कालिक फल है। इस क्रिया के साथ जो मेरे मन में उस व्यक्ति के प्रति द्वेष का भाव अथवा घृणा का भाव पैदा हुआ है उसका फल मुझे बाद में भी मिल सकता है। उसके पुन: दिखाई देने पर मेरे चित्त में द्वेष आदि के भाव प्रकट हो सकते हैं। कदाचित् वह व्यक्ति न मिले तो भी मेरे चित्त की दशा मुझे अशुभ कर्मों का बंध कराकर किसी न किसी रूप में फलभोग अवश्य करायेगी। द्वेष का दुर्गुण पुन: द्वेष करने से बढता ही है, घटता नहीं है। इसलिये कर्म का फल बाह्य प्रतिशोध के रूप में दिखाई दे, यह आवश्यक नहीं है। किन्तु चेतना के स्तर पर इसका फल किसी न किसी रूप में प्राप्त होता ही है, इसमें संदेह नहीं है। इसलिये समस्त साधना चेतना को निर्मल बनाने के लिये की जाती है। पर्युषण पर्व हमें अपनी चेतना को निर्मल बनाने की प्रेरणा करता है। कर्म सिद्धान्त की सही समझ इसमें हमारा सहयोग करती है। यदि हम निर्मल होना चाहते हैं तो मन, वचन एवं काया के स्तर पर प्रत्येक प्रवृत्ति को इस प्रकार करें कि नये अशुभ कर्म का बंध न हो। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

श्रमणपद

तं बिंतऽम्मापियरो सामण्णं पुत्त! दुच्चरं।
गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणो।।
समया सव्वभूएसु, सत्तु-मित्तेसु वा जगे।
पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करा।।
निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावाय-विवज्जणं।
भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं।।
दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं।
अणवज्जेसणिज्जस्स, गेण्हणा-अवि दुक्करं।।
विरई अबंभचेरस्स, कामभोग-रसन्नुणा।
उग्गं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं।।
धण-धन्न-पेस-वग्गेसु, परिग्गह-विवज्जणं।
सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं।।

माता-पिता बोले उसको, प्रिय तनय! श्रमणपद है दुश्चर।
गुण हजार भिक्षु को धारण, करने होते हैं दुष्कर।।
शत्रु-मित्र सब जीवों में, जगती पर समताभाव रहे।
आजीवन का व्रत दुष्कर है, हिंसा से उपरत बना रहे।।
अप्रमत्त यह सदा काल, मिथ्या-भाषण-वर्जन करना।
बड़ा कठिन है, सावधान मन, हित प्रिय सत्य सतत कहना।।
बिना दिये दतौन आदि को ग्रहण व्रती को ना करना।
दिया हुआ भी एषणीय निर्दोष वस्तु दुष्कर गहना।।
कामभोग के रस ज्ञाता को, है कुशील का त्याग कठिन।
उग्र महाव्रत ब्रह्मचर्य को धारण करना है महाकठिन।।
धन-धान्य तथा सेवक-जन में ममता का परिवर्जन करना।
बड़ा कठिन आरम्भ-परिग्रह की मन से ममता हरना।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, उन्नीसवाँ अध्ययन, मृगापुत्रीय, गाथा-25-30

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

धन और धर्म

- धन से भोग-उपभोग की आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त की जाती हैं और उनसे वस्तुओं के अभाव के कारण जो छटपटाहट थी, वह शान्त होती है; परन्तु नित नयी बढ़ती लालसा को धन नहीं मिटाता।
- धर्म भोग में प्रीति घटाता है और नवीन आकांक्षाएँ बन्द करता है। जब आकांक्षा का रोग ही नहीं होगा तो पूर्ति के लिये धन की आवश्यकता भी कम हो जायेगी।
- धन रोग को नहीं मिटाता, वह रोग के लिए दवा दिला सकता है। धर्म रोग के मूल को नष्ट करता है और उदित रोग को सहने की क्षमता प्रदान करता है, जिससे मानव अभाव में भी मानसिक शान्ति बनाये रख सकता है।
- धन वर्गभेद कर मनुष्य को मनुष्य से टकराता है, वहाँ धर्म प्राणिमात्र में बंधुभाव जगाकर परस्पर मैत्री और निर्वैरभाव का संचार करता है।
- धन मन में चंचलता, भय, शोक के भाव उत्पन्न कर नई उपलब्धि के लिए प्रेरित करता और प्राप्त की रक्षा के लिये चिन्तित रखता है।
- परिग्रह अधिकारवाद है। पशु वनों में मुक्त मन से परस्पर मिलकर खाते-पीते हैं, अधिकार नहीं रखते, वैसे ही मानव बिना अधिकार-ममता के रहे तो कोई दुःख नहीं। महावीर ने मानव ही नहीं, प्राणिमात्र के साथ मैत्रीभाव की घोषणा की।
- धर्म हृदय की बाड़ी में उत्पन्न होता है। वह किसी खेत में पैदा नहीं होता, न किसी हाट दुकान पर ही मिलता है। राजा हो या रंक, जिसके मन में विवेक है, सरलता है, जड़ चेतन का भेद ज्ञान है, वहीं वास्तव में धर्म का अस्तित्व है।
- धर्मरूप कल्पवृक्ष की वृद्धि दयादान से होती है। इसीलिये कहा है-"दया-दानेन वर्धते।" बढ़ा हुआ धर्मवृक्ष क्षमा के बिना स्थिर नहीं रह सकता, इसलिये कहा है- "क्षमया च स्थाप्यते धर्मः।" सहिष्णुता-क्षमा से धर्म की रक्षा होती है, कामादि विकार सहिष्णु-साधक को पराभूत नहीं कर सकते।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (6)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

धर्म-मार्ग

- संवत्सरी का दिन मानव-जाति का वह चिरस्मरणीय दिवस है, जब बयालीस हजार वर्षों तक असहनीय कष्टों को भोगकर मानव-जाति ने मांसाहार का एकदम त्याग कर वृक्ष के फलों के आहार करने की प्रतिज्ञा की। इसलिए इसे अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- जन्म के साथ मृत्यु अवश्यम्भावी है और मुझे भी एक दिन मृत्यु की राह पर जाना है। इस बात को हृदय में उतार लीजिये।
- लक्ष्मी चंचल है, जीवन चंचल है, इसलिए ऐसा काम करो कि इस बिजली के झबूके रूपी जीवन में उपकार के, दया-दान के, तप-त्याग के मोती पिरो सकें। अवसर अनमोल है, पिरो सकें तो पिरो लें।
- भौतिक स्वार्थ की सड़क पर ही जीवनभर सरपट भागता रहा तो तेरी यह गाड़ी कहीं भी टक्कर खा जायेगी।
- अगर धर्म के प्रति श्रद्धा की आँख अन्तर में खुल गई तो पाप-प्रवृत्तियाँ फिर आपसे नहीं होंगी।
- जब आप कोई दुष्कर्म करते हैं, यथा चोरी, मिलावट, धोखाधड़ी, झूठ, कपट; तब अन्दर राम नहीं रहता, हराम रहता है।
- बाहर में प्रदर्शन करने की जगह चारित्र में, संयम में, तप-त्याग में चरण बढ़ाएँ।
- सुकुमारता एवं उससे जुड़ी बुरी प्रवृत्तियों को त्यागिए।
- भगवान महावीर ने फरमाया-"मानव! क्रोध मत कर! क्रोध प्रीति का नाश करने वाला है।"
- क्रोध जन्म-जन्म तक दाग लगाने वाला है, डुबोने वाला है, तड़फाने वाला है, फिर भी अच्छे-अच्छे साधक भी क्रोध को नहीं जीत पा रहे हैं।
- क्षमा करना सीखें, क्षमा मांगना सीखें।
- प्रतिकूल परिस्थितियों, कटु वचनों और विपरीत व्यवहारों को सहना सीखें।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

आत्मालोचन से होती है आत्म-विशुद्धि

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा 02 अगस्त, 2011 को जोधपुर चातुर्मास में फरमाए गए प्रवचन के आधार पर यह लेखन श्री पुखराज जी मोहनोत, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

हजारों की चौकीदारी से चौकीदार बनकर इस जीव को स्वयं की चौकीदारी से साहूकार और साहूकार से सर्वश्रेष्ठ आकार में प्रतिष्ठापित करने अनन्त उपकारी वीतराग भगवंत तथा उन वीतराग भगवंतों द्वारा प्ररूपित इस वीतरागवाणी के अवलम्बन से स्वयं की साहूकारी करते हुए मुमुक्षु जीवों को उसी दिशा में चरण बढ़ाने की प्रेरणा करने वाले आचार्य भगवंत के चरणों में वन्दन के पश्चात्..........।

जैनदर्शन के बत्तीस आगमों में ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल व चार छेद सूत्र हैं तथा बत्तीसवां सूत्र है आवश्यक सूत्र। छेद सूत्रों के विवेचन में एक सुन्दर चर्चा पढ़ने में आती है। कोई सर्वज्ञ, सर्वदर्शी केवली भगवंतों के श्रीचरणों में अपने दोषों की आलोचना करे, उसमें कुछ भी न्यूनाधिकता कथन में आ जाए तो उनके केवलज्ञान में स्पष्ट झलक मिलती है कि व्यक्ति जिस दोष की आलोचना कर रहा है, वह उस दोष के समतुल्य नहीं है, उसमें यथार्थता की कमी है। उन्हें तब यह भी स्पष्ट ज्ञात होता है कि यथार्थता में इस कमी का कारण व्यक्ति की विस्मृति है, भूल गया है वह पूर्ण दोष-प्रसंग का कथन करना। ऐसे में केवली भगवंत उस साधक को यथार्थ व पूर्ण दोष की याद दिलाकर उसे यथार्थ आलोचना के लिए प्रेरित करते हैं।

बंधुओं! वे वीतराग केवली भगवंत अनंत अनुकम्पा रखने वाले करुणा के भंडार हैं। वे प्राणिमात्र के आत्मकल्याण की उत्कृष्ट भावना अपने अंतर में संजोए हुए हैं। यही कारण है कि वे आत्मजागृत चैतन्य जीव को चेताकर सावधान कर देते हैं, पर जो व्यक्ति, जो जीव, जो साधक प्रमादग्रस्त हैं, उनको वे कुछ नहीं कहते, सावधान नहीं करते, चेताते नहीं हैं।

वीतराग भगवंतों की कृपा बिना किसी हेतु के बरसती है वह किसी कृपा की आकांक्षी नहीं, वह तो अहैतुकी कृपा है अतः जहाँ भी आत्मकल्याणार्थी साधक हैं, जो बाह्य जगत् से अपने को अलग-थलग करने के लिए संकल्पित हैं, ऐसे प्राणिमात्र के उद्धार

की कामना रखने वाले वे प्रभु जीव को चौकीदारी की प्रेरणा तो देते हैं, पर सब कुछ जानते हुए भी किसी की चौकीदारी नहीं करते। ग्यारह अंग सूत्रों में सातवां अंगसूत्र है- 'उपासकदशांग।' इस सूत्र में वीतराग तीर्थंकर भगवंत महावीर के दस महासाधक श्रावकों का वर्णन मिलता है। इन प्रमुख श्रावकों में आठवें श्रावक हैं- महाशतक। सर्वाधिक धनाढ्य श्रावक, चौबीस कोटि स्वर्ण-मुद्राओं के स्वामी। रेवती आदि तेरह पत्नियाँ थीं उनके। रेवती उन तेरह में सबसे अधिक धन की स्वामिनी। बाकी सभी एक-एक कोटि सौनेया और रेवती आठ करोड़ सौनेया दहेज में साथ लेकर आई थी।

राजगृह में प्रभु महावीर का पदार्पण हुआ। महाशतक ने प्रभु की धर्मदेशना सुनी और श्रावक के बारह व्रत ग्रहण कर लिए। व्रतों में उसके पास उस समय जितनी सम्पत्ति थी, उससे अधिक परिग्रह नहीं रखने तथा रेवती आदि तेरह पत्नियों के अतिरिक्त अब्रह्मचर्य (मैथुन) सेवन का त्याग किया। उधर रेवती के मन में एक बार उद्वेग उठा कि ये मेरी बारह सौत मेरे पति-प्रेम में विच्छेदक और भोग-क्रीड़ाओं में कमी करने वाली हैं। अकेली स्वेच्छापूर्वक पति-क्रीड़ा करने का प्रबल भाव उठा, अतः निश्चय किया कि इनको समाप्त कर देना है। निश्चय का क्रियान्वयन भी कर दिया। छः को शस्त्राघात से और छः को विष देकर मरवा दिया।

रेवती मांस-मदिरा के सेवन की शौकीन थी। एक बार राजा श्रेणिक ने राजगृह में अमारि (पशुवध-निषेध, मांस-विक्रय बंद) की घोषणा करवाई। मांस-लोलुप रेवती को मांस खाये बिना चैन नहीं पड़ रहा था। एक-दो दिन में ही वह व्यथित हो गई। व्यसन-सेवी जब तक व्यसन का सेवन न करे, उसे चैन नहीं मिल पाता। उसने अपने निजी गोकुल से नित्य दो बछड़ों का मांस मंगाने का प्रबंध कर लिया। वह नित्य मद्य-पान करती और उन बछड़ों का मांस-भुना कर उसका सेवन करती रही। जहाँ महाशतक अपने व्रतों की आराधना और पौषध-प्रतिक्रमण आदि की साधना में समय का सदुपयोग करता, वहाँ रेवती मांस-मदिरा के सेवन में ही आनंद मनाती।

रेवती कई बार मदिरा के नशे में बेभान बन खूब नृत्य करती, गाती, वाद्य बजाती और अत्यन्त कामुक स्थिति में पहुँच पति के समक्ष जाकर काम-भोग की याचना करती। कितनी ही बार तो वह काम-भोगों की बात करते हुए अत्यन्त निर्लज्ज भी बन जाती। बार-बार के इस आध्यात्मिक व्यवधान को महाशतक समभाव से सहन करता और पत्नी रेवती को समझाता कि उसने जो रास्ता चुना है, वह जीवन को विनाश की ओर ले जाने वाला है। पर रेवती अपने ही स्वभाव में लीन व्यसन-सेवी बनी रही। वह अत्यंत कामुक व क्रूर बन चुकी थी। महाशतक के घर की, व्रती श्रावक के घर की यह हालत एक विडम्बना

ही थी।

लगभग साढ़े चौदह वर्ष तक श्रावकधर्म का पालन करते हुए श्रावक महाशतक ने श्रावक प्रतिमाओं को धारण कर लिया। धर्ममय इस तरह के जीवन में समय का सदुपयोग करते हुए बीसवें वर्ष में अपने आपको निरुपद्रव बनाने के लिए महाशतक ने तपानुष्ठान शुरुकर ध्यान का अभ्यास बढ़ाना प्रारंभ किया। शरीर जब कृश और दुर्बल होने लगा तब आत्मतेज की वृद्धि होने लगी। महाशतक ने तब जीवन और मृत्यु की कामना त्यागकर मारणांतिक संलेखना स्वीकार कर भत्त-पान त्याग करते हुए समाधिपूर्वक जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया। अधिक निर्जरा का परिणाम यह हुआ कि ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम हुआ और अवधिज्ञान का स्वामी बना। अन्यान्य श्रावकों से पूर्व, पश्चिम व दक्षिण दिशा में द्विगुणित अर्थात् 500 के स्थान पर 1000 योजन की दूरी तक के लिए अवधिज्ञान की उसे प्राप्ति हुई।

जैसा कि आपको बताया- रेवती बार-बार महाशतक के निकट आकर बहुत ही निर्लज्जतापूर्वक अत्यंत कामुक शब्दों व संकेतों के साथ शारीरिक काम-भोग की प्रार्थना करती। इसी क्रम में इस बार वह पौषधशाला में पहुँच वासना का नग्न-नृत्य करने लगी। जब उसने कामुकतापूर्ण विवेचन की सारी मर्यादाएँ तोड़ दीं, तब श्रावक महाशतक के शांति-सरोवर में उछाल आ गया। उसके धीरज का बांध टूट गया। उसने उपयोग लगाया और रेवती के भविष्य को अपने ज्ञान में देखते हुए कुछ आक्रोश पूर्ण शब्दों में कहा- ''तू क्यों इस तरह अपना अनिष्ट कर रही है। तेरे जीवन के केवल सात दिन शेष हैं। अपने दुष्कर्मों के कारण तू भयंकर वेदना से तड़पते हुए आर्तध्यानपूर्वक मरण को प्राप्त कर सातवीं नरक में उत्पन्न हो लम्बे समय तक भयंकर शीत, ताप, क्षुधा, पिपासा आदि वेदना सहती रहेगी।''

प्रभु महावीर जब राजगृह पधारे तब उन्होंने सम्पूर्ण परिस्थिति को अपने ज्ञान में देखा और गणधर गौतम स्वामी से कहा- ''हे गौतम! इस नगर में दृढ़धर्मी श्रावक महाशतक ने संलेखना व्रत की उच्च स्थिति में अपनी पत्नी रेवती को जो कुछ सत्य लेकिन कटु-वचन कहे, वह उसके लिए कल्पनीय (कथन के योग्य) नहीं हैं। तुम उसके पास जाओ, उसे समझाओ और उन कटु, अप्रिय, मर्मांतक वचनों के लिए उसे आलोचना व प्रायश्चित्त के लिए प्रेरित करो। जिससे उसकी शुद्धि हो सके।''

भगवान ने अपने प्रथम शिष्य, चौदह हजार साधुओं में प्रधान गणधर इन्द्रभूति गौतम को महाशतक के घर उसे सावधान करने के लिए भेजा। क्यों? क्योंकि वह सरल हृदयी था, सहज साधक था- ''*सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई*''। स्थिति जिसने

उत्पन्न की, उसके लिए कुछ नहीं कहा। सर्वज्ञों का यही सिद्धान्त हैं, वे सावधान करते हैं उसे, जो सरलमना साधक हों। जिन साधकों में समता होती है, वे यही करते हैं। श्रावक है, गाड़ी पर जा रहा था, एक्सीडेंट हो गया। गलती सरासर सामने वाले की है, पर समभावी श्रावक उसे दोष नहीं देगा, कुछ नहीं कहेगा। वह चिन्तन करेगा कि मेरी ही भूल होगी। मेरे ही कुछ अशुभ कर्म उदय में आए होंगे । मुझे अपने आपको विभाव में नहीं जाने देना है। कैसी भी परिस्थिति हो मुझे अपने परिणामों को नहीं बिगाड़ना हैं, भावों की धारा को सही दिशा से विपरीत दिशा में नहीं जाने देना है। घर-परिवार में अनेक समस्याओं का समाधान परिवार का मुखिया करता है। ऐसे में कभी पारिवारिक सदस्य विरोध भी करते हैं, कुछ उल्टा-सुल्टा कह भी देते हैं, परन्तु मुखिया परिवार में वैर-विरोध की स्थिति नहीं आने देता। वह अपने परिणामों को नहीं बिगाड़ता। उसका उद्देश्य है- परिवार में शांति, समाधि को बनाए रखना।

यदि समता नहीं होगी भीतर में तो..........? वही होगा जो आज अधिकांशतया हो रहा है। परिणाम में बदलाव आते, आक्रोश और गुस्सा प्रकट होते समय नहीं लगेगा। वह तो यही सोचेगा। मैं क्यों सहन करूँ? करूँ भी तो कितना, किस स्थिति तक सहन करूँ। मेरी भी प्रतिष्ठा है, मुझे भी बोलना आता है, मेरी जबान पर ताला नहीं लगा है। वह एक की चार सुनाएगा, ईंट का जवाब पत्थर से देगा। परिणाम क्या होगा? आप सभी अच्छी तरह से जानते हैं। आग फैलेगी, द्वेष बढ़ेगा, वैमनस्य में वृद्धि होगी और अशांति, असमाधि चारों ओर नज़र आएगी।

एक श्रावक जी थे, अमरचंद जी नाहर नाम था उनका। वे सदैव मौन ही रहते थे। वर्षों तक मौन रहे। सुनना सबकी, कहना कुछ नहीं। कितना जबरदस्त नियंत्रण था वाणी पर। एक बार स्लेट पर लिखा उन्होंने-"तू तेरा सम्भाल, छोड़के सब जंजाल।" यही बात नीतिकारों ने भी कही है-

कार्यं च किं ते परदोषदृष्ट्या, कार्यं च किं ते परचिन्तया च।
वृथा कथं खिद्यति बालबुद्धे, कुरु स्वकार्यं त्यज सर्वमन्यत्।।

स्पष्ट निर्दिष्ट है कि दूसरों के दोषों को देखने से कौनसा कार्य सिद्ध होने वाला है। अर्थात् ऐसा करना व्यर्थ है, अनुचित है, आत्मघातक है। इसी तरह पर का, अन्य-अन्य लोगों की, परिवार के सदस्यों या मित्रों-परिजनों की चिन्ता करने से भी कुछ होने वाला नहीं है। व्यर्थ ही अपने अज्ञान के कारण इस तरह के कार्यों से खिन्नता, खेद, उदासी ही उत्पन्न होगी, शांति भंग होगी। अतः हे जीव! तू ऐसे अन्य सभी कार्यों को छोड़कर अपना कार्य कर अर्थात् 'स्व' को देख, उसका चिन्तन कर, उसी के विकास में पुरुषार्थ कर। अपने

दोषों को निकाल कर स्व को जानने का कार्य व उसी में लक्ष्य बनाकर दृढ़ निश्चय पूर्वक आगे बढ़ने का नाम ही दीक्षा है।

धर्म सरल हृदय में ठहरता है। जो पर को त्याग स्व में, बाह्य को छोड़ अन्तर में मुड़ जाता है, वही समता की स्थिति में आकर सरलता तक पहुँच पाता है। जैनागमों में स्व में जाकर, आत्मभाव में रमण कर, एकत्व भावना में लीन बने साधक सदैव परमशांति और समाधि के अधिकारी बने हैं। उत्तराध्ययन-सूत्र, अध्ययन नौ-'नमि प्रव्रज्या' में राजर्षि नमि के अन्तर की शांति, समाधि, आनंद-मंगल का कारण बताते हुए गाथा 16 में कहा है-

बहुं खु मुणिणो भद्दं अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ।।-उत्तराध्ययन 9.16

तात्पर्य यह है कि बाह्य एवं आभ्यन्तर सभी प्रकार के संयोगों व परिग्रहों से विमुक्त बन राजर्षि की भांति जो अपने को 'मैं सर्वथा अकेला हूँ' इस प्रकार की एकान्त एकत्व भावना में एकाग्र कर लेता है, स्वात्मा में ही लीन बन जाता है, वही एकांत सुखी बन आनंद-मंगलयुक्त जीवन जीता है।

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुत्तो।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।।

अपनी आत्मा द्वारा अपनी आत्मा की अनुप्रेक्षा करना ही समाधि, समत्व, सरलता है; अतः यही धर्म है। ऐसा साधक अपने आप में लीन बन अपने को सुधारता है, आत्मशुद्धि करता है और जीवन का परम फल प्राप्त कर लेता है।

एक समय में जीव या साधक दो उपयोग नहीं कर सकता। वह बाहर रमण करेगा, दूसरों के दोषों को देखेगा तो आत्मरमण नहीं कर सकता, स्वयं के दोषों पर दृष्टिपात नहीं कर सकता। दूसरों के दोषों को देखने वाला अपना सुधार, अपनी शुद्धि नहीं कर सकेगा। जब वह दूसरों के दोषों पर ध्यान देगा, उनका चिंतन करेगा तब उसके मन में विचार आएगा कि इसमें अमुक दोष है, पर मुझमें यह दोष नहीं। साधक का यह भाव उसके अहं का पोषण करता हुआ उसे अहंकारी बना देगा। कोई अन्य व्यक्ति उसकी बात करेगा तो मुँह से तुरंत निकलेगा-"अरे! तुम किसकी बात कर रहे हो? तुम जानते ही नहीं, वह कितना बुरा है। कभी-कभी तो हम संतों के मुंह से भी किसी अन्य के विषय में कुछ विशिष्ट बात निकलती है-अरे महाराजश्री! आप उसकी क्या बात करते हैं? स्वयं उसके घर-परिवार में अनुशासन नाम की कोई चीज नहीं है।" यही अहं है और इसमें अन्यान्य के दोषों को देखने व स्व को न देख पाने का स्पष्ट संकेत मिलता है।

जीव जिस समय से, जिस दिन-जिस काल से अपने दोष देखना प्रारम्भ करता है, उसका कदम सम्यक्त्व की तरफ बढ़ने लगता है। जीव जब अपने ही दोषों को देखने का दृढ़ निश्चय कर, अन्यान्य के दोष देखने से पूर्णतः विलग हो जाता है तब उसकी आत्मा की आध्यात्मिक रूप में दीक्षा हो जाती है। अब वह अपना कदम अतीत के दोषों को, विगत में जो-जो बुराइयाँ उसके द्वारा हुई हैं- उनको समाप्त करने की ओर बढ़ायेगा। इस तरह सम्यग्दृष्टि पाना ही जीव की प्रथम दीक्षा है और जीवन के चरम लक्ष्य का दृढ़ निश्चय उसकी सम्पूर्ण दीक्षा है।

जीव का ज्ञान मिथ्यात्व गुणस्थान में अज्ञान बन जाता है, पर दर्शन में परिवर्तन नहीं आता अर्थात् दर्शन कभी अदर्शन विपरीत दर्शन नहीं बनता। प्राणिमात्र में दोष दर्शन की बुद्धि है, वह प्रमादवश दर्शन का स्व पर प्रयोग न कर अन्यान्य पर प्रयोग करता है। इससे उत्पन्न होने वाला अहंभाव बढ़ते हुए कालान्तर में जीव में अन्यान्य में देखे दोषों को प्रगट कर स्वयं के जीवन को दोषों से, बुराइयों से, विसंगतियों और विकारों से भर देता है। कितनी भयंकर आत्महानि है यह।

सम्यक्त्व की प्राप्ति स्व-निरीक्षण से, स्वयं के दोषों को देखने से प्रारम्भ होती है। अपने दोष जो देखता है और जिसे अपने दोष दिखाई दे जाते हैं, वह फिर चुपचाप वैसे ही नहीं बैठा रहता। उसके अन्तर में उन दोषों के प्रति ग्लानि होती है, पश्चात्ताप की अग्नि प्रज्वलित होती है और तब वह उन दोषों की आलोचना के लिए तत्पर बनता है। "आमर्यादया लोचनं इति आलोचनम्" अर्थात् मर्यादा पूर्वक स्व-निरीक्षण, चारों तरफ से अपना निरीक्षण ही आलोचना है। आपको और हमें भी यह बहुत ही अच्छी तरह ध्यान में लेना है कि हमारे द्वारा दूसरे पर किया गया आक्रमण ही अतिक्रमण है और यह जीव का घोर अनर्थकारक है। जबकि हमारा स्वयं हम पर सजग आक्रमण ही प्रतिक्रमण है जो साधना की ओर बढ़ने वाला प्रथम कदम है।

प्रतिक्रमण अथवा स्वालोचना से जीव को जो कुछ उपलब्ध होता है, उसका वर्णन प्रभु महावीर ने अपनी अंतिम देशना में इस प्रकार किया है-

"आलोयणाए णं माया-नियाण-मिच्छादंसण-सल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणन्तसंसारबद्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेय नपुंसगवेयं च न बन्धइ। पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।"

सर्वज्ञ भगवंत फरमाते हैं कि आलोचना से जीव के भीतर जो मोक्षमार्ग के विघ्नकारक और बाधकरूप तीन कारण अर्थात् तीन शल्य हैं, वे दूर हो जाते हैं। क्या हैं वे

तीन शल्य? वे हैं- माया शल्य, निदान शल्य और मिथ्यादर्शन शल्य। किसे कहते हैं शल्य? शल्य शूल को कहते हैं जो तीखे कांटे की तरह भीतर तक चुभकर घाव पैदा कर देते हैं।

बाहर से साधक रूप या साधुवेष धारणकर अन्तर में वंचक-भाव रखना, कपट-भाव रखना या दूसरों को प्रसन्न करने की जो जीव की वृत्ति है, वह माया शल्य है। तप या धर्माचरण करने के पश्चात् इनके परिणाम में विषयों की आकांक्षा निदानशल्य है। धर्म को अधर्म, जीव को अजीव, साधु को असाधु, संसार-पथ को मोक्ष पथ, मुक्त को अमुक्त और इसी तरह अधर्म को धर्म आदि की विपरीत भावना रखना, विपरीत मानना मिथ्यादर्शन रूप शल्य है।

मोक्षमार्ग में विघ्नकारक इन शल्यों को आत्मालोचक उखाड़कर दूर फेंकने में सक्षम बन जाता है।

स्वयं के दोषों को देखना और उनकी आलोचना, निंदा, गर्हा करना साधारण बात नहीं है। इसके लिए अन्तरात्मा में जागृति का होना आवश्यक है। आत्मा जितनी अधिक जागृत होगी, साधक उतना ही अधिक सजग बन, छोटी से छोटी भूल के लिए भी अपने को दोषी मानेगा, जरा-सी भूल भी उसे असहनीय लगने लगेगी। घर पर साधु या साध्वी गोचरी के लिए आये हैं। गृहस्थ श्रावक उन्हें देखकर खड़ा नहीं हुआ, सात-आठ कदम सामने आकर उनका सत्कार नहीं किया, दोषपूर्ण आहार बहराया.....सभी की आलोचना एक सजग साधक अवश्य करेगा।

अभी सुना आपने मुनिजी से चंडरुद्राचार्य का प्रसंग। साथियों के साथ एक युवक आया था मुनिदर्शन करने। साथियों ने मजाक की तो संतों ने सिर मुंडित कर दिया। गुरु आज्ञा से रात को भी नवदीक्षित शिष्य अपने गुरु को कंधे पर बिठा कर ले जा रहा है। रात का समय, अधेंरा भी है, रास्ता ऊँचा-नीचा, कहीं गड्ढे तो कहीं फिसलन। कंधे पर गुरु। ऊँचे-नीचे पैर रखते ही गुरु का उपालंभ- 'देखकर नहीं चला जाता' आदि। गुरु थे भी क्रोधी। बार-बार उपालंभ और फिर ओघे की डंडी से मारना भी जारी। शिष्य उपालंभ सुनकर भी शांत, डंडे खाकर भी प्रशांत। गुरु को दोषी वह नहीं मान रहा, अपने में ही दोष देख रहा। चिन्तन चलता है। सोच आत्मा के भीतर तक। गहन से गहनतर, गहनतम चिन्तन बनता जा रहा है।

नवदीक्षित हैं मुनि। दीक्षा की भावना नहीं थी। साथियों ने मजाक किया था और वे मुंडित बन गए। गुरु को कष्ट नहीं हो, अतः कंधे पर बिठा लिया। ले जा रहे हैं उन्हें। रास्ता ऊबड़-खाबड़। गुरु को कष्ट अतः उपालंभ। उपालंभ में कटु, अति कठोर शब्द और डंडे

की मार, फिर भी विचारों में सकारात्मकता है। उसी विचार के गहन चिन्तन में केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। रात्रि है, अंधेरा है, पर केवलज्ञान है अतः अब रास्ता स्पष्ट नज़र आता है। शिष्य अब ऐसे चल रहा है, जैसे रास्ता समतल हो। कुछ ही देर चलता है शिष्य और गुरु को विचार आता है- "अब तो यह ठीक चल रहा है। क्या अब रास्ता सीधा है, समतल है, ऊँचा-नीचा नहीं है।" फिर विचार आता है- "डंडे से सभी सीधे हो जाते हैं। मार के समक्ष तो भूत भी भागते हैं।" गुरु के मन में ऊहापोह होती है। शिष्य से पूछते हैं- "क्या हुआ? अब कैसे सीधा चल रहा है?"

शिष्य विनम्रता से कहता है- "यह सब आप ही की कृपा है। आपकी दया से मुझे अब रास्ता स्पष्ट नज़र आ रहा है।"

गुरु पूछते हैं- "कोई ज्ञान हुआ है क्या?"

शिष्य ने कहा- "गुरुदेव! आपकी अनंत कृपा से ही ऐसा हुआ है।"

गुरु- प्रतिपाति हुआ है या अप्रतिपाति?

शिष्य- भगवन्! जिसपर आपका वरदहस्त हो, असीम कृपा हो तो उसे प्रतिपाति क्यों होगा? अप्रतिपाति हुआ है।

सुनकर गुरु तुरंत कहते हैं- "मुझे नीचे उतारो।" मन में भावना यह कि मुझसे केवली की आशातना हो गई।

शिष्य ने गुरु को नीचे उतारा। गुरु नीचे तो उतरे पर भावों की श्रेणी में ऊपर चढ़े सो चढ़ते ही गए। आत्म-आलोचना करते-करते पूर्व अन्वेषण किया और व्याकुल बन गए। चढ़ गए तेरहवें गुणस्थान पर। उतरे नीचे, पर चढ़ गए ऊपर। रात्रि का घना अंधकार पर भीतर में पूर्ण प्रकाश हो गया। शिष्य पहले सर्वज्ञ बना, गुरु आत्मालोचन कर तभी सर्वज्ञ बन गए।

गुरु ने उपालम्भ देने प्रारम्भ किए तब यदि शिष्य यह सोचता कि मेरी क्या गलती? दीक्षा दी तो इन्होंने दी। मैंने दीक्षा ली तो कोई भूल तो नहीं की। विवेकानन्द ने कहा था- संसार में सरल से सरल काम है- दूसरों के दोष देखना, दूसरों को उनकी भूलें बताना और कठिन से कठिन, दुष्कर से दुष्कर कार्य है- अपने दोषों को देखना, अपनी भूलों का चिन्तन कर उनका सुधार करना। सामान्यतः तो दूसरों की भूल देखनी ही नहीं, जिन पर दायित्व है भूल सुधार का, जो सच्चे हितैषी हैं, जो दूसरे की भूल देखकर खिन्न नहीं होते, क्षुभित नहीं होते, उन्हें भूल दिखने पर वे अन्तर से व्यथित होते हैं। शुद्धीकरण द्वारा जीवन का उत्थान चाहते हैं। भावों की गरिमा के साथ उनका विचार होता है कि सामने वाला अपनी भूलें सुधार कर जीवन को सरस-सुन्दर बनाये। घर-परिवार में माता-पिता बच्चों

को डांटते हैं। क्यों? क्या भावना होती है वहाँ? वहाँ होती है सुधार की भावना। नीति कहती है- तीन के लिए डांट आवश्यक है, अन्यथा हानि की अधिक संभावना बनती है। शिशु, शिष्य और शीशी पर डांट लगाना अनिवार्य है। शिशु को माता-पिता तो शिष्य को गुरु की डांट आवश्यक है, उद्‌देश्य वही है भूल सुधार और शीशी पर डाट नहीं होती को क्या होगा? आप सभी जानते हैं। क्या कहती है नीति? कहा है-

लालने बहवो दोषाः ताडने बहवो गुणाः।
तस्मात् पुत्रं च शिष्यं च, ताडयेन्न तु लालयेत्।।

लाड लडाने में बहुत से दोष आ जाते हैं और ताड़ने से अनेक गुण उद्‌भूत हो जाते हैं, अतः ज्यादा लाड-प्यार मत दिखाइए, अपितु समय-समय पर उन्हें फटकारते रहिए। यह किनके लिए कहा है? नम्बर एक-माता पिता के लिए और नम्बर दो गुरुजनों के लिए, जिससे सन्तान व शिष्य-शिष्याओं के जीवन में सुधार आता जाये।

गुरु के लिए तो और भी बहुत कुछ आता है, यथा-

गुरु प्रजापत सारीखा, घड़-घड़ काढे खोट।
भीतर से रक्षा करे, ऊपर मारे चोट।।

और-

गुरु कारीगर सारीखा, टांची वचन विचार।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहत संसार।।

गिरधर कवि ने भी अपनी कुंडली में कहा-

लड़का रखिये हटक में, मति चढाइये शीश,
नित प्रति लाड लडावता बिगडे बीसवांबीस।
बिगड़े बीसवांबीस हाथ हुन्नर नहीं पावे,
और बैठ सभा के बीच, आदर कदई न पावे।
कह गिरधर कविराय, सुनो ओ उसके घर का।
पहले लड़ाया लाड, अब किस विध सुधरे लड़का।।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शांति निकेतन आश्रम में कलाकार अवीन्द्रनाथ ठाकुर भी रहा करते थे। वे चित्रकला में अति निपुण थे। अनेक कलाप्रेमी उनसे चित्रकला की बारीकियाँ सीखते थे। उन्हीं शिष्यों में एक थे नंदलाल बोस। अच्छे कलाकार थे, बहुत कुछ सीख चुके थे। एक बार बोस ने एक अति सुन्दर चित्र बनाया। श्रीकृष्ण का चित्र। आकृति एकदम श्रीकृष्ण जैसी। एक-एक रेखा नपी-तुली। रंगों का आयोजन, तालमेल, मिश्रण भी चित्त को आकर्षित करने वाला। गुरु अवीन्द्र के हाथों में दिया चित्र। गुरु ने देखा, देखकर फेंक दिया। बोले- नालायक! ऐसा क्या चित्र बनाया? तुझसे अच्छा चित्र तो सड़क पर, गली-

मौहल्लों में फिरने वाले पाटिये (पाटी पर पैसे, दो पैसे में चित्र उकेरने वाले) बना लेते हैं।

रवीन्द्रनाथ देख रहे थे। उनसे यह सहन नहीं हुआ। बोस नन्दलाल तो गुरु के चरण छू चले गये थे। रवीन्द्र नाथ अवीन्द्रनाथ से बोले- यह तुमने ठीक नहीं किया। इस तरह एक सुन्दर चित्र को फेंककर तुमने कलाकार का नहीं, अपितु चित्रकला का भी अपमान किया है।

अवीन्द्र ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर देखा। कुछ क्षण शांत रहे, फिर बोले- गुरु का कार्य और कुंभकार का कार्य ऐसा ही है। गुरु जब डांटता या मारता है तब क्या होता है, जानते हैं? हाथ मारता है और हृदय में हाहाकार मचता है, रोता है मन पर; विवशता है। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि चित्र बहुत सुन्दर है, बोस अच्छा चित्रकार बन गया है, पर यह भी जानता हूँ कि अभी उस कलाकार में और प्रतिभा छिपी हुई है। चित्र फेंका, उसे बुरा-भला भी कहा, क्योंकि मुझे उसमें छिपी उस अंतिम छोर की प्रतिभा को बाहर निकालना है। आज मैं उस चित्र को देख हर्ष प्रकट कर देता, धन्यवाद दे देता, प्रशंसा कर देता तो उसका शेष रहा विकास उसके भीतर ही रह जाता; रुक जाता उसका विकास, यहीं विराम लग जाता उसकी कला-प्रतिभा पर। आप यह समझिए कि मैंने उसके विकास के लिए हृदय पर पत्थर रखकर यह सब कहा है, किया है।

उधर नंदलाल बोस अपने गुरु अवीन्द्र के शब्दों को सुन यह नहीं सोचते कि-'कैसे मेरे गुरु हैं ये? इतनी मेहनत कर ऐसा सुन्दर चित्र बनाया, फिर भी मुझे नालायक कहा। अब इनके पास नहीं रहना, नहीं सीखनी मुझे अब और ये कला। नहीं! उस शिष्य ने गुरु-वचनों को हृदय में उतारा, शिरोधार्य किया, सत्य माना। वह तुरंत चल पड़ा शांति निकेतन के निकटस्थ गली-मौहल्लों में। मिला पाटियों (पाटी पर चित्र बनाने वालों से) से, देखी उनकि कला। गहराई से परखा उनकी कला को। लगभग 2-3 महीनों के पश्चात् गुरु अवीन्द्र के पास गया और बोला- गुरुदेव आपका कथन पूर्णतः सत्य था। मैं गली-मौहल्लों में घूमा, पाटियों से मिला, उनके चित्रों को देखा। आकृति और रंगों को छोड़ एक और चीज देखी उनकी कला में। वह थी, चित्रों के भीतर से झलकता हुआ प्रेम, स्नेह, सौहार्द भाव और साज-सज्जा से युक्त आंतरिक प्रेम टपकाता चित्र गुरु के चरणों में रखा। जीवन के अंत तक नंद बोस वहीं, उसी आश्रम में रहा।

किसी के मन में वैराग्य जगा, दीक्षा लेकर साधु बन वह संयम पालन करने लगा। साधु था, अतः सभी ने उसे ऊँचे काष्ठ पट्ट पर आसीन कर दिया। बस अब क्या था? साधु अपने को ऊँचा मानने लगा, उसके ध्यान में यह जम गया कि अब क्या? अब तो मोक्ष में मेरी सीट रिजर्व हो चुकी है। साधु बनकर भी कैसे हम नीचे गिर जाते हैं, गिर सकते

हैं। भीतर में अहंभाव की उत्पत्ति जो हो जाती है और यह अहं ही है जो जीव को साधक को अर्हम् से दूर करता है। उसका अहं तब और भी बढ जाता है जब वह बड़े-बड़े सेठों, अफसरों, वकीलों, जजों, विधायकों आदि-आदि को अपने चरणों में सिर झुकाए देखता है। अपने को ऊपर, श्रेष्ठ और उन्हें निम्न, तुच्छ समझने की भावधारा उसे ले डूबती है। अतः आवश्यक है कि साधु हो या साध्वी, श्रावक हो या श्राविका-सभी साधकों को अपनी आलोचना करनी चाहिए। अपना आत्मनिरीक्षण करते रहना चाहिये। **से जहावि अणगारे उज्जुकडे नियागपडिवन्ने अमायं कुव्वमाणे वियाहिए।**

सरल, लक्ष्यप्रतिबद्ध प्रबलपुरुषार्थी का चिन्तन होता है कि आत्म-आलोचना से ही प्रकटेगी सरलता, आलोचना से ही प्रकटेगी पूर्ण निर्दोषिता की भावना। आलोचना से ही जगेगी निर्दोषी बनने की उत्कट अभिलाषा और वही चण्डरुद्राचार्य के शिष्य सहित गुरु को, मृगावती सहित चन्दनबाला को बना देगी निर्दोष, पूर्ण दोष मुक्त, प्रकटायेगी कैवल्य को।

आलोचना करते हुए स्वयं के दोषों का स्मरण कर, तत्सम्बन्धी पश्चात्ताप करना निन्दना कहलाता है और गुरु अथवा सक्षम व्यक्ति के सम्मुख अपने दोषों को प्रकट कर उन दोषों से मुक्त बनने के लिए रागादिभावों के त्याग का संकल्प गर्हणा या गर्हा है। पापों, भूलों, दोषों की निन्दना व गर्हणा करने से व्यक्ति व साधक में अपुरस्कार का भाव और पुरस्कार भाव का अभाव आता है, जिससे साधक कर्मबंध के हेतु जो भी अप्रशस्त भाव (गुण) है, उनसे निवृत्त हो जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र के उन्नतीसवें अध्ययन ''सम्यक्त्व पराक्रम'' की सातवीं पृच्छा में प्रभु कहते हैं-

''गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो, जोगेहिंतो नियत्तेइ। पसत्थजोग-पडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ।।''

गर्हा करने से जीव पुरस्कार रहित बनता है। अपुरस्कार प्राप्त जीव अप्रशस्त योगों (मन-वचन-काया के व्यापारों) से निवृत्त बन प्रशस्त योगों में प्रवृत्त हो जाता है। प्रशस्त योगों से घातीकर्म क्षय होते हैं।

समता को अन्तर में उतारने हेतु सामायिक ग्रहण करते समय 'करेमि भंते' के पाठ में बोला जाता है- ''पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।'' यह तभी हो सकता है जब जीव का पुरस्कार भाव समाप्त हो जाये। अपुरस्कार के आने पर किसी अन्य से आदर पाने की आकांक्षा नहीं रह जाएगी, अपितु जीव स्वयं ही अपनी दृष्टि में अपने को आदर योग्य पायेगा। अन्यथा वह दूसरों से आदर चाहेगा। **(क्रमशः)**

तत्त्व-बोध

मिथ्यात्व एवं उसके भेद

श्री जशकरण डागा

भव-भ्रमण का मूल हेतु मिथ्यात्व है। कहा है-

इण भव तरु को मूल एक, जानहू मिथ्या भाव।
ताको कर निर्मूल अब, करिये मोक्ष उपाय।।

सभी आठ कर्मों में मोहनीय कर्म मुख्य है और इस मोहनीय कर्म की जड़ 'मिथ्यात्व' है। यदि मिथ्यात्व न हो तो कोई भी जीव सम्यक्त्व के सद्भाव में, नरक, तिर्यंच गति का बंध ही नहीं कर सकता एवं सभी जीव 7-8 भव में मोक्ष चले जायेंगे। कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति 70 कोटाकोटि का बंध कराने वाला मिथ्यात्व ही आत्मा का प्रधान शत्रु है। मिथ्यात्व का नशा ही ऐसा होता है कि जीव सम्यग्दृष्टि न होते हुए भी, अपने को मिथ्यात्वी नहीं मानता और स्वयं को अन्यों से विशेष समझदार तथा अपने प्रत्येक कर्म को उचित और सही मानता है। अपनी मिथ्या मान्यताओं को वह सही मानकर, तदनुसार प्रवृत्ति करता हुआ, संसार अटवी में भटकता रहता है। मिथ्यात्व की सत्ता सम्यक्त्व की अपेक्षा अनंतगुणी अधिक है। अतः आत्मार्थियों को इस मिथ्यात्व से बचने के लिए सतर्क रहने की और उसके स्वरूप को भली-भाँति समझने की परम आवश्यकता है। इसके लिए मिथ्यात्व के पच्चीस प्रकार यहाँ संक्षेप में चार्ट रूप में नीचे दिए जा रहे हैं। प्रत्येक आत्मार्थी के लिए ये विशेष चिन्तनीय एवं मननीय हैं।

पच्चीस प्रकार के मिथ्यात्व

क्र. मिथ्यात्व-नाम	अर्थ	उदाहरण	विशेष
01.आभिग्रहिक	सत्य असत्य को जाने बिना असत्य को पकड़े रखना	घर में कुलदेवी व लक्ष्मीपूजन, खाता बही पूजन, पैतृक परम्परा से होते हैं, अतः मुझे भी करना है	वे हठाग्रही बने रहकर अपने माने हुए एवं रूढ़ि से चले आए मार्ग पर ही चलते हैं।
02.अनाभिग्रहिक	सत्य का आग्रह रखे बिना सभी देवों, गुरुओं एवं धर्मों	वीतरागी एवं सरागी देवों, निर्ग्रन्थ व सग्रंथ (परिग्रही) गुरुओं एवं	हठाग्रही नहीं होते, किन्तु इनमें सत्य-असत्य को परखने

	को बिना भेदभाव के समान समझना	सर्वज्ञों और छद्मस्थों द्वारा प्ररूपित सभी धर्मों को बिना भेदभाव पूजना व मानना।	समझने की बुद्धि ही नहीं होती और विवेक विहीन होते हैं।
03.आभिनिवेशिक	स्वयं का मत, मान्यता गलत है, ऐसा जानकर भी न छोड़ना	गलत जानकर भी आरंभ-समारंभ युक्त पूजा इत्यादि न छोड़े या वस्त्रधारी को मुनि न माने आदि।	मान-अभिमान, कुल प्रतिष्ठा आदि कारणों से अभिनिवेश-गलत मान्यता का त्याग नहीं करते हैं।
04.सांशयिक	जिनवचनों में संशय करे	आत्मा, परमात्मा, परभव आदि हैं या नहीं, इस प्रकार का संशय	जिनवाणी की गहन बातें क्षयोपशम की मंदता से समझ में न आने पर शंका करता है
05.अनाभोग	समय, शक्ति एवं मन के अभाव तथा विवेक विकलता से जो धर्माधर्म एवं तत्त्व निर्णय में अक्षम होते हैं, उन्हें यह मिथ्यात्व लगता है।	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जीवों तक में होता है। विवेक विकलता के कारण सभी असंज्ञी जीवों में नियमा से होता है। ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का उग्रतम उदय होता है।	अनजान में, अज्ञान से या भोलेपन से लगता है उपर्युक्त चार मिथ्यात्व वाले जीवों से अनाभोग मिथ्यात्व वाले जीव अधिक होते हैं।
06.लौकिक	लोकरूढ़ियों में धर्म समझना एवं कुदेव, कुगुरु व कुधर्म की मान्यता रखना।	सरागी देवों की पूजा करना, सग्रंथ कुगुरुओं को गुरु मान वंदना स्तुति करना व केवलिप्ररूपित धर्म के विपरीत कुधर्म को मानना, सेवन करना।	यह लौकिक मिथ्यात्व में आता है, जिसके तीन भेद हैं- 1. देवगत, 2. गुरुगत व 3. धर्मगत।
07.लोकोत्तर	भौतिक वस्तुओं आदि के लिए अरिहन्त-साधु व	रोगादि से मुक्ति पाने पर भौतिक फलों की प्राप्ति हेतु परमेष्ठी मंत्र	यह लोकोत्तर मिथ्यात्व में आता है। इसके भी देव, गुरु एवं धर्मगत

	केवली प्ररूपित धर्म की आराधना करना।	जपना, मांगलिक सुनना या तपादि करना।	तीन भेद हैं।
08.कुप्रावचनिक	कुदेव, कुगुरु व कुधर्म की सेवा पूजा कर पाखण्ड मतों को (जो 363 प्रचलित हैं) मानना व प्ररूपित करना।	एकान्त नियतिवाद, भाग्यवाद, कालवाद या कर्मवाद को ही धर्म मानना या चार्वाक आदि नास्तिक मतों की मान्यता।	जो देव और जो गुरु स्वयं मोक्ष नहीं जा सके, वे दूसरों को मोक्ष कैसे दे सकते हैं? अतएव ऐसे मिथ्या शास्त्रों में प्ररूपित कुदेव, कुगुरु,कुधर्म की मान्यता की मूढ़ता छोड़ना आवश्यक है।
09.जिनवाणी से न्यून प्ररूपणा	स्वयं की रुचि व मान्यतानुसार जिनवाणी के वचनों को कम प्ररूपित करना।	आत्मा को तिल या सरसों के बराबर कहना। आचार्य, तिष्यगुप्त की तरह आत्मा को एक प्रदेश मात्र ही बताना आदि।	अपने विचार से मेल न खाने वाले शास्त्र-वचन को उड़ा देना, पलट देना या उसका मनमाना अर्थ करना आदि।
10.जिनवाणी से अधिक प्ररूपणा	स्वयं की रुचि एवं मान्यतानुसार जिनवाणी के वचनों को अधिक प्ररूपित करना।	जीव-अजीव राशि से भिन्न मिश्र राशि कहना आत्मा को संपूर्ण ब्रह्माण्ड में व्यापक कहना आदि।	निमित्त कारण को न मान, उपादान को ही सबकुछ मानना।एकान्त व्यवहार या निश्चय को ही मानना आदि।
11.जिनवाणी से विपरीत प्ररूपणा	जिनप्ररूपित शास्त्र के विपरीत प्ररूपणा करना।	षट्द्रव्य, नवतत्त्व के विपरीत प्ररूपणा करना जैसे आत्मा नहीं है। दुनिया ब्रह्मा ने बनाई है, आदि।	जिनवाणी के विपरीत अपनी मान्यता की पुष्टि के लिए स्याद्वाद, अनेकान्तवाद का भी दुरुपयोग किया जाता है, जो खेदजनक है।
12.धर्म को अधर्म श्रद्धना	केवली प्ररूपित दया मय सत्य धर्म को अधर्म मानना।	तप, सामायिक आदि से मात्र पुण्य मानना तथा धर्म न मानकर	केवली प्ररूपित दयामय धर्म परम हितकारी एवं सदा आचरणीय है। उसे

		उनका निषेध करना। उनके पालन को क्रिया-जड़ता कहना।	अधर्म मानना या उसमें धर्म न मानना मिथ्यात्व है।
13.अधर्म को धर्म मानना	धर्म के नाम पर हिंसा, पाखण्ड या प्रदर्शन आदि विकृतियों को धर्म मानना।	धर्म के नाम पर बलि आदि करना। स्नान, दीप, धूप आदि सावद्य प्रवृत्तियों को धर्म मानना।	बिना योगों की प्रवृत्ति के धर्म होना कठिन है और योग प्रवृत्ति में क्रिया अवश्य आती है। अतः गमनागमन आदि क्रिया में भी पाप मानकर अनावश्यक क्रियाओं से बचना चाहिए।
14.साधु को असाधु मानना	निर्ग्रन्थ पंच महाव्रत-धारी साधु को असाधु (कुसाधु) व सग्रंथ (परिग्रही) कुसाधु को सुसाधु मानना।	वस्त्र सहित या मैले वस्त्र देख निर्ग्रन्थ साधु को साधु न मानना या कुसाधु मानना।	प्रभु ने पांच प्रकार के निर्ग्रन्थ व पांच प्रकार के चारित्रवान साधु कहे हैं। उनका आचार पृथक् होने पर भी वे सभी साधु कहे हैं। इन सभी को वंदनीय जानें।
15.असाधु को साधु मानना	सग्रंथ (परिग्रही), व मूलगुणों के विराधक को साधु मानना, लौकिक विशेषता से या साधु वेश देखकर।	कंचन, कामिनी रखने वाले या मूल गुणों से भ्रष्ट, शिथिलाचारी को साधु मानना।	द्रव्य और भाव से जो निर्ग्रन्थ हैं, वही साधु हैं। मात्र वेश वंदनीय नहीं है अतः शिथिलाचारी मूल गुणों से भ्रष्ट को साधु न माने।
16.जीव को अजीव श्रद्धना	जीव तत्त्व की प्ररूपणा अजीव तत्त्व की तरह करना।	एकेन्द्रिय में जीव नहीं मानना या देव, नारकी होते ही नहीं, ऐसा मानना।	पर्याप्ति, प्राण, योग, उपयोग आदि लक्षणों से युक्त सभी को जीव मानना उचित है।
17.अजीव को जीव श्रद्धना	अजीव तत्त्व की प्ररूपणा जीव तत्त्व	परमाणुओं की गति-शीलता से जीव माने	काष्ठ या पाषाण या धातु आदि से निर्मित

	की तरह करना।	या ताजा दही में भी रासायनिक प्रक्रिया से गतिशीलता देख जीव होना मानें इत्यादि।	मूर्ति में भी जीव कहना मिथ्यात्व है।
18.सन्मार्ग को उन्मार्ग श्रद्धना	रत्न चतुष्टय (ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप) को मोक्ष मार्ग न मान कर उन्मार्ग मानना।	जिन-आगमों को मिथ्यावाणी कहे, देव गुरु, धर्म तत्त्व को मिथ्या बतावे।	दान, शील, संतोष, दया, सत्य आदि मुक्ति के मार्ग को भी कर्मबंध का मार्ग कहे।
19.उन्मार्ग को सन्मार्ग श्रद्धना	जिसमें छह काया की हिंसा का निषेध न हो, आरंभ-परिग्रह का मार्ग हो, उसे सन्मार्ग कहे।	आरंभ-समारंभ के मार्ग को या एकान्त निश्चय या व्यवहार को ही सन्मार्ग कहे।	धूपदीप, स्नान, यज्ञ, विवाह आदि आरंभ के कार्यों में धर्म मानकर उसे सन्मार्ग माने। तपादि में आत्म-हिंसा माने।
20.रूपी को अरूपी श्रद्धना या अष्ट कर्म से अमुक्त को मुक्त मानना	सूक्ष्म और पारदर्शी पदार्थ जो दृष्टि में नहीं आते, उन्हें अरूपी कहना। रागी द्वेषी-देवों को भी मुक्त कहे।	वायुकाय आदि सूक्ष्म होने से दृष्टि में नहीं आते, कर्म पुद्गल भी नजर नहीं आते, उन्हें अरूपी कहे।	पुद्गल चतुस्पर्शी (अति सूक्ष्म) व अष्ट स्पर्शी (सूक्ष्म व बादर) ये दो प्रकार के होते हैं, पर ये सभी रूपी होते हैं।
21.अरूपी को रूपी श्रद्धना या अष्ट कर्म सें मुक्त को अमुक्त मानना	अरूपी द्रव्यों को भी रूपी कहना या सिद्ध परमात्मा को रूपी कहना।	धर्मास्तिकाय आदि को एवं सिद्ध भगवान् भी रूपी या साकार कहे।	षट् द्रव्यों में पुद्गल के अतिरिक्त अन्य सभी द्रव्य अरूपी हैं, उन्हें भी रूपी कहे।
22.अविनय	सुदेव,सुगुरु, सुधर्म व जिनवाणी के प्रति अविनय, उन्हें झूठा कहना, विराधना करना।	गोशालक का वीर प्रभु के प्रति अविनय भाव गणाचार्य के 500 शिष्यों का अविनय भाव।	ज्ञानी, ध्यानी, गुणियों की निंदा करना, कृतघ्न होना आदि।
23.आशातना	सुदेव,सुगुरु,सुधर्म व जिनवाणी की एवं गुणियों की	जमाली ने तीर्थंकर महावीर की आशातना की। पालक ने खंदक	आशातना के कुल 33 भेद हैं, जैसे अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य,

	आशातना विराधना या अपलाप करना	मुनि व उनके 500 शिष्यों को घाणी में पीलकर घोर अशातना की।	उपाध्याय, साधु आदि की आशातना।
24.अक्रिया	आत्मा परमात्मा है, अतः अक्रिय है, ऐसा मानते हैं। इनके 84 प्रकार कहे गए हैं। चारित्रवालों को क्रिया जड़ कह तिरस्कार करते हैं।	आत्मा अरूपी है, उसे पुण्य-पाप की क्रिया नहीं लगती। वह चलने फिरने की क्रिया भी नहीं करती, ऐसी एकान्त मान्यता रखे।	जो लोग पुण्य-पाप के भ्रम से भक्तों को भ्रमित कर उनकी आत्मा को त्याग-तप आदि करा दुःखी करते हैं वे सब नरक में जायेंगे ऐसी मिथ्या मान्यता रखते हैं।
25.अज्ञान	अज्ञानता को ही मोक्ष का कारण मानते हैं। इनके 67 प्रकार कहे गए हैं। ये ज्ञान को बंध एवं पाप का कारण मान अज्ञान को श्रेष्ठ मानते हैं।	जानना ही दुःख का कारण है। अतः कुछ न जानो तो मोक्ष मिलेगा। जानते हुए (ज्ञान) को ही पाप क्रिया लगती है। अतः बालकवत् अनजान रहना।	मिथ्यात्व के साथ अज्ञान की नियमा है। जहां मिथ्यात्व है वहां अज्ञान होता ही है।अतः विद्वद्जन मिथ्यात्व का त्याग करें।

-संघपुरा मौहल्ला, टोंक (राज.)

पढ़कर ठगा सा रह गया

आज 17 जून को जिनवाणी का अंक मिला। उपाध्यायप्रवर पूज्य श्री मानमुनि जी म.सा. की दीक्षा के 50 वर्ष यानी अर्द्धशताब्दी पर कई रचनाएँ पढ़ने को मिलीं। उनके संयमी जीवन की कुछ अनजानी, अनकही, सेवा की बेमिसाल घटनाएँ जानकर कुछ पलों कें लिए हतप्रभ हो गया, ठगा सा रह गया, मन की असीम श्रद्धा आँखों के कोर को छूने लगी। आश्चर्य हुआ कि दुनिया में ऐसे लोग भी बसते हैं जो अप्रमत्त भाव से सेवा कर संतोष महसूस करते हैं। उन्हें क्या कहें मानव या देवता!

सचमुच में ऐसे सरल संतों के दर्शन करने के लिए राजस्थान की धरती अपनी तरफ खींचती है। उपाध्यायप्रवर आप जहाँ कहीं भी हैं। हमारी वन्दना स्वीकार करायें।

-आर.प्रसन्नचन्द चोरडिया, चेन्नई

चिन्तन

अपरिग्रह : नैतिक आचरण की समग्रता

डॉ. शिवनारायण जोशी 'शिवजी'

अपरिग्रह नैतिक आचरण की समग्रता है। मात्र अपरिग्रह के सांगोपांग आचरण से समस्त नैतिक सद्गुणों का स्वतः ही पालन हो जाता है। यों तो अलोभ और असंग्रह के अर्थ में अपरिग्रह को सभी धर्मों ने प्रमुख सद्गुण के रूप में स्वीकार किया है, परन्तु जैनों ने अपरिग्रह को इतनी व्यापकता में अपनाया है कि इसमें सभी नैतिक सद्गुणों का समावेश हो जाता है। परिग्रह अपरिग्रह का प्रतिपक्ष है। अपरिग्रह जहाँ नैतिकता की समग्रता है वहीं परिग्रह समस्त दुर्गुणों का प्रवेश द्वार है। ममत्व भाव परिग्रह का बीज है। ममकार (ममत्व) का त्याग करने वाला ही परिग्रह का त्याग कर सकता है।[1] ममत्व भाव (मैं, मेरा) ही पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा आदि समस्त कामनाओं को जन्म देता है। मैं, मेरे पुत्र-पौत्र, मेरा सारा परिवार सम्पन्न बने, यह ममत्व भाव हमें संचय की प्रवृत्ति की ओर प्रेरित करता है। ममत्व के प्रबल होने पर व्यक्ति कामनाओं की पूर्ति हेतु अकरणीय कर्म यथा-झूठ, चोरी, रिश्वतखोरी, जुआ-सट्टा, हवाला, शोषण, हिंसा आदि बेहिचक करने लगता है। यह निश्चित है कि सदाचरण और नियम पालन करते हुए संचय करना अत्यन्त कठिन होता है। पृथ्वी पर साधन सीमित हैं, पर वे इतने अवश्य हैं कि सभी प्राणियों की आवश्यकता पूर्ति कर सकें, किन्तु जब कुछ मनुष्य आवश्यकता से अधिक संचय करते हैं तो अनेक व्यक्ति निर्धन हो जाते हैं। कुछ व्यक्तियों की सम्पन्नता अधिसंख्य लोगों की विपन्नता की कीमत पर संभव होती है। इस आर्थिक असंतुलन का साक्षात् कारण हमारी संचय प्रवृत्ति का परिग्रह ही है। इस वैषम्य से समाज में वैमनस्य और द्वेष फैलता है, जो अन्ततः हिंसक प्रवृत्ति में परिणत होता है। हिंसा परिग्रह के स्वरूप में समाविष्ट है और अहिंसा अपरिग्रह के स्वरूप में अनुस्यूत है। यदि यह कहें कि परिग्रह हिंसा है और अपरिग्रह अहिंसा है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। द्रव्यार्थिक हिंसा ही हिंसा नहीं है, अपितु शोषण और परपीड़ा द्रव्यार्थिक हिंसा से कमतर नहीं है। परिग्रह का लुभावना भवन असत्य, चौर्य, हिंसा, वैमनस्य, द्वेष आदि के ईंट गारे से बना होता है, जैसे-जैसे सम्पन्नता बढ़ती है, मनुष्य अपने दीर्घ जीवन की कामना करता है जिससे वह अधिक समय तक अधिकाधिक भोग-विलास कर सकें।[2] वह चोरी की आशंका, धनसम्पदा के क्षय और अपनी मृत्यु के भय से सदैव भयग्रस्त रहता है। यह विडम्बना ही है कि जिस सुख के लिए मनुष्य धन सम्पदा का संचय

करता है वही उसके लिए दुःख और संताप का कारण हो जाता है।

परिग्रह स्वामित्व (पजेशन) की प्रवृत्ति को बलवती करता है, और स्वामित्व का भाव व्यक्ति को स्वार्थी बनाता है, समाज का स्वास्थ्य सामूहिकता और सामुदायिकता की परार्थवादी धारणाओं पर आधारित होता है। स्वामित्व की स्वार्थवादी प्रवृत्ति से समाज में परस्पर द्वेष, घृणा और संघर्ष जैसी विघटनकारी परिस्थितियाँ जन्म लेती हैं, अतः यह कहना अनुचित नहीं कि परिग्रह में हिंसा समाविष्ट है। अपरिग्रह मोटे रूप में अलोभ और असंचय वृत्ति है, किन्तु व्यापक अर्थ में यह अपने में व्यक्ति के मानसिक और वैचारिक जगत को भी आवेष्टित करता है। परिग्रही जीवन असंयत और असंयम का जीवन है तो अपरिग्रह अनुशासित और संयमित जीवन है। अपरिग्रह का मार्ग अत्यन्त कठिन है। सामान्य गृहस्थ ही नहीं, साधु-संन्यासी भी परिग्रह के सुनहरे जाल से नहीं बच पाते हैं। वे पुत्रैषणा और वितैषणा से तो संन्यास लेने के कारण बच जाते हैं, परन्तु लोकैषणा अर्थात् यश और सम्मान की भावना से वे भी नहीं बच पाते हैं। मेरा संघ सबसे बड़ा है, कोई भी मेरा संघ छोड़कर दूसरे संघ में न जाए, अधिक से अधिक लोग मेरा अधिकाधिक सम्मान करें। ऐसा साधु या संन्यासी अर्थ और पदार्थ का संग्रह न करते हुए भी स्वयं और संघ के प्रति मोह और स्वामित्व से ग्रस्त होने के कारण गृहस्थ जैसा ही परिग्रही है।

अपरिग्रह अकर्मण्यता नहीं है। संसार में जीवन-निर्वाह हेतु संयमपूर्वक नियमों का पालन करते हुए पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करना प्रत्येक सद्गृहस्थ का कर्त्तव्य है। यह दायित्व निभाने में आवश्यक अर्थ-पदार्थ का संचय अपरिग्रह की मर्यादा का भंग नहीं है। लोभ और मोह से प्रेरित आवश्यकता से अधिक संचय परिग्रह है, जिसका दुष्परिणाम द्वेष, घृणा और हिंसा होता है। अपरिग्रह त्यागमय कर्मशील जीवन है। त्यागपूर्वक भोग करते हुए सौ वर्ष के कर्मशील जीवन जीने की कामना हमारा आदर्श रहा है।[3] त्याग और अपरिग्रह का आन्तरिक सम्बन्ध है। त्याग-प्रवृत्ति से अपरिग्रह का भाव सुदृढ़ होता है। पर हितार्थ वैयक्तिक कामनाओं, सुख-सुविधाओं को छोड़ना, अपनी आवश्यकताओं को सीमित करना, जनकल्याणार्थ दान देना आदि त्याग है। अपने परिवार के सुचारु रूप से पालन के लिए अपेक्षित सम्पत्ति के अतिरिक्त धन-सम्पदा पर अपना स्वामित्व न मानते हुए न्यासी की भाँति जनहितार्थ उपयोग अपरिग्रह का ही पालन है। लोभरहित श्रम साध्य आजीविका से जो कुछ प्राप्त होता है उसी से संतुष्टि हो जाती है। संतोष और अपरिग्रह में घनिष्ठ मैत्री भाव है। संतोषी व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति का मान नहीं होता और दूसरों की समृद्धि से द्वेष नहीं होता। जहाँ द्वेष नहीं वहाँ घृणा भी नहीं और घृणा और द्वेष के अभाव में हिंसा भी नहीं होती, क्योंकि द्वेष ही हिंसा का बीज है।

अपरिग्रही यदि किसी को कुछ न भी दे तब भी वह बहुत दान देने वाले परिग्रही से श्रेयस्कर उपकारी होता है। परिग्रही पहले समाज से बहुत छीन कर उसमें से कुछ अंशदान के रूप में वापिस करता है। इसके विपरीत अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को सीमित रखने वाला अपरिग्रही किसी को कुछ न देता हुआ भी अन्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति में अनायास ही सहायक हो जाता है। जल का अपव्यय न करने वाला क्या जल संकट से उबरने में सहायक नहीं होता? यही बात हमारे अन्य संसाधनों पर लागू होती है। अपरिग्रह आध्यात्मिक साम्यवाद और समाजवाद का सुदृढ़ आधार बन सकता है।

सीमित आकांक्षाओं वाले अपरिग्रही को असत्य भाषण और चोरी की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। जिसको अधिकाधिक प्राप्ति की आकांक्षा होती है ऐसे परिग्रही को झूठ, छल-कपट, चोरी जैसे अनैतिक तरीके अपनाने पड़ते हैं। अपरिग्रह व्रत के पालन से सत्य और अचौर्य व्रत का स्वतः ही पालन हो जाता है। लौकिक दृष्टि से ब्रह्मचर्य का तात्पर्य संयमित और संयत विषय भोग हैं। गृहस्थ के लिए मर्यादित और संयमित विषय-सेवन ब्रह्मचर्य का पालन ही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि निष्ठापूर्वक अपरिग्रह के पालन मात्र से सत्य, अहिंसा, अचौर्य और ब्रह्मचर्य का स्वतः ही पालन हो जाता है। अतः यह कहना कदापि अनुचित नहीं है कि अपरिग्रह नैतिकता की समग्रता है।

अपरिग्रह का एक सूक्ष्म पक्ष भी है, जिसकी ओर सामान्यतया हमारा ध्यान नहीं जाता। वह है वाणी और विचारों का अपरिग्रह। यह सूक्ष्म अपरिग्रह स्थूल अपरिग्रह से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। समाज में द्वन्द्व और संघर्ष के समाधान में इसकी महती भूमिका रहती है। सत्य भाषण तो वाणी का प्रत्यक्षतः अपरिग्रह है ही, इसके अतिरिक्त बात का ध्यान रखना कि किन परिस्थितियों में, कौनसे लोगों के सम्मुख कैसी और कितनी बात कहना भी वाणी का अपरिग्रह है। श्रोता को प्रभावित करने की यशाकांक्षा से प्रेरित होकर लम्बे समय तक व्याख्यान देना वाणी का परिग्रह है। वाणी का अपरिग्रही स्वयं अल्पभाषी होता है और दूसरों को धैर्यपूर्वक सुनता है। लेखन में कम, किन्तु सार्थक और प्रासंगिक भाषा का प्रयोग करते हुए अपने मत का प्रतिपादन करना भी व्यापक रूप से वाणी का अपरिग्रह है।

सामान्यतया हम विचार के अपरिग्रह पर कभी विचार नहीं करते। इसे हम दो रूपों में देख सकते हैं-1. विचार का अपरिग्रह और वैचारिक अपरिग्रह। खाली समय में नाना प्रकार के विचार करना जिनमें परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं होता, कोई तार्किकता नहीं होती, कोई उद्देश्य नहीं होता, न कोई समस्या और न कोई समाधान होता, विचारों का यह स्वच्छन्द आवागमन विचार का परिग्रह है। यही नहीं अनेक मनुष्य काल्पनिक अनिष्ट की आशंकाओं, जो कभी घटित होती ही नहीं, पर विचार करते हुए भयभीत रहते हैं। कुछ लोग

दूसरे व्यक्तियों के बारे में, जिनसे उन्हें कुछ लेना-देना नहीं, अनावश्यक ही सोचते रहते हैं, यह सब विचार का परिग्रह है। इन अनर्गल विचारों से कहीं अधिक अनिष्टकारी विचार हमारा नकारात्मक सोच होता है। अपने व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्वी अथवा विरोधी को किस प्रकार नीचा दिखाना, उसे पराजित करना, उसका अहित हो, इसके बारे में षड़यन्त्रकारी योजनाएँ बनाना, कहीं विरोधी हमारा अहित न कर दें, इस आशंका से आतंकित होकर उसकी मृत्यु तक की कामना कर बैठना आदि विचारों का नकारात्मक पक्ष है। विचार के इस परिग्रह से प्रतिद्वन्द्वी का तो कोई अहित होता नहीं, किन्तु परिग्रही का तो उसी क्षण अहित हो जाता है जिस समय उसने ऐसा नकारात्मक विचार किया। कर्मों का भाव बन्ध तो कुविचार करते समय ही हो गया। विचारों का यह परिग्रह विचारकर्ता के चित्त को निर्बल और डरपोक बनाता है। प्रमाद या असावधानी हमारे कुविचारों का बीज है। अनुशासित, संयत और सकारात्मक सोच, विचार का अपरिग्रह है। प्रतिद्वन्द्वी के दुःख और कष्ट में उसके प्रति सहानुभूति का भाव, उसके कल्याण की कामना विचार का अपरिग्रह है। विचार का यह अपरिग्रह हमारे चित्त को न केवल निर्मल ही रखता है, अपितु इसके फलस्वरूप हमें अद्भुत आत्मिक सन्तोष की अनुभूति होती है।

वैचारिक अपरिग्रह को भी वैचारिक सोच या दृष्टिकोण और वैचारिक आग्रह के दो सन्दर्भों में देखा जा सकता है। व्यक्ति समाज में रहता है, अतः उसका सोच समाज को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। स्थूल रूप में जीवन के प्रति व्यक्ति के सोच या दृष्टिकोण को हम अधिक ममत्वयुक्त या अधिक पजेसिव (स्वामित्व भाव वाला) और अपेक्षाकृत कम ममत्वयुक्त या कम पजेसिव मान सकते हैं। (हम यह मान कर चल सकते हैं कि संसार में कोई विरला ही व्यक्ति पूर्णतः ममत्व रहित होता है), अधिक ममत्व या आसक्ति वाले लोग अधिक परिग्रही और कम ममत्व या कम आसक्ति वाले कम परिग्रही होते हैं। पजेसिव या ममत्व प्रधान लोग स्वयं तो अशांत और अस्थिर रहते ही हैं, वे अपने परिवेश यथा परिवार, मित्र और सहयोगी आदि को भी दुष्प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत संतोषी व्यक्ति स्वयं भी शान्त और सुखी रहता है तथा परिवेश भी सुखद बना रहता है। सामाजिक शान्ति-अशान्ति में वैचारिक आग्रह की कहीं अधिक महती भूमिका रहती है। व्यक्तियों के सिद्धान्त, मान्यताएँ, धर्म आदि वैचारिक-आग्रह कहलाते हैं। इन वैचारिक-आग्रह के सन्दर्भ में परिग्रह और अपरिग्रह घटित होता है।

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी धर्म या मान्यता या सिद्धान्त अथवा प्रथा आदि को किसी न किसी रूप में अवश्य मानता है। अपने धर्म या मान्यता पर दृढ़ रहना सामान्यतया कोई बुरी बात भी नहीं, परन्तु जब कोई व्यक्ति या समुदाय अपनी ही मान्यता या धर्म को

सर्वश्रेष्ठ मानकर यह प्रयास करे कि अन्य लोग भी उसी की मान्यता को स्वीकार करें तो निश्चय ही उसका यह आग्रह समाज में संघर्ष और द्वन्द्व का वातावरण उत्पन्न कर देता है। इस प्रकार के आग्रह को हम वैचारिक परिग्रह कह सकते हैं। ऊपर वर्णित पजेसिव सोच वाले लोगों में वैचारिक परिग्रह की दृढ़ता अधिक होती है। किसी समाज में भिन्न-भिन्न वैचारिक आग्रह वाले एकाधिक समुदाय रहते हैं।

अनेकता में एकता वाले हमारे भारतीय समाज में अन्य समाजों की तुलना में वैचारिक आग्रह वाले समुदाय अधिक संख्या में हैं। ऐसी परिस्थितियों में शान्त और सुखद वातावरण के लिए विभिन्न वैचारिक-आग्रहयुक्त समुदायों में परस्पर सौहार्द और सौमनस्य परमावश्यक है। यह पारस्परिक सौहार्द केवल और केवल वैचारिक-अपरिग्रह से ही सम्भव हो सकता है। अपनी मान्यता या धर्म का पालन करते हुए अन्यों के सिद्धान्त का आदर करना वैचारिक अपरिग्रह है। जैसे हमारा धर्म हमारे लिए श्रेष्ठ है वैसे ही अन्यों का अन्यों के लिए भी उतना ही श्रेष्ठ है, यह भाव वैचारिक अपरिग्रह है। अनेकान्तवाद वैचारिक-अपरिग्रह का ही दूसरा रूप है। यों भी कह सकते हैं कि वैचारिक-अपरिग्रह अनेकान्तवाद का बीज है, क्योंकि बिना वैचारिक-अपरिग्रह भाव के अनेकान्तवाद घटित नहीं हो सकता है। अपरिग्रह अनेकान्तवाद से अधिक व्यापक है। वैचारिक-अपरिग्रह का तात्पर्य है कि जब भी हमें अपने धर्म या मान्यता या सिद्धान्त के बारे में दूसरों को बतलाना हो तो हमारी प्रस्तुति इस प्रकार की होनी चाहिए कि अन्य मान्यता वाले लोग उस प्रस्तुति से आहत न हों, न वे अपने को छोटा या कमतर महसूस करें। आचारांग में स्पष्टतः वैचारिक-परिग्रह की ओर संकेत करके कहा गया है कि धर्म-प्रवचन (धर्म कथा) में किसी के सिद्धान्त का अनादर करने पर अशान्ति और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः अविधिपूर्वक की जाने वाली धर्मकथा (धार्मिक प्रवचन) श्रेयस्कर नहीं।[4] वैचारिक-अपरिग्रही को अपनी मान्यता के निर्बल पक्ष और अन्यों की मान्यता की श्रेष्ठ विशेषताओं को स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं होती। यह वैचारिक-अपरिग्रह ही सामाजिक द्वन्द्वों, संघर्ष और पारस्परिक मतभेदों के समाधान का श्रेयस्कर साधन है। वैचारिक-अपरिग्रह शान्त, सुखी और समृद्ध समाज का सुदृढ़ आधार है। संक्षेप में अपरिग्रह का सम्यक् पालन स्वयं में सम्यक् आचरण की समग्रता है।

संदर्भः-

1. आचारांग- 2.6.156
2. आचारांग- 2.3.57, 58
3. ईशावास्योपनिषद् 1,2
4. आचारांग 2.6.175-176

-से.नि. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-दर्शनशास्त्र,
गोदावरी-वल्लभ निवास, मकराणा मौहल्ला, जोधपुर-342002 (राज.)

समाज-चिन्तन

बात कुछ और है, पर खास है

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

बात मंदिर की कुछ और होती है। भक्त लोग आते हैं, भक्तिभाव से भगवान् की पूजा करते हैं। जेब में हाथ डालते हैं और चुपचाप चढ़ावा चढ़ा जाते हैं। किसी को पता ही नहीं चलता और दान-पेटी व हुण्डी भर जाती है और सारी व्यवस्था अपने आप चलती रहती है।

पर, बात स्थानक की कुछ और है। लोग आते हैं, हाथ जोड़ते हैं, दर्शन करते हैं, वन्दना करते हैं, मांगलिक सुनते हैं और हाथ हिलाते हुए चले जाते हैं। जब कोई साधु-साध्वी स्थानक में पधारते हैं तब हमारा जाना होता है। पर्युषण के दिनों में प्रतिक्रमण के लिए अवश्य जाते हैं। हर रोज नहीं जाने वाले भी संवत्सरी के दिन तो अवश्य जाते हैं। क्योंकि हमने जैन कुल में जन्म लिया है। तो फिर हमारे बाप-दादाओं ने, बुजुर्गों ने जिस उत्साह, उमंग व भावना से हम सब के लिए धर्म-ध्यान की आराधना करने के लिए इस पवित्र स्थान का निर्माण कराया था, उसकी सफाई व स्वच्छता की, रख-रखाव की जवाबदारी एवं जिम्मेदारी हमारी, हमारे समाज की बनती है। हर रोज या हर हफ्ते स्थानक की सफाई की व्यवस्था करने की क्षमता तो हम सभी को मिली है। हमारे भाइयों के साथ-साथ महिलाएँ भी इसमें जुड़कर काम करेंगी तो सफलता निश्चित है। पर हमने अपने कर्त्तव्यों की जिम्मेदारी को समझने की कोशिश नहीं की। सब कुछ जानते हुए भी अनजान बेखबर बने रहे।

हम सभी आज तक अपनी जवाबदारी से कतराते रहे हैं। पर आज से हमें इस पर विचार करना है। आज से ध्यान रखना है कि स्थानक को अपने दिल के नजदीक समझना है, स्थान देना है। अपने आराधना स्थल की पवित्रता की, उपयोगिता की रक्षा करनी है। तन, मन और धन से सहयोग देना है।

हमारे समाज का छोटा हो या बड़ा नगर, गांव हो या शहर सभी को 'स्थानक चलो' का अभियान शुरु करना चाहिए। जो युवा हैं, स्वस्थ हैं, युवा मण्डल हैं वे इस अभियान को अपने हाथों में लें तो सूने पड़े स्थानकों में चहल-पहल और रौनक लौटकर आ सकती है।

सामायिक, प्रार्थना के साथ ध्यान का कार्यक्रम रखा जा सकता है। इससे हमारे समाज के तन-मन के विकास से काया कल्प हो सकता है। हम अपने बुजुर्गों का, गुरु का नाम रोशन कर सकते हैं। सप्ताह में कम से कम एक बार तो स्थानक में जाएं ही जाएं।

हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम स्थानकवासी मान्यता वाले अपने स्थानकों की व्यवस्था के लिए कम से कम हर वर्ष रुपये 500/- से रुपये 1000/- तक योगदान देने का संकल्प करें। "स्थानक मैन्टीनेन्स फंड" अलग रहे, तो स्थानक की रिपेयर रंग-रोगान सुविधाओं के विस्तार करने के काम आ सकता है।

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

शोधालेख

प्रतिक्रमण से करें आत्मा का कायापलट

डॉ. आर्या सुप्रभा 'सुधा'

(विदुषी महासती श्री उमरावकंवर जी म.सा. 'अर्चना' की शिष्या)

जैन दर्शन मानव को अन्तर्दर्शन की प्रेरणा देता है। जैन दर्शन की प्रत्येक साधना आत्मदर्शन की साधना है। वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकरों ने यह सिद्ध कर दिया कि अपनी आत्मा का उत्थान एवं पतन, विकास एवं ह्रास अपने ही हाथ में है। संसार की कोई भी शक्ति अन्य आत्मा का उत्थान एवं पतन नहीं कर सकती। प्रत्येक आत्मा की शुद्धि राग-द्वेषादिजनित कर्म नष्ट होने पर होती है। आत्म-भावनापरायण व्यक्ति का यह चिन्तन होता है कि सुख-दुःख, सौभाग्य-दुर्भाग्य, लाभ-अलाभ, अच्छी-बुरी स्थिति का उत्तरदायी वह स्वयं है। उत्तराध्ययन सूत्र में इस तथ्य को स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है -

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिओ सुप्पट्ठिओ।।[1]

आत्मा ही अपने सुखों एवं दुःखों का कर्ता है। आत्मा जब अपने आत्मभाव में सुप्रतिष्ठित होता है, तब वह अपना मित्र होता है और आत्मभाव से हटकर पर-भावों में दुष्प्रतिष्ठित होता है, तब वह अपना शत्रु बन जाता है।

आत्मा को दुष्प्रतिष्ठ से सुप्रतिष्ठ बनाने हेतु 'आवश्यक' का विधान है। आवश्यक जैन साधना का प्रमुखतम अंग है। जो अवश्य ही किया जाय वह आवश्यक है।[2] अथवा जो आत्मा को दुर्गुणों से हटाकर सद्गुणों में नियोजित करे वह आवश्यक हैं।[3] अथवा इन्द्रिय और कषाय जिस साधना से पराजित किये जायें वह आवश्यक है।[4] अन्तर्दृष्टिसम्पन्न साधक का लक्ष्य बाह्य पदार्थ नहीं, आत्मशोधन है। जिस साधना-आराधना से आत्मा शाश्वत सुख का अनुभव करे, कर्म-मल को नष्टकर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र से अध्यात्म के आलोक को प्राप्त करे वह आवश्यक है। अनुयोगद्वार में आवश्यक के आठ पर्यायवाची नाम दिये हैं- आवश्यक, अवश्यकरणीय, ध्रुवनिग्रह, विशोधी, अध्ययनषट्क वर्ग, न्याय, आराधना और मार्ग।[5] इन नामों में किंचित् अर्थभेद होने पर भी सभी नाम समान अर्थ को ही

व्यक्त करते हैं।

आत्मा के अनन्तकाल से प्रमाद और असावधानी के कारण विकार और वासनाएँ अपना प्रभुत्व जमाए हुए हैं। आज का मानव जितना ध्यान धन कमाने, शरीर सजाने-संवारने, खाने-पीने तथा वैभव प्रदर्शन का ताना-बाना बुनने पर देता है, उतना यदि आत्म-चिंतन, आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-परिष्कार की प्रक्रिया में दे तो अवश्य ही आत्मशक्ति की मात्रा अनेकगुणी बढ़ सकती है।

प्रतिक्रमण की साधना वह साधना है जिसके द्वारा आत्म-विश्वास, आत्म-परिष्कार एवं आत्म-निर्माण हो सकता है। प्रतिक्रमण के द्वारा सही रूप में आत्मा का काया-पलट हो सकता है।

प्रतिक्रमण की साधना के द्वारा व्यक्ति अपने तन-मन को अवांछनीय मार्ग से विरत कर सन्मार्ग का राही बन सकता है। दुर्गुण या मन-वचन-काया की दुष्प्रवृतियाँ अथवा उन्मार्ग एवं मर्यादा विरुद्ध अकरणीय, दुर्ध्यान, दुश्चिन्तन, अनाचार एवं अवांछनीय आचरण व्यक्ति की प्रमादावस्था के कारण कब्जा जमा लेते हैं। जैसे ही ये अवांछनीय तत्त्व अन्तरात्मा में प्रविष्ट होते हैं उन्हें सजग साधक प्रतिक्रमण के द्वारा बाहर भगा देते हैं।

प्रतिक्रमण का शाब्दिक अर्थ है- 'पापों से निवृत्त होना।' साधक अपने दैनिक जीवन पर निगाह डालता है कि आत्मा की शुद्ध स्थिति में अशुद्धता ने कहाँ तक प्रवेश किया है? इस प्रकार आत्म आलोचना द्वारा अपना निरीक्षण करना प्रतिक्रमण है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के लिए सायंकाल एवं प्रातःकाल कर्मों की निर्जरा के लिए जो साधना की जाती है वह प्रतिक्रमण है।

अनुयोगद्वार सूत्र में द्रव्य-आवश्यक एवं भाव-आवश्यक का सुन्दर निरूपण किया गया है। द्रव्य आवश्यक में बिना चिन्तन, अन्यमनस्क भाव से पाठों का केवल उच्चारण किया जाता है। जो पाठ बोला जा रहा है उस पाठ में मन न लगाकर वह इधर-उधर भटकता रहता है। इस प्रकार द्रव्य आवश्यक में केवल बाह्य क्रिया चलती है। उपयोग के अभाव में उस क्रिया से आत्मा का रूपान्तरण नहीं होता है, और न ही आन्तरिक तेज प्रकट होता है। वह प्राण रहित साधना है।

भाव आवश्यक में साधक उपयोग के साथ क्रिया करता है। उस क्रिया के साथ साधक का मनोयोग, वचन योग एवं काय योग पूर्ण रूप से एकाग्र रहता है। इस प्रकार गुणों की वृद्धि के लिए आवश्यक क्रिया का आचरण बहुत आवश्यक है। प्रतिक्रमण सूत्र में साधना का जो क्रम रखा गया है वह कार्य-कारण भाव की शृंखला पर अवस्थित है तथा पूर्ण वैज्ञानिक है।

साधक के लिये सर्वप्रथम समता का पालन करना आवश्यक है। समता को अपनाये बिना सद्गुणों का विकास नहीं हो सकता है और न अवगुणों से ग्लानि हो सकती है। जब तक विषम भावों की ज्वालाएँ अन्तर्हृदय में दहकती रहेंगी तब तक वह वीतरागी महापुरुषों के सद्गुणों का उत्कीर्तन नहीं कर सकता। अतः प्रथम आवश्यक सामायिक है। समता को अपनाने वाला साधक ही महापुरुषों के गुणों को आदर की निगाह से निहारता है। उन गुणों को जीवन में उतार सकता है, अतएव सामायिक आवश्यक के पश्चात् चतुर्विंशतिस्तव रखा गया है। जब गुणों को व्यक्ति हृदय में धारण करता है, तभी उसका मस्तक महापुरुषों के चरणों में झुकता है, वह भक्ति भावना से विभोर होकर वन्दन करता है, इसीलिए तृतीय आवश्यक वन्दन है। वन्दन करने वाले साधक का हृदय सरल होता है। सरल व्यक्ति ही कृत दोषों की आलोचना करता है, अतः वन्दन के पश्चात् प्रतिक्रमण आवश्यक का निरूपण किया गया है। दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक एवं सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के द्वारा अपने जीवन का अन्तर्निरीक्षण करता हुआ जीव पुनः सम्यक्त्व, व्रत, अकषायता, अप्रमाद और शुभ योग में प्रवृत्त हो जाता है। प्रतिक्रमण सूत्र का पाँचवा आवश्यक कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग में तन-मन की एकाग्रता का अध्ययन किया जाता है। तीनों योगों की स्थिरता होने पर छट्ठे आवश्यक प्रत्याख्यान की साधना सफल हो जाती है।

प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल नियमित प्रतिक्रमण करना चाहिये। जिस मकान में प्रतिदिन झाड़ू लगाया जाता है, वह मकान स्वच्छ रहता है। पर्वों के अवसर पर उसे विशेष झाड़ने की आवश्यकता नहीं रहती है। यदि कहीं असावधानी से धूल-जम जाती है तो उसे साफ कर दिया जाता है। वैसे ही प्रतिदिन शुद्ध मनोयोग द्वारा प्रतिक्रमण करने से आत्मा निर्मल रहती है, यदि कदाचित् सावधानी रखने के बावजूद भी कहीं पर स्खलना हो जाती है तो पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण से उसकी भी शुद्धि कर ली जाती है। प्रतिक्रमण करने से आत्म-निरीक्षण का सुनहरा अवसर मिलता है, त्याग प्रत्याख्यान के प्रति निष्ठा जागृत होती है। मन और वाणी की विशुद्धि होती है। प्रतिक्रमण एक ऐसा अनमोल रसायन है जिसका सेवन सभी के लिए हितावह है।

जैन जगत के ज्योतिर्धर आचार्य श्री हरिभद्र सूरि ने प्रतिक्रमण को तृतीय वैद्य की औषधि के समान बताया है।[6] जो रोग होने पर लाभ करती है। रोग को नष्ट कर रोगी को स्वस्थ और प्रसन्न बनाती है तथा रोग न होने पर भी उसके सेवन से शरीर के कण-कण में ओज-तेज प्रदीप्त होता है। शरीर सशक्त और तेजस्वी

बनता है।

आचार्य ने एक दृष्टान्त दिया है- एक राजा का इकलौता राजकुमार बीमार हो गया। राजा ने देश के नामी श्रेष्ठ वैद्यों को बुलाया और कहा-"राजकुमार की चिकित्सा करनी है। इसका नाड़ी परीक्षण करके औषध आदि बताओ।"

एक वैद्यराज ने राजकुमार की नाड़ी, शरीर के अन्य चिह्न आदि देखकर कहा- "राजन्! राजकुमार को जो रोग है, मैं उसके लिए एक औषध तैयार करूँगा। यह औषध खाने से राजकुमार का रोग दूर हो जायेगा, किन्तु औषध इतनी तेज है कि अगर अधिक मात्रा में सेवन कर ली तो फिर वह पहले तो रोग को खायेगी फिर शरीर को गलाने लग जायेगी, इसलिए पूरी सावधानी से देनी पड़ेगी।"

राजा ने कहा- नहीं। इतनी तेज और खतरनाक औषध नहीं देनी है।"

दूसरे वैद्य ने कहा- "मैं एक मूल्यवान औषध दूँगा, जो जितना रोग होगा वह सब मिटा देगी, उसके बाद अगर अधिक मात्रा में पहुँच गई तो, वह राख में गिरे घी की तरह व्यर्थ हो जायेगी। अधिक मात्रा में लेने पर न कोई हानि पहुँचायेगी और न ही लाभ।"

राजा ने कहा- "नहीं! यह औषध भी ठीक नहीं है।"

तीसरे वैद्यराज ने कहा- "राजन्! मैं एक ऐसा परम रसायन तैयार कर दूँगा, जिसका सेवन करने से रोग तो जड़ मूल से नष्ट हो ही जायेगा और उसके बाद नीरोग शरीर में भी उसका सेवन करेंगे तो वह बल-वीर्य की वृद्धि करके शरीर को कंचन जैसा नीरोग बना देगा।"

राजा ने कहा- "वैद्यराज! आपका परम रसायन ही सर्वश्रेष्ठ है। यही राजकुमार को देना है।"

इस प्रकार आचार्य भगवन्तों का यही कथन है कि प्रतिक्रमण भी आत्मा के लिए एक ऐसा ही परम रसायन है। यह आत्मा में रहे दोषों को दूर करता है, पापों का नाश करता है और बाद में भी ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप सद्गुणों की शक्ति में अभिवृद्धि करता है।

प्रतिक्रमण के षडावश्यक साधक के लिये अवश्यकरणीय क्रिया है। छह आवश्यकों का क्रम भी बड़े वैज्ञानिक ढंग से निरूपित किया गया है। पहला 'सामायिक' आवश्यक जीवन में समभाव की साधना सिखाता है। समता के द्वारा साधक आत्मशक्तियों को केन्द्रित करके अपनी महान् ऊर्जा को प्रकट करता है। सामायिक की साधना बहुत ही उत्कृष्ट साधना है। अन्य जितनी भी साधनाएँ हैं, वे

सभी साधनाएँ इसमें अन्तर्निहित हो जाती हैं। उपाध्याय यशोविजय जी ने सामायिक को सम्पूर्ण द्वादशांगी रूप जिनवाणी का साररूप बताया है।[7] समता के अभाव में उपासना उपहास है। आत्मा का काषायिक विकारों से अलग होकर स्वस्वरूप में रमण करना ही सामायिक है। आचार्य जिनदासगणी महत्तर ने भाव सामायिक आवश्यक को आदिमंगल माना है।[8] विश्व में जितने भी द्रव्य मंगल हैं, वे सभी अमंगल के रूप में परिवर्तित हो सकते हैं, पर सामायिक ऐसा भाव मंगल है जो कभी भी अमंगल में परिवर्तित नहीं हो सकता। समभाव की साधना मंगलों का मूल केन्द्र है।

सामायिक की साधना के विषय में गणधर गौतमस्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर से प्रश्न किया-

प्रश्न :- सामाइएणं भंते! जीवे किं जणयइ?

उत्तर :- सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणमइ।।[9]

जीवन को स्पर्श करने वाला कितना मार्मिक प्रश्नोत्तर है। जिस आत्मा ने समता के अमृत बिन्दु का पान किया है, वह कौनसा आनन्द प्राप्त करता है ? प्रभु ने फरमाया- हे गौतम! सामायिक द्वारा आत्मा सावद्ययोग की प्रवृत्ति से विरत होता है। यह आत्मा को अशुभ वृत्ति से हटाकर शुभ में जोड़ती है तथा शुभ से शुद्ध की ओर ले जाती है।

आवश्यक सूत्र का दूसरा अध्ययन चतुर्विंशतिस्तव है। आलोचना के क्षेत्र में पहुँचने से पूर्व क्षेत्रशुद्धि होना आवश्यक है। महापुरुषों का गुणकीर्तन प्रत्येक साधक के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जब तक मानव-मन वर्तमान चौबीसी, जो आध्यात्मिक जीवन के चौबीस सर्वोत्तम कलामर्मज्ञ हो गये हैं, उनकी शरण नहीं लेगा तब तक आध्यात्मिक कला सीख नहीं सकेगा। इस विषय में गणधर गौतम प्रभु महावीर से प्रश्न करते हैं-

प्रश्न :- चउव्वीसत्थएणं भंते जीवे किं जणयइ ?

उत्तर :- चउव्वीसत्थएणं दसंणविसोहिं जणयइ।।[10]

प्रभो! चतुर्विंशति-स्तव का जीवन में क्या स्थान है तथा आत्मा कौन-से आध्यात्मिक गुण को प्राप्त करती है?

हे गौतम! प्रार्थना का, स्तुति का प्रकाश जीवन में दर्शन को विशुद्ध बनाता है। मिथ्यात्व का अंधकार दर्शनगुण की प्रभा से नष्ट हो जाता है, किन्तु वीतराग की स्तुति मिथ्यात्व से हटाकर साधक को सम्यक्त्व की ओर ले जाती है।

आवश्यक सूत्र का तीसरा अध्ययन 'वन्दना' है। आलोचना के क्षेत्र में प्रवेश करते समय गुरु-भक्ति एवं नम्रता का होना आवश्यक है। जीवन का पारखी सेठ सुदर्शन मुनि थावच्चापुत्र से प्रश्न करता है कि जैन धर्म का मूल क्या है? किं मूलए धम्मे? कहा- **"सुदंसणा! विणयमूले धम्मे।"** विनय जीवन प्रासाद की नींव की ईंट है। पूछा गया-

प्रश्न :- वन्दएणं जीवे किं जणयइ?

उत्तर :- वन्दएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ। सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ, दाहिण भावं च णं जणयइ।[11]

वन्दन करने से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है? इस पर भगवान् ने फरमाया- "वन्दना आत्मा के नीच गोत्र रूप बंधे हुए कर्म को क्षय करता है और उच्चगोत्र कर्म को बांधता है। विनय भाव से साधक की आत्मा में इतना निखार आ जाता है कि सभी उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। साथ ही वन्दना से आत्मा को दाक्षिण्य-भाव प्राप्त होता है।

प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्र का चतुर्थ अध्ययन है। व्रतों में लगे अतिचारों की शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण की आवश्यकता है। प्रतिचारणा, परिहरणा, वारणा, निवृत्ति, निन्दा, गर्हा, शुद्धि आदि प्रतिक्रमण के पर्यायवाची हैं। प्रतिक्रमण का आत्मा के साथ क्या सम्बन्ध है? इस विषय में शिष्य प्रश्न करता है-

प्रश्न :- पडिक्कमणेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

उत्तर :- पडिक्कमणेणं वयछिंदाणि पिहेइ, विहिय-वय-छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे, असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु, उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ।[12]

शिष्य के मन की जिज्ञासा का समाधान करते हुए भगवान् फरमाते हैं कि प्रतिक्रमण द्वारा साधक व्रत के छिद्रों को ढकता है। प्रमादवश व्रत में स्खलना आई हो तो साधक प्रतिक्रमण के द्वारा उसे दूर करता है। शुद्धव्रतधारी जीव आस्रवों को रोककर सबलादि दोष रहित शुद्ध संयम वाला होकर आठ प्रवचन माता में सावधान होता है और संयम में तल्लीन रहता हुआ समाधिपूर्वक अपनी इन्द्रियों को सन्मार्गगामी बनाकर संयम मार्ग में विचरण करता है।

साधक प्रतिदिन प्रतिक्रमण के समय अपने जीवन का अन्तर्निरीक्षण करता हुआ यह देखता है कि वह कहीं सम्यक्त्व से मिथ्यात्व के कंटीले पथ की तरफ तो नहीं बढ़ रहा है? व्रत के वास्तविक स्वरूप को भूलकर अव्रत की ओर तो नहीं जा रहा है? यदि मैं मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग में गया हूँ, तो

मुझे पुनः सम्यक्त्व, व्रत, अकषायता, अप्रमाद और शुभ योग में प्रवृत्त होना है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रतिक्रमण साधक जीवन की एक अपूर्व कला है। प्रतिक्रमण के साधक अपने जीवन की प्रत्येक प्रवृत्ति का अवलोकन, निरीक्षण, परीक्षण, करते समय लगे हुए दोषों से निवृत्त होकर निर्मल बनते हैं।

साधारणतया यह समझा जाता है कि प्रतिक्रमण अतीतकाल में लगे हुए दोषों की परिशुद्धि के लिये है। लेकिन आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने बताया कि प्रतिक्रमण केवल अतीत काल में लगे दोषों की ही परिशुद्धि नहीं करता अपितु यह वर्तमान और भविष्य के दोषों की भी शुद्धि करता है।[13] अतीत काल में लगे हुए दोषों की आलोचना प्रतिक्रमण में की जाती है। वर्तमान में साधक संवर साधना में लगा रहने से पापों से निवृत्त हो जाता है। साथ ही प्रतिक्रमण में प्रत्याख्यान ग्रहण करता है, जिसमें भावी दोषों से भी बच जाता है।

प्रतिक्रमण आत्मशुद्धि के लिए श्रेष्ठ उपक्रम है। आध्यात्मिक जीवन की धुरी है। प्रतिक्रमण जीवन को मांजने की एक अपूर्व क्रिया है। जीवन शुद्धि का श्रेष्ठतम प्रकार है।

कायोत्सर्ग प्रतिक्रमण सूत्र का पाँचवाँ अध्ययन है तथा ग्यारवाँ तप भी है। कायोत्सर्ग में काया और उत्सर्ग - ये दो शब्द आते हैं, जिसका तात्पर्य है- काया के ममत्व का त्याग, देहासक्ति का त्याग करना। इस प्रकार कायोत्सर्ग अन्तर्मुखी होने की एक पवित्र साधना है। कायोत्सर्ग के विषय में शिष्य प्रश्न करता है-

प्रश्न :- काउसग्गेणं भंते जीवे किं जणयइ?

उत्तर :- काउसग्गेणं तीय - पडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ, विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरिय भारव्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ।[14]

कायोत्सर्ग के द्वारा आत्मा भूतकाल और वर्तमान काल के अतिचारों से विशुद्ध बनता है। अतिचारों से शुद्ध होने के पश्चात् साधक के मन में आनन्द का अनुभव होता है। जैसे कोई मजदूर अपने मस्तक का भार हटने से हल्का होता है ऐसे ही कायोत्सर्ग से आत्मा हल्की हो जाती है।

प्रत्याख्यान आवश्यकसूत्र का छठा अध्ययन है। प्रत्याख्यान से भविष्य में लगने वाले पाप रुक जाते हैं और साधक का जीवन संयम के सुनहरे प्रकाश में जगमगाने लगता है।

साधना के क्षेत्र में प्रत्याख्यान का विशिष्ट महत्त्व रहा है। प्रत्याख्यान से आत्मा मन, वचन एवं काया की दुष्ट प्रवृत्तियों को रोककर शुभ प्रवृत्तियों में प्रवृत्त

होता है। उससे साधक के जीवन में अनासक्ति की विशेष जागृति होती है।

प्रश्न :- पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

उत्तर :- पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं णिरुंभइ, पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ। इच्छानिरोहगए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीईभूए विहरइ।[15]

प्रत्याख्यान द्वारा आत्मा आस्रव के द्वारों को रोक देता है। जिससे समस्त इच्छाओं का निरोध हो जाता है, क्योंकि इच्छाओं को मर्यादित किये बिना प्रत्याख्यान संभावित नहीं। प्रत्याख्यान से मन की तृष्णाजन्य स्थिति एवं चंचलता समाप्त हो जाती है।

आत्मिक प्रगति के पथ में अवरोध उत्पन्न करने वाली दुष्प्रवृत्तियों में तीन मुख्य हैं- कामैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा। इन प्रवृत्तियों से आत्मा में खोखलापन आ जाता है। आत्मप्रगति में इन अवरोधक तत्त्वों को प्रतिक्रमण की साधना के द्वारा दूर किया जा सकता है। प्रतिक्रमण से व्यक्ति का आत्मिक परिमार्जन परिशोधन होता है।

-ब्रज मधुकर भवन, पीपलिया बाजार, ब्यावर (राज.)

सन्दर्भ : -

1. उत्तराध्ययन, अध्ययन 20 गाथा 27
2. अवश्यकर्त्तव्यमावश्यकम्।- आवश्यक मलयगिरिवृत्ति।
3. गुणानां वश्यमात्मानं करोतीति।
4. ज्ञानादिगुणानाम् आसमन्ताद् वश्या इन्द्रियकषायादिभावशत्रवो यस्मात् तद्- आवश्यकं। -मलयगिरिवृत्ति
5. आवस्सयं अवस्सकरणिज्जं, धुवनिग्गहो विसोही य।
   अज्झयण-छक्कवग्गो, नाओ आराहणा मग्गो।।
6. प्रतिक्रमणमप्येवं, सति दोषे प्रमादतः।
   तृतीयौषधकल्पत्वाद्, द्विसंध्यमथवाऽसति -आवश्यक हरिभद्रीयावृत्ति
7. तत्त्वार्थवृत्ति 1-1
8. आदिमंगलं सामायियज्झयणं - आवश्यक चूर्णि
9. उत्तराध्ययन, अ. 29 सूत्र 9
10. उत्तराध्ययन, अ. 29 सूत्र 10
11. उत्तराध्ययन, अ. 29 सूत्र 11
12. उत्तराध्ययन, अ. 29 सूत्र 12
13. आवश्यक निर्युक्ति
14. उत्तराध्ययन, अ. 29 सूत्र 13

संवत्सरी-पर्व

क्षमा : सुख-शान्ति का प्रशस्त मार्ग

डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन

क्षमा मानवीय गुण है, इसीलिए विश्व के सभी धर्मों में इस गुण की सर्वाधिक प्रतिष्ठा है। जिसके पास यह गुण है, उसके पास सभी अच्छाइयाँ और सम्पदाएँ अपने आप आ जाती हैं। क्षमा आत्म-स्वातन्त्र्य की रणभेरी है, इससे जीवन का कोई भी संघर्ष जीत सकते हैं। इसे धारण करने से दूसरा व्यक्ति आक्रमण करके भी स्वयं ही पराजित होता रहता है।

क्षमा स्वयं के लिए महत्त्वपूर्ण है, भले ही दूसरा व्यक्ति उससे मांगे या नहीं, वह अपनी भूल स्वीकारे या नहीं। क्षमा हमें कमजोर बनाती है, यह भ्रम है। क्षमा तो वीरों का आभूषण है, इसमें स्वयं की निजी शक्ति-साहस का ज्ञान होता है। असल में यह क्षमा व्यक्ति को और भी अधिक शक्तिशाली और बेहतर बनाती है। क्षमा कोई कार्य नहीं, एक प्रक्रिया है और इसमें समय भी लग सकता है। क्षमा करने के लिए कुछ जरूरी बातें ध्यान में रखी जाएँ, तो बहुत हद तक हम इसके अधिकारी बनने लायक हो सकते हैं-

1. वर्तमान परिस्थितियाँ प्रतिकूल हैं, तो इनमें बदलाव अपने आचरण से ही लाना होगा, दूसरों की भावनाओं पर हमारा कोई नियन्त्रण नहीं है।
2. कोई भी व्यक्ति पूर्णता को प्राप्त नहीं है, कहीं न कहीं और किसी न किसी रूप में प्रत्येक में वह अपूर्णता रहती ही है। फिर भी हम स्वयं से अनजान बन, स्वयं को ही आदर्श मान लेते हैं।
3. व्यक्ति जानकर भी अपने गलत आचरण और व्यवहार से अनजान रहता है और इस बात से भी अनजान रहता है कि हमारे इस असद्-आचरण का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. क्षमा तो वस्तुतः स्वयं के लिए है। किसी के द्वारा पहुँचाई गई ठेस या चोट को दिल में बसाये रखना, किसी दूसरे से अधिक स्वयं को तकलीफ पहुँचाना है। यह हमारे वर्तमान को पूरी तरह से जीने और सुखी बनाने से रोकता है।
5. इसीलिए जितनी जल्दी हो सके क्षमा माँगने और करने में देर नहीं करना चाहिए। इस कार्य में सहृदयता, स्पष्टवादिता और मन-वचन-काय से ईमानदारी अति आवश्यक है।

क्षमाशील बनने के लिए धैर्य, साहस, विश्वास, सहनशीलता के साथ ही ध्यान, स्वाध्याय, दर्शनविशुद्धि आदि सोलह कारण भावना तथा अनित्य, अशरण आदि बारह तथा मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ्य इन सभी प्रकार की भावनाओं एवं प्रार्थनाओं का नियमित अभ्यास करना-कराना आवश्यक है। ऐसा करने से भीतर में क्रोध, मान, माया और लोभ-कषायों की जमी परतें उखड़कर दूर होती दिखती हैं।

सच्चे हृदय से माँगी गई और की गई क्षमा समस्त रोगों की एकमात्र वह सम्पूर्ण औषधि है, जो कटुता या बुराई रूपी रोगों और घावों को जड़ से समाप्त कर प्रेम और सौहार्द बढ़ाती है। वस्तुतः क्षमा माँगना और क्षमा करना कोई आसान कार्य नहीं है। इसके लिए विशाल हृदय चाहिए। इसीलिए क्षमा को वीरों का आभूषण कहा गया है।

वास्तविक क्षमा तो प्यार जताने का सर्वोत्तम तरीका है। ऐसा करने से स्वयं को एवं दूसरों को शांति एवं प्रसन्नता मिलती है। इससे यह समझना चाहिए कि क्षमाशील व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सेहत का हकदार हो जाता है। क्षमा करने की योग्यता हमारे जीवन पर नियंत्रण की अभिव्यक्ति भी है। क्योंकि हम शनैः शनैः जितनी आध्यात्मिक शक्ति का विकास कर सकेंगे, उतने-उतने अंशों में हमारे अन्दर 'क्षमा' करने की शक्ति विकसित होती जायेगी।

अपने जीवन को बिना किसी दुर्भावना और तनाव के अच्छे ढंग से जीने पर विरोधी का भी हृदय द्रवित हो जाता है। यदि दुर्भावना और तनाव रूपी कष्ट स्वयं में जारी रहे, तो समझिये हम अपनी नहीं, अपितु विरोधी की जीत सुनिश्चित कर रहे हैं।

'क्षमा' करने-कराने सम्बन्धी विषय पर कुछ शोधकर्ताओं ने अनुसंधान किया है, किन्तु निष्कर्ष रूप में उन्होंने क्षमा की व्याख्या आम धारणा से बिल्कुल अलग पायी। उन्होंने पाया कि लोग अक्सर दोष मुक्त करने या होने के बाद इस भावना से ग्रस्त हो जाते हैं कि-''अब हमें उससे क्या लेना-देना? यानी इस स्थिति में वे माफी को नाराजगी में बदलने की स्थिति बना देते हैं। जबकि मनोवैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टि से क्षमा का मतलब है, जिसने आपको तकलीफ पहुँचाई है, उसके प्रति दुर्भावना से बाहर निकलना। यह आंतरिक प्रतिक्रिया है, जो बिना किसी शर्त पर की जाती है। क्षमा करने वाले को इससे जो आत्मसंतोष होता है, वह उसके लिए एक बहुमूल्य उपहार होता है। क्योंकि क्षमाशील होना अपनी आत्मा को साधने की यात्रा है।

वस्तुतः 'क्षमा' को हमें अपनी विरासत का हिस्सा बनाना आवश्यक है और इसका प्रशिक्षण भी हमें अपने परिवार से ही प्रारम्भ करना श्रेयस्कर होगा। जब परिवार में हमारे बड़े-बुजुर्ग एक-दूसरे को माफ करते हैं, तो बच्चों में भी इस संसार के बीजों का वपन शुरू

हो जाता है। क्योंकि बच्चों में अनुकरण की प्रवृत्ति अधिक होती है और ऐसे परिवार के संस्कारी बच्चों के सद्संस्कारों का लाभ परिवार, समाज और राष्ट्र को तो मिलता ही है और वे अन्यों को भी एक आदर्श नागरिक बना देते हैं। क्षमा से प्राप्त हमारी यह सहिष्णुता, विनम्रता, एक-दूसरे के साथ जीना और क्रोध पर नियन्त्रण करना सिखाती है। इससे हम अपने मन, शरीर और वाणी पर भी संयम रखना सीख जाते हैं। ये गुण बड़ी कठिनाई और निरन्तर अभ्यास से उत्पन्न होते हैं। किसी कवि ने कहा भी है-

''मत समझाओ मुझे जन्म-मृत्यु का शास्त्र।
मुझे समझा दो बस क्षमा करने और माँगने का शास्त्र।।''

''आज तक जो भी हुआ, उसको भुला देना है।
आज से तय है, दुश्मनों को भी दुआ देना है।।''

इस प्रकार के चिन्तन से हमारी मानसिकता क्षमा के लिए तैयार हो सकती है। प्रतिशोध, क्रोध और नफ़रत आदि के विचारों और भावों को कम या समाप्त करना आवश्यक है। इसके लिए स्वाध्याय, प्रार्थना, ध्यान आदि शुभ प्रवृत्तियों में मन को अधिकाधिक प्रवृत्त रखना चाहिए। सकारात्मक सोच बनानी चाहिए। किसी से अधिक अपेक्षायें नहीं पालनी चाहिए।

प्रतिशोध की भावना हेतु हमें अपने अंदर गुस्से की आग जलाये रखने से हृदय सम्बन्धी तथा कई प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं। इतना ही नहीं, जो दूसरों की गलतियों का बोझ अपने अन्दर ढोते रहते हैं, उन्हें माफ नहीं करते या भुलाते नहीं, उनमें तनाव, रक्तचाप, हृदय रोग तो बढ़ते ही हैं, साथ ही उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो जाती है।

मनोवैज्ञानिक तो यहाँ तक कहते हैं कि क्षमा न करने से व्यक्ति तनावग्रस्त रहता है, उसके अति आवश्यक हार्मोन उत्पादन की प्रक्रिया नष्ट होती है। छोटी-छोटी बीमारियों से लड़ने वाली कोशिकाओं को बाधा पहुँचती है। जिन लोगों के आपसी रिश्ते अच्छे नहीं रहते, उनमें कार्टिसोल हार्मोन का स्तर ज्यादा पाया जाता है। इससे तनाव बढ़ता है और क्षमा करने की अभिरुचि समाप्त हो जाती है।

क्षमा न करना नकारात्मक भावना की स्थिति है। इससे मानसिक विकार तो पैदा होते ही हैं, ईर्ष्या और मनमुटावों की स्थिति व्यक्ति को धीरे-धीरे अवसाद और निराशा के घेरे में घेर लेती है। इनकी जगह क्षमा के प्रयोग से वह इन बुराइयों के बोझ से रहित होकर हृदय में सदा समता और आनन्द की अनुभूति कर सकता है। मनोवैज्ञानिकों ने शोध करते समय

कुछ लोगों से उन व्यक्तियों को याद करने हेतु कहा, जिन्होंने उनके मन को ठेस पहुँचाई थी। ऐसे लोगों को याद करते समय उनमें रक्तचाप बढ़ने, दिल की धड़कन तेज होने, चेहरे की मांसपेशियों में तनाव और हाथ-पैरों में पसीना आने की प्रतिक्रिया हुई। उनमें गुस्सा, दुःख, बेचैनी और अनियंत्रण जैसी अनेक प्रतिक्रियाएँ भी उभरीं, लोगों को उन स्मृतियों को याद करना, कुल-मिलाकर पीड़ादायक रहा।

दूसरी ओर फिर उन्हीं लोगों को अपने अपराधियों के प्रति सहानुभूति रखने और उन्हें माफ करने की कोशिश करने के लिए कहा गया और उन्होंने उन्हें क्षमा करने के विषय में मन बनाने की कोशिश की तो उनकी शारीरिक उग्रता में कमी आई और तनाव से भी राहत मिली।

इसीलिए कभी भूलकर भी नफ़रत इतनी नहीं बढ़ानी चाहिए कि वह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर असर डाले और उस नफ़रत के बीच हमारे बच्चे हमसे पूछें कि प्यार कैसा और क्या होता है? उनका बालमन तो स्नेह, करुणा, वात्सल्य, प्रेम आदि अच्छी बातों के लिए सदा उत्सुक रहता है। अतः यदि हम आत्मकल्याण के साथ ही अपने इस संसार में स्वयं आनन्द प्राप्त करना और दूसरों को आनन्द देना चाहते हैं तो हमें अपने और बच्चों के अन्तःकरण को एवं सम्पूर्ण बाह्य वातावरण को क्षमा गुण से गुंजायमान करना होगा। तभी उन बच्चों में एक आदर्श मानव बनने के गुणों का विकास होगा-

गुस्सा करना हमें न आता, सबसे प्यार करेंगे हम।
हँसी-खुशी के फूलों से सारा संसार भरेंगे हम।।

हम सभी यही कामना इस उत्तम क्षमा धर्म और क्षमावाणी पर्व पर करें-

मैत्री भाव जगत् में मेरा सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे।।

अन्त में कवयित्री पुष्पा राही की इन पंक्तियों के साथ हम अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देकर अपनी लेखनी को विराम देते हैं-

दुआ-सलाम सभी से है वैसे तो अपनी,
पर कुछ ऐसे भी हैं, जिनसे लड़े हुए हैं।
हम तो हँसकर उड़ा दिया करते थे गुस्सा,
उनसे पूछो वो क्यों इतने अड़े हुए हैं।।

-अतिथि प्राध्यापिका, जैनदर्शन विभाग,
सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

English-Section

Social Relevance of Caturviṁśati Stava (Hymn in Praise of the 24 Tīrthaṅkaras)

Dr. Samani Shashi Pragya

Euology is the very essence of all religions. Stuti or euology is nothing but the proper accommodation of the group of words in the praise of deity. In the prayer of *caturviṁśati stava*, there are seven verses in which the veneration to 24 *tīrthaṅkaras* is given which is considered tantamount to the mantra in Jainism.[1]

Meaning of Caturviṁśati Stava

There are seven stanzas in *caturviṁśatistava.* In the first stanza there is a resolve to euologize *tīrthaṅkaras.* The meaning of first stanza is : I praise and worship the 24 *jinas*, the omniscient, the arihants. You have enlightened the entire universe and established the four fold *Jain Sangha.* In next three stanzas, 24 *jinas* names of Rishabha etc. are quoted. The meaning of the fifth stanza is[2]: oh jina! you have shed the impurities of kārmic particles, and thus you are free from old age and death : I praise all of your virtues and worship you. Please bestow upon me the sense to attain perfect knowledge. which shall lead to ultimate liberation. The meaning of the sixth stanza is : You have achieved this liberation and therefore, the entire universe praises you and offers obeisance to you. Please bestow upon me perfect spiritual health, right faith and the highest state of tranquility. The meaning of last stanza is : oh jina! you are purer than the moons, brighter than the suns and, more serene and deeper than the oceans. oh siddha! please bestow upon me the ultimate salvation.[3] The veneration of the twenty four tīrthaṅkaras is called caturviṁśati stava, a recital in veneration of the twenty four tīrthaṅkaras of each age, with the intention to develop their faith and virtues in ones own self.

Stuti, in Jainism, is the expression of sincere devotion of the aspirant for the spiritual values he esteems most. *Stuti* is nothing but a praise, admiration. veneration and adoration of omniscient being for the ideals he represents. The purpose is to get inspiration and guidance from

the example of the worshipful, to get oneself purified mentally and spiritually by reciting and adoring the glorious attainments of the most glorious, and the will to achieve himself that ideal state one day. This is an unfailing and unflinching devotion to the divinity manifest in the ideal one.

Importance of Caturviṁśati stava

The first step of spiritual development is right faith as per umāsvati.[4] When Gautam asked Mahāvīra- what does one achieve by the veneration to jinas? Mahāvīra replied that "by paying obeisance to the twenty four jinas, the soul attains purity of faith i.e. *Samyak Darśana.*[5] Through the devotional recitation of *stava,* the deluded *karmās* can be eliminated and self-purification can be attained.[6] The greatest outcome of *stuti* is guṇa saṅkramaṇa i.e. the virtues of Jina are gradually acquired by the self.[7]

Social Relevance of Euology (Stuti)

Auspicious Contemplation and Stuti

Stuti is a form of *dharma dhyāna,* the auspicious contemplation. It is a healthy practice in which all the faculties of the worshipper, mind, speech and body, function in unison. One engaged in worship is free from the *ārtta* and *raudra* types of dhyana, the inauspicious and harmful brooding, worries, anxieties, and passionate feelings. *Sturt* is thus, an act of selfless devotion, done with joy, cheerfulness and due humility, and as a result the worshipper earns merit (puṇya) and destroys demerit (*pāpa*). So the sincere performer of *stuti* doesn't believe in prayers for asking boons, favours, the fulfillment of some worldly desire or warding off some danger, disease, trouble or loss, simply because no power is capable of answering them. On the other hand the prayers in return for happiness impair ones self-confidence, weaken ones will-power and tend to shift the responsibility of his actions to some other agency. He becomes supplicatory, complaining, clinging and whimpering, and begins to suffer from a sort of inferiority complex. So *stuti* in Jainism is selfless devotion. Through such devotion one doesn't merely loose the distance between himself and the goal, but gradually realizes oneness with the goal itself.

Guṇa Saṁkramaṇa and Stuti

The greatest outcome of *stuti* is guṇa *saṁkramaṇa.* It means

eulogizer seeks the entire virtues and power of the deity, to whom he prays.[8] Complete faith and dedication towards the deity is essential for an accomplishment of the such a high state. Mahātmā Gandhi said, "There is indefinable mysterious power that pervades everything. I feel it though I do not see it."[9] A person of high aspiration having faith in scriptures, *sadguru* and God, surrenders himself to the spiritual preceptor and finally attains self-realization. It is well explained in Jain canonical literature that if one wants to be powerful, then he/she should pray and be one with the picture of Bāhubali. If one wants to attain mental equanimity in all the situations, he/she should pray with full devotion, keeping the picture of mahāvīra in mind, one can attain the very same virtue within by *stuti.* Guṇa saṅkramaṇa can be well illustrated with a wasp that changes a worm into another wasp. Wasps generally take a worm to their place and sting. The worm constantly thinks of the wasp due to the pain of the sting. When the pain is about to subside, the wasp once again stings the worm. This process continues until the worm, on constant thoughts about the wasp, gets transformed into one. whether the story is scientifically valid or not, it clearly restates that " you' are, what 'you' think". Even Māntuṅgācārya in his work Bhaktāmara stotra rightly sings that if one doesn't make the devotee worshiping him/her like him/her, then is there any significance in (Ṛshabh) worship.[10] Euology of tīrthaṅkara awakens valor in the soul, that each person can attain the state of Godhood from the state of devotee. It is similarly like becoming a big river from a drop and the sun from a ray.

Healing Mechanism and Stuti

Sometimes, things happen to be a miracle. There are some cases. where the medical science fails in curing the disease, there works the significance of prayer. Science may never have all the answers about the power of prayer. James E. Sweaney writes, "There is power in prayer, your mind is linked with God, the source of all power. Your thoughts, your desires, your efforts can be unified in prayer with the will of God."[11] Individuals have to learn to grow more tolerant of ambiguity and life's mysteries. It is interesting that many scientific studies have been conducted to validate this observation. Dr. J. Jerome[12] Stowell, while making an experiment in a pathological laboratory to find the wave length

of a brain, discovered that a woman in communication with God, had registered more than fifty five times the power used by a 50 killowatts broadcasting station in sending a message around the world. It was a positive proof to suggest that man in communion with God releases a power unequalled by instrumentation. Recently, Kenneth A. carlson, who suffered from heart attack was healed through prayer and belief in God. His doctor said to him, "Your recovery is a miracle. You are not here because of any genius of medical science but because of the power than either one of us."[13]

Moreover Larry Dorsey, M.D. Perhaps the world's most vocal expert on prayer and medicine says, "Prayer showed its effect on everything from seed germination to wound healing. It also operates as strongly on the other side of the earth as it does at bed side. *Stuti* helps in reducing the risks or effects of high blood pressure, heals heart attack and headaches. The immune system is strengthened and nourished by a sense of peace and calmness. A recent scientific study shows that prayer can be used as an alternative therapy as successfully as meditation, yoga or herbalist. Gandhi said, prayer is the very core of man's life. So it is predicted that soon patients will be questioned about not only their medical history but also their belief system.[14] Not only physical ailments are cured through stuti but psychological and emotional problems also can be solved. *Stuti* or euology acts like a shock absorber and can easily free us from worries, tension and depression. Suppressed negative emotions in the subconscious mind are the root cause of all our mental and physical troubles. We can sublimate them through *stuti.* The stuti systematically replace negative thoughts with positive and divine ones, leading to purity, strength, courage and ultimately changes the character of the person. It is our feeling that gives our prayers the power and helps in bringing about the desired consequences. A prayerful attitude arrests the aimless wandering of the mind and helps us concentrate our mind on things at hand. Love added to prayer increases its power. The intrinsic faith in prayer has the capacity to spark major personal enrichment in every area of life.

Elimination of Obstacles through Stuti

In all the Indian traditions the recitation of euology is practised. Although Jains don't believe in prayers where the mind is with full of

material expectations. A lot of texts were written on euology by Jain ācāryas in warding off some danger. Jain literature expounds various examples in this regard. Māntuṅgācārya wrote and recited *Bhaktāmara stotra* with complete devotion in the euology of tīrthankara Ādinātha or Ṛṣabha, atonce shackles of chain were broken which were tied from head to toe of his body. Moreover there were 48 gates in the prison where he was kept. Due to effective dedication and recitation of 48 stanzas, one by one all the gates are opened successively and automatically.[15] Even ācārya Siddhasena wrote and recited *Kalyāna Maṅdira stotra* in the euology of *Tīrthaṅkara Parsava.*[16] Ācārya Samantabhadra has written *Svayaṁbhu stotra* when the king Shivakoti was asked to bow before the idol of Lord *Śiva.* Even a poisonous snake's venom was washed away through the recitation of Viṣāpahāra stotra by Dhanañjaya's son. Ācārya Bhadrabāhu wrote *Uvassaggahara stotra* during the obstacles. His euology or *stuti* is a living faith towards the omniscient being. The vibrations of stuti changes the entire situation and devotee experiences himself above the obstacles.

Elimination of Harmful Karma

During the time of dedicated stuti, one praises the virtues of Jina i.e. you possess infinite knowledge, intuition, bliss and power, this recitation purifies his psyche and thereby destroys ones already bound harmful karmas.[17] Through stuti, one attains the unique spiritual state i.e. samayak darśana. This achievement occurs due to the destruction of seven karma prakṛti (seven types of sub-divisions of karma), which inturn is the signal of limited life and death in this mundane world. The devotee who keeps oneself in stuti, *māntuṅgācārya* says shed off the *karmas* and limits the worldly wanderings.[18] If there is no faith in *stuti* it will never be fruitful. The ultimate goal of all the Indian philosophies except the cārvāka philosophy is attainment of salvation.[19] The path of achieving the ultimate end are many in number, but the goal is one and the same. Both the Jain philosophy and the Vedānta philosophy agree about the outcome of *stuti,* right faith as the material cause for the attainment of liberation. On the other hand, the person who disregards the *tīrthankaras,* their scriptures, religious order, and doctrines binds the inflow of faith-deluding *karmās* and keeps on wandering in the empirical world of life and death.[20]

Thus stuti as prayer with devotion is accepted by all theistic religions as the powerful and efficacious means of God-realization. Prayer renders spiritual as well as mundane fruit. Attainment of Bhakti or love of the lord is the highest fruit of *stuti*. According to *skandha purāṇa stuti* opens the gate of final liberation. The secondary rewards of *stuti* are peace of mind, avoidance of obstacles, advancement and guidance in the spiritual path, awakening of knowledge, healing of disease, fulfillment of mundane wants, and relief from distress and sorrow.[21]

Reference:

1. Mahāprajña, Jain Dharma Ke Sādhanā Sūtra, p. 141.
2. Navasūttaṇi. Ed. YuvĀcārya Mahāprajña, p. 5.
3. Pratikramaṇa : A Guide Book, Ladnun : Jain Vishva Bharati.2007, p. 31-32.
4. Tattvārtha Sūtra, 1.1
5. Uttarādhyayana Sūtra, 29.9
6. Mahāprajña. Jain Dharma ke sādhanā Sūtra, p. 147.
7. Ibid, 139.
8. Ācārya Mahāprajña. Anuvrata ke Āloka mein: Churu : Adarsha Sāhitya Sangh. 1986, p. 86, yogi dehe tathā-dhyānāt jāyate guna saṃkramanah.
9. Chaganlal. Philosophy of Bhakti : Delhi: D.K. Publishers. 1989, p.118.
10. Bhaktamara Stotra of Mānatuṅgācārya. verse, 9.
11. Mīrā Journal. June. 1966, p. 133.
12. Ibid. August. 1979, p. 107.
13. Ibid. May, 1968, p. 403.
14. You Can Change the world. Feb. 2004, p.7
1- Bhaktāmara Stotra of Māntuṅgācārya. Ratlam : Jñānodaya Pustak Prakāśana Samiti. 1937. verse 46.
16. Kalyāna Mandira Stotra of Siddhasena Divākar. Bombay : Narendra Kumar Devendra Kumar. 1961. verse 48.
17. Svayambhu Stotra of Samanta Bhadra. Ed. by Pannālalji, Sanskrit commentary by Prabhā Chandrācārya. Shri Mahaviraji : Shri Shanti vira Digambara Jain Saṁsthan. v.s. 2495, verse 18.20.
18. Bhaktāınara Stotra of Māntuṅgācārya, op. cit, verse 9.
19. Dutta and Chatterjee. Bhāratīya Darśana (Indian Philosophy). Patna : Pustak Bhandar. 1994, p.25.
20. Sarvārthasiddhi of Siddhasena, 6.13.
21. Chhaganlal Lala. Philosophy of Bhakti, p.128.

-Asstt. Prof. in Deptt. of Jainology Comparative Philosophy & Religion, Jain Vishva Bharati University, Ladnun-341306 (Raj.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (17)

आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।**-सम्पादक**

यश,

सारग्राही बने रहना
यह बहुत बड़ी चुनौती है पर फिर भी
इस चुनौती को स्वीकार किये बिना संबंधों में मधुरता
बनाये रखने में सफलता मिलना असंभव है।
वास्तव में तुम सारग्राही बने रहना चाहते हो तो
तीन बातों में बिल्कुल स्पष्ट हो जाओ।
अधैर्य का शिकार मत बनना,
सामने वाले के अभिप्राय को बहुत प्रधानता मत देना और
हो रहे अन्याय के विचार से तुम्हारे चित्त को व्यग्र मत बनने देना।
तुम जो परिणाम देखना चाहते थे
वह तुम्हें नहीं दिखाई दिया और अधैर्य का शिकार बन
तुम आवेश में आ गए।
सामने वाले व्यक्ति के व्यवहार के बारे में तुम्हारे सामने किसी ने मिर्च-मसाला
डालकर अपना अभिप्राय व्यक्त किया और उस अभिप्राय को
सत्य मानकर उस व्यक्ति के लिए तुमने अपने मन में
गलत धारणा पैदा कर ली।
सामने वाले व्यक्ति से तुम पर अन्याय हुआ,
तुम्हारे हिस्से में कम पैसे आए।
तुम्हारी सुविधा का कम ध्यान रखा गया।

तुम्हारे सत्य विचार की किसी ने उपेक्षा की।
और यदि इन बातों को तुमने अपने मन में बहुत प्रधानता दी-
"यदि मैं ऐसे दबकर ही रहूँगा तो
मुझे घर में हमेशा दबकर ही रहना पड़ेगा।
भाई उम्र में मुझसे बड़े हैं
इसका अर्थ यह तो नहीं कि वे मुझ पर अन्याय ही करते रहें।
भाभी इस घर में मेरी पत्नी से पहले आई हैं
इसका अर्थ यह तो नहीं कि मेरी पत्नी पर हुकुम चलाने का
उनको अधिकार मिल गया है।
बड़े भैया के बेटे हैं
इसका अर्थ यह तो नहीं कि वे मेरे बेटों को जब चाहे रुलाते रहें, दबाते रहें।"
यदि ऐसे विचारों ने तुम्हारे मन पर अधिकार जमा लिया है तो
मैं विश्वास के साथ तुम्हें कहता हूँ कि
तुम संबंधों में मधुरता बनाए रखने में सफल नहीं हो सकोगे।
तुम्हारे बड़े भैया द्वारा किया हुआ एक भी उपकार
तुम्हें उस वक्त याद नहीं आएगा।
तुम्हारी पत्नी की लम्बी बीमारी में तुम्हारी भाभी की
रात को जाग-जागकर की हुई सेवा तुम्हें याद नहीं आयेगी।
बड़े भैया के बच्चों द्वारा वार-त्यौहार तुम्हारे बच्चों को
दिये हुए चॉकलेट-बिस्कुट-खिलौने वगैरह कुछ भी तुम्हें याद नहीं आयेंगे।
इसका अर्थ यही है कि
तुम सारग्राही बनने में गलती कर बैठे हो।

नकारात्मक,
आवेशात्मक और
दोषदर्शनात्मक मान्यता ने तुम्हें उनमें
अच्छा, शुभ और सुंदर कुछ भी देखने ही नहीं दिया
और महा-पुरुषार्थ से मधुर बने संबंधों को तुम
कटु विष बना बैठे।

क्या पढ़ी है तुमने किसी कवि की ये पंक्तियाँ?

"इत्र की एक-एक बूँद में फूल शहीद होते देखे।
छोटे-से एक-एक बीज में वटवृक्ष कई सोते देखे।
स्नेहभरी छोटी आँखों में, सुंदरता के मेले देखे।
कटु वचन की एक ठोकर से, दिल के काँच टूटते देखे।
बुज़दिल के एक फीके हास्य से, आँसू लाख स्थिर देखे।
संदेह के किसी विष घूंट में, दीर्घ प्रेम मरते देखे
आश के कच्चे धागे से, जीवन कई झुकते देखे।
आश तजकर अवधूत बने, मस्त फकीर विरले देखे।"

तुम्हें यही कहूँगा कि कीचड़ में उगे कमल को देखने के लिए सक्षम दृष्टि के
तुम स्वामी हो, तो असार में रहे सार को ग्रहण करने वाली वृत्ति के
स्वामी भी तुम बन ही जाओ। सफल हो जाओगे।

महाराज साहब,

सत्यनिष्ठ और सावधान बने रहने से भी सारग्राही
बने रहना अधिक कठिन होगा ऐसा मुझे लगता है।
क्योंकि, अन्याय हो रहा है यह आँखों से देखने पर भी
उसकी परवाह किये बिना उसमें से भी सार को ही
ग्रहण करते रहने की बात मोम के दाँतों से लोहे के चने चबाने जैसी कठिन है।
आपसे एक बात पूछूँ?

मैंने ऐसा सुना है कि अन्याय करना जैसे अपराध है
वैसे ही अन्याय सहन करना भी अपराध है।
यदि यह बात सही है तो हम पर हो रहे अन्याय के समय भी
मौन रहकर अथवा हँसते रहकर उसमें से सार ही
ग्रहण करते रहने की बात कितनी उपयुक्त मानी जायेगी?

यश,

हो रहे प्रत्येक अन्याय के विरुद्ध यदि लड़ते ही रहना है,
ईंट का जवाब यदि पत्थर से ही देना है,
खून का बदला यदि खून से ही लेना है,
अपशब्दों का जवाब यदि अपशब्दों से ही देना है

आग के सामने यदि आग ही बनना है तो
क्षमा, प्रेम, स्नेह, वात्सल्य आदि शब्दों को हमें केवल शब्दकोश में ही रखना होगा। जीवन में उनका उपयोग करने की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी।
और एक अन्य विषय की बात तुम्हें पूछूँ?
पूरे दिन के दौरान जिन जीवों ने तुम्हारे प्रति कोई अपराध नहीं किया
उन जीवों को भी तुम कितनी पीड़ा दे रहे हो यह बात तुमने कभी सोची भी है?
रविवार की शाम तुम गाड़ी लेकर घूमने निकल पड़ते हो
और रास्ते पर घूम रहे सैंकड़ों नहीं बल्कि हजारों चींटी-मकोडे आदि को
तुम बेरहमी से कुचल डालते हो।
मैच देखने एवं कॉमेन्ट्री सुनने का तुम्हें बेहद शौक है।
उस शौक को पूरा करने के लिए तुम तुम्हारे मित्रों के साथ टी.वी. देखने बैठे हो। मैच के दौरान तुम लोग हो....हल्ला कर रहे हो
और तुम लोगों की इस आवाज से पड़ोस के घर में एक बीमार वृद्ध को पीड़ा हो रही हो।
अपने बंगले की शोभा बढ़ाने के लिए लगाई हुई 'लॉन' को
अच्छी और आकर्षक रखने के लिए तुम्हारे ही निर्देश से
माली बार-बार उस हरियाली पर मशीन घुमा रहा है।
बंगले के इर्द-गिर्द घूम रहे कुत्तों की आवाज से
परेशान बन तुमने म्युनिसिपलिटी में शिकायत की
और तुम्हारी इस शिकायत से म्युनिसिपलिटी के
आदमी गाड़ी लेकर आते हैं, कुत्तों को पकड़कर ले जाते हैं
और उन सबको इलेक्ट्रिक 'शॉक' देकर मार डालते हैं।
अरब देशों से जो पेट्रोल आता है उस पेट्रोल के बदले में
उन देशों में गाय आदि का मांस भेजना पड़ता है।
तुम्हारे शौक की खातिर तुम जो साबुन इस्तेमाल कर रहे हो
जिस टूथपेस्ट का उपयोग कर रहे हो, रौब जमाने के लिए जिन जूतों का इस्तेमाल कर रहे हो उन सभी के उत्पादन में न जाने कितने जीवों की आह दबी हुई है।
अमीरी के गुमान में तुम चलते-फिरते जो पार्टियाँ दे रहे हो

उन पार्टियों में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक के गिलास
रास्ते पर ही पड़े रहते हैं, वे गाय आदि के पेट में जाते हैं।
और वे सभी गाय परलोक में पहुँच जाती हैं।
मैं तुम्हें ही पूछता हूँ।
क्या अधिकार था तुम्हें इन सभी जीवों को परलोक में पहुँचा देने का?
क्या बिगाड़ा था उन जीवों ने तुम्हारा? अरे,
वे जीव यदि कुदरत के पास न्याय मांगे और
कुदरत की ओर से उन्हें न्याय दिया जाए तो क्या तुम्हें लगता है कि
तुम जिंदा भी रह सकोगे?
यश, तुम्हारे जीवन को 'खुशियों' से भरा हुआ रखने के लिए
तुम निर्दोष जीवों का बेरहम-कत्ल कर सकते हो
पर किसी की ओर से थोड़ा-सा भी अन्याय हो जाये तो
उनके विरुद्ध लड़ने के लिए तुम तलवार निकाल लेते हो?
तुम्हें कुछ लाज-शर्म है या नहीं।

मत भूलो जिनवाणी को

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

धन, दौलत के पीछे पड़कर, मत भूलो जिनवाणी को।
निज का गर कल्याण चाहते, याद रखो प्रभु वाणी को।।

धन वैभव तो मिलता समझो, सिर्फ हमें पुण्यवानी से,
बात समझ में नहीं आवे तो, पूछो किसी भी ज्ञानी से।
समाधान पा जाओगे, तुम छोड़ोगे मनमानी को।।1।।

जिनवाणी के ही प्रताप से, सुख-सुविधाएं मिलती हैं,
जिनवाणी सुमिरण करने से, पुण्य की क्यारी खिलती है।
दुर्लभ मानव भव पाया है, मत भूलो जिन्दगानी को।।2।।

धन-दौलत में रहे दीवाने, धर्म नहीं कर पाओगे,
शांति, समाधि पाने को फिर, तरस-तरस रह जाओगे।
ज्ञान की आंखें खोल बावरे, दूर करो हैरानी को।।3।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

गीत

नव इतिहास रचाता है!

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

जो जग को मुस्कान बाँटता आँसू खुद पी जाता है।
वो ही मानव इस दुनिया में नव इतिहास रचाता है।।

भौतिकता की चकाचौंध ने सुसंस्कृति को मारा है।
राग-द्वेष के दावानल से धधक रहा जग सारा है।
आज तिरोहित हुई शांति है हाय-हार हर ओर बढ़ी,
त्याग-प्रेम ने आज विश्व से लगता किया किनारा है।

औरों के हित दया-भाव के जो भी सुमन खिलाता है।
वो ही मानव इस दुनिया में नव इतिहास रचाता है।।

भेदभाव शोषण उत्पीड़न सज्जनता के भक्षक हैं।
मानवता के हैं वे दुश्मन जो इनके संरक्षक हैं।
वातावरण घिनौना इतना देख-देख मन घबराता
जो भी पहरेदार बनाये बने वही विध्वंसक हैं।

जग उसकी करता है पूजा जो अमृत छलकाता है।
वो ही मानव इस दुनिया में नव इतिहास रचाता है।।

अन्याय, अनीति दूर करे वो प्यार सभी का पाता है।
जग उसका अनुगामी बनकर जीवन सफल बनाता है।
वर्धमान-से महल त्याग कर जो भी वन में निकल गये-
वो ही नर मानव के मन में अपना महल चुनाता है।

'मुनि गणेश' जो खुद जलकर के उजियाले को लाता है।
वो ही मानव इस दुनिया में नव इतिहास रचाता है।।

-अम्बा गुरु शोध संस्थान, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 75)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(स्नातक)

जिज्ञासा– स्नातक किसे कहते हैं?

समाधान– पाँच प्रकार के निर्ग्रन्थों में अन्तिम भेद स्नातक है।

जिन्होंने ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय इन चार घाति कर्मों का समूल नाश कर दिया है, जो आत्मिक दृष्टि से पूर्णतः शुद्ध एवं सर्वज्ञ बन चुके हैं, वे 'स्नातक' कहलाते हैं।

जिज्ञासा– स्नातक के कितने भेद बतलाये गये हैं?

समाधान– भगवतीसूत्र शतक 25 उद्देशक 6 में स्नातक के पाँच भेद इस प्रकार बतलाये गये हैं–

1. **अच्छवि**– छवि अर्थात् शरीर। जिनमें शरीरभाव लेश मात्र भी न रहे। दूसरे शब्दों में स्नातक जब तेरहवें गुणस्थान में काय योग का निरोध कर देते है, तब वे 'अच्छवि' कहलाते है। इसका दूसरा नाम अक्षपी भी है, अर्थात्- घातिकर्म चतुष्टय के क्षपण के बाद, क्षपण शेष न रहने से वे 'अक्षपी' कहलाते हैं।

2. **अशबल**– एकान्त विशुद्ध चारित्र वाले अर्थात् जिनमें अतिचारों का पंक बिल्कुल भी न हो, वे 'अशबल' हैं।

3. **अकर्मांश**– आत्मा के मूल गुणों की घात करने वाले घाति कर्मों का क्षय कर देने से 'अकर्मांश' कहलाते हैं।

4. **संशुद्ध**– विशुद्ध ज्ञान-दर्शन अर्थात् केवलज्ञान-केवलदर्शन के धारक होने से संशुद्ध हैं। कर्मशत्रुओं का विनाश कर देने से तथा पूजा के योग्य होने से 'अरिहन्त' हैं। कषायों के विजेता होने से 'जिन' तथा परिपूर्ण ज्ञान-दर्शन-चारित्र के स्वामी होने से 'केवली' कहलाते हैं।

5. **अपरिस्रावी**– सम्पूर्ण योगों का निरोध कर लेने पर स्नातक सर्वथा

निष्कम्प एवं क्रिया रहित हो जाते हैं। अतः उनके कर्म-बन्ध का प्रवाह सर्वथा रुक जाता है, इस कारण से वे 'अपरिस्रावी' कहलाते हैं।

जिज्ञासा- स्नातक की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं?

समाधान- 1. स्नातकों के घाति कर्मों का क्षय हो जाने से वे तेरहवें तथा चौदहवें इन दो गुणस्थानों में पाये जाते हैं।

2. योगों की प्रवृत्ति की अपेक्षा से स्नातक सयोगी तथा अयोगी दोनों प्रकार के होते हैं।

3. स्नातकों में किसी भी प्रकार की मोहजन्य विकार भावना नहीं होने से वे भाववेद की अपेक्षा क्षीणवेदी कहलाते हैं। द्रव्यवेद अर्थात् शारीरिक चिह्न की अपेक्षा स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी तथा नपुंसक वैदी हो सकते हैं।

4. मोहनीय कर्म का सम्पूर्ण क्षय हो जाने से वे क्षीण कषाय वीतरागी केवली कहलाते हैं।

5. स्नातकों में विशुद्ध यथाख्यात चारित्र पाया जाता है।

6. स्नातक कल्पातीत होते हैं। वे जिनकल्प, स्थविर कल्प की मर्यादा से ऊपर उठे हुए होते हैं। यद्यपि कल्प मर्यादा का पालन उनसे होता है, किन्तु फिर भी उनके लिए अनिवार्यता नहीं है।

7. स्नातक न तो मूल गुणों में दोष लगाते हैं और न ही उत्तरगुणों में दोष लगाते हैं। प्रति समय आत्मभाव में रमण करने के कारण वे अप्रतिसेवी कहलाते हैं।

8. स्नातक केवलज्ञानी होने के कारण श्रुतव्यतिरिक्त कहलाते हैं। अर्थात् उनके ज्ञान को श्रुत की सीमा में नहीं बान्धा जा सकता है। वे अनन्तज्ञान के धारक होते हैं। अनन्तकाल के भूत, भविष्य, वर्तमान को एक साथ सीधे आत्मा से प्रत्यक्ष एवं परिपूर्ण रूप से जानते हैं।

9. समिति गुप्ति के धारक एवं पालक विशुद्ध संयमी भी रत्नत्रय की निर्मल आराधना करके 'स्नातक' पद को प्राप्त कर सकते हैं।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कविता

नाम की भूख

श्री हनवन्तमल लोढ़ा

नाम-भूख सबसे बड़ी, सब भूखों की बाप,
सारे जग को नचाती और नाचती आप।
राजा, मंत्री, साधु, संत सब हैं इसके भूखे,
वकील, डॉक्टर, अफसर, इंजीनियर सब हैं इसके पीछे।
क्या अखबार, क्या पत्रकार, क्या कवि, लेखक और शायर
रूप, रुपया, रुतबा दिखाकर करते इसको 'हायर'।
इसके खातिर 'मय' भी पीते, मधुशाला भी जाते,
और क्लबों में जुए खेलते, खा पीकर इतराते।
नेता, अभिनेता, खेल, खिलाड़ी सबको इसकी परवाह,
यह सब जग है नाम का भूखा, सब चाहते वाह-वाह।
किसे प्रशंसा नहीं चाहिए हो साधु या संत?
इसके पीछे पोथे लिखते, लिखे ग्रंथ और पंथ।
नाम ही सबसे बड़ा सिद्ध है, शेष हैं इसके साधक,
युद्ध, गृहयुद्ध, विश्वयुद्ध छिड़ते, कोई नाम में बनता बाधक।
यह तो अंतिम मंजिल है, और बाकी सब हैं राहें,
इसके खातिर बंगले, मोटरें, किले महल भी चाहें।
मंदिर, मस्जिद, धर्म के झगड़े नाम के खातिर होते।
सर और धड़ भी कटवा लेते नाम को हंसते रोते,
नहीं दिखा मुझे कोई प्राणी, जो नाम का ना हो प्यासा,
वश न चले तो बात अलग है, करते सब ही आशा।
जानी,दानी, ज्ञानी, ध्यानी सब ही इसको मरते,
इसके खातिर रिश्वत, तिकड़म और खुशामद करते।
इसके खातिर भाषण, चाटन और होते उद्घाटन,
बड़े-बड़े हैं उत्सव होते बड़े-बड़े अभिनन्दन।
अमृत पीकर अमर हो जायें, अमर हो जाये नाम,
इसी हेतु देव-दानवों में हुआ सागर मंथन-संग्राम।

तन, मन, धन सब कुछ दे देते, पर चाहते हैं नाम,
नाम के खातिर कर लेते हैं, लोग कोई भी काम।
नाम के खातिर हो जाते हैं, लोग बड़े बदनाम,
और नाम खातिर दे देते, निज प्राण या जान।
पैदा होते पहली चिंता, क्या धरना है नाम?
नाम देवता सचमुच आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
लाख बात की एक बात है, नाम में सब है सार,
नाम के पीछे सब जग दौड़े, क्या दुश्मन क्या यार।
लाख दुःखों की एक दवा है, जग में बड़ा हो नाम,
मोक्ष, स्वर्ग भी इसी से मिलते, लेओ राम का नाम।
नाम से जग में बाजे बजते, नाम का बजता डंका,
नाम के खातिर बड़ों-बड़ों का जग में माथा ठनका।
नाम रामायण, नाम चालीसा और यह नाम पुराण,
सिर्फ आज ही अपना 'उपनाम', मैं धर लेता हूँ 'नाम'।

-सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

पर्युषण

जय जय जय जयकार पर्युषण, जय जय जय जयकार ।।टेर।।
स्वागत स्वागत पर्व तुम्हारा, लो अभिनन्दन आज हमारा।
वन्दन सौ सौ बार पर्युषण, जय.... ।।1।।
सब पर्वों का तू है राजा, तुझसे उन्नत जैन समाजा।
हम तुझ पर बलिहार पर्युषण, जय.... ।।2।।
तीर्थंकर भी तुम्हें मनाते, सुर नर किन्नर सब गुण गाते।
महिमा अपरम्पार पर्युषण, जय.... ।।3।।
सकल संघ की सेवा पल-पल, बहे शान्ति का झरना निर्मल।
पालें श्रुताचार पर्युषण, जय.... ।।4।।
चाहे त्रस हो स्थावर प्राणी, चाहे मित्र हो दुश्मन जानी।
आतम सम व्यवहार पर्युषण, जय.... ।।5।।
मैत्री का संदेश सुहाना, भूलो अपना और बेगाना।
सबसे प्रीत अपार पर्युषण, जय.... ।।6।।
आओ हम सब मिल आराधें, मैत्री भावना दृढ़तर साधें।
सफल करें त्यौहार पर्युषण, जय.... ।।7।।

नारी-स्तम्भ

इण्टरनेट की दुनिया में गुम बचपन को उबारना होगा

श्रीमती बीना जैन

वैज्ञानिक युग का प्रभाव आज भारतीय संस्कृति पर स्पष्टतया परिलक्षित हो रहा है। विशेषरूप से आज कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट की आभासी दुनिया परिवार, स्कूल व क्रीड़ा समूह जैसी प्राथमिक संस्थाओं की उपादेयता पर सवालिया निशान लगा रही है। वर्चुअल वर्ल्ड का यह सम्मोहन आज बच्चों तथा युवाओं को अपनी गिरफ्त में ले रहा है। पिछले दो दशकों से लगातार कम्प्यूटर व इण्टरनेट सूचनाओं की नई नेटवर्क सोसाइटी गढ़ी जा रही है। यह वह सोसाइटी है, जिसमें पारस्परिक संवाद के लिए दैहिक उपस्थिति आवश्यक नहीं है। निश्चित ही सूचनाओं के इस देहविहीन समाज में आमजन के समक्ष इन यक्ष प्रश्नों का उठना स्वाभाविक है कि इस इण्टरनेट उन्मुख नेटवर्क सोसाइटी में हमारे फेस टू फेस संवाद बनाने वाले रोल मॉडल दम क्यों तोड़ रहे हैं? क्यों यूटोपियन सीरियल, फेसबुक, ट्विटर एवं ऑरकुट जैसे वेबसाइट के सामने हमारे दिमाग को तरोताज़ा रखने वाली स्वस्थ क्रियाएँ हमारे प्रत्यक्ष सामाजिक-जीवन से नदारद हो रही हैं।

आज सूचनाओं के तकनीकी संवाद ने परिवार व उसकी सामूहिकता को विखण्डित कर बचपन को सबसे अधिक प्रभावित किया है। आज माँ-बाप को इतना समय नहीं है कि वे समाज का महत्त्व समझा सकें। आज बच्चों को सांस्कृतिक मूल्यों की सीख देने वाले परिवार एवं स्कूल बचपन से दूर हो रहे हैं। आज संचार माध्यम ही बच्चों के साथी बन रहे हैं। बच्चों के मनोरंजन दैहिक दुनिया से छिटक कर संचार माध्यमों की दुनिया तक सिमट रहे हैं, क्योंकि संयुक्त परिवारों के विघटन ने बच्चों को दादा-दादी, नाना-नानी की कहानियाँ सुनने से तो वंचित किया ही है, साथ ही माँ-बाप से सम्पर्क कम हो गया है। जब बच्चों की मौलिक आवश्यकताओं, प्यार, सुरक्षा व अनुशासन को ही पूरा करने में माँ-बाप अक्षम हैं, तो संस्कार कौन दे?

आज कम्प्यूटर, इण्टरनेट, वीडियो गेम, फिल्में एवं काल्पनिक उपन्यासों की वर्चुअल दुनिया ने बच्चों के स्वकेन्द्रित काल्पनिक, उत्तेजक एवं रोमांचक पक्ष को उजागर कर मानवीय संवेदना के पक्ष को गायब कर दिया है। बचपन का सही निवेश जीवनभर मानवीय संवेदनाओं को संभालकर रखता है।

वर्तमान का सच यह है कि बच्चों के जीवन में व्यसन के रूप में विकसित होने वाला

यह स्थायी भाव बालहिंसा के रूप में सामने आता है तो कभी आत्महत्या के रूप में। इण्टरनेट की दुनिया से आज इक्कीसवीं सदी के समाज में नेट से जुड़े नागरिकों का समाज बन रहा है। इस समाज में सहानुभूति, प्रेम, बंधुत्व व मानवीय संवेदनाओं का अभाव है। वर्तमान पीढ़ी में सफलता प्राप्त करने की उत्कट इच्छा तो है, पर असफल होने का धैर्य व संयम शून्यता की ओर है।

हाल में ग्रेटब्रिटेन के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि वहाँ माँ-बाप का बच्चों से संवाद इण्टरनेट के जरिए होता है तथा 11 से 14 वर्ष के चालीस फीसदी बच्चे मोबाइल फोन व कम्प्यूटर के माध्यम से अश्लील साहित्य एवं फोटो का आदान-प्रदान मित्रों में करते हैं। भारत में भी इण्टरनेट की आभासी दुनिया से युवा प्रभावित हैं। मुम्बई में कई इण्टरनेट एडिक्टेड क्लीनिक की शुरुआत भी हो गई है, जहाँ माँ-बाप अपने व्यसनी बच्चों को लेकर पहुँच रहे हैं। आज भारत इण्टरनेट प्रयोग करने के मामले में एशिया में तीसरा तथा विश्व में चौथा देश है। इण्टरनेट प्रयोग करने वाले 85 फीसदी आबादी 14 से 40 वर्ष के बीच है।

बच्चे हमारे समाज एवं राष्ट्र का भविष्य हैं। इनके बचपन के वात्सल्य, प्रेम, सहानुभूति के साथ उचित-अनुचित, सच-झूठ व हिंसा-अहिंसा के बीच के अन्तर के अच्छे भाव को जीवन में समाहित करने व गलत को जीवन से निकालने में प्राथमिक संस्थाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों के जीवन से आभासी रोमांच को घटाने के लिए आवश्यक है कि बच्चों के एकाकीपन, तनाव व कुंठा को कम करते हुए उन्हें रचनात्मक व दैहिक गतिविधियों में व्यस्त किया जाए। माता-पिता बच्चों के जज्बातों को समझें, उनसे निकट का संवाद स्थापित करें। विद्यालय में भी पठन-पाठन की क्रिया को प्रभावी बनाएँ, जिससे शिक्षकों का स्नेहिल व्यवहार उन्हें प्रभावित करे। आज वैश्विक समाज के बढ़ते बाजार से बचाव मुश्किल है, परन्तु बच्चों को प्रत्यक्ष संवाद का सार्थक साधन प्रदान करते हुए उनमें इण्टरनेट की आभासी दुनिया से उभारने वाले एकाकीपन और हिंसा व उत्तेजना के भावों को नियन्त्रित करना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए।

-के/15, ज्ञानसरोवर कॉलोनी, रामघाट रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.)

सूचना

जिनवाणी के जिन आजीवन-सदस्यों का स्वर्गगमन हो जाता है, उनके नाम पर जिनवाणी भेजना कार्यालय द्वारा बन्द कर दिया जाता है। अतः जिनवाणी की पुनः सदस्यता किसी अन्य नाम से ग्रहण की जा सकती है।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

तनाव तथा चिन्ता से मुक्ति कैसे?

श्री के.एस. गलुण्डिया (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

आधुनिक जीवन-प्रणाली में तनाव व चिंता से मुक्ति कैसे प्राप्त की जाए यह आज के मानव की मूलभूत समस्या है। जितनी आकांक्षाएँ, इच्छाएँ एवं महत्त्वाकाक्षाएँ बढ़ रही हैं उतनी ही चिंताएँ भी उत्पन्न हो रही हैं। किसी ने ठीक ही कहा है- "चिंता चिता समान, चिंता से चतुराई घटे, घटे रूप और रंग" चिता तो मुर्दे को एक बार जलाती है, लेकिन चिंता की उष्णता जीवित मनुष्य को चौबीस घंटे जलाती रहती है। जितनी चिन्ताएँ, उतनी ही चिताएँ एवं उतने ही फाँसी के फंदे।

चिंता का स्वरूप

यह सर्वविदित है कि चिंता का मुख्य कारण हमारी इच्छाएँ, अपेक्षाएँ एवं अधूरे अपूरित सपने हैं। जीवन में इनसे छुटकारा पाना मुश्किल है। बिना सपनों के, बिना महत्त्वाकांक्षा और इच्छाओं के हमारा विकास व हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति असम्भव है। यह कहना बहुत आसान है कि चिंता मत करो। चिंता के बिना कोई भी कार्य सम्भव नहीं है। यह कहना भी बहुत आसान है कि इच्छाओं पर नियंत्रण रखो, क्योंकि उनकी कभी पूर्ति नहीं हो सकती। किसी न किसी सीमा में इच्छाएँ भी रहेंगी, कुछ पूरी होंगी, कुछ अधूरी रहेंगी। जीवन का संघर्ष चलता रहेगा।

तनाव तथा चिंता का मुख्य कारण

हमारी इच्छाओं एवं कामनाओं के अलावा आधुनिक जीवन-प्रणाली भी तनाव एवं चिंता के लिए उत्तरदायी है। सूचना एवं इलेक्ट्रोनिक उपकरणों ने पूरी दुनिया को एक दूसरे के इतना नज़दीक ला दिया है कि वह गाँव में परिवर्तित हो गई है। मोबाइल, कम्प्यूटर व इंटरनेट, फेसबुक, टी.वी. एवं अन्य इलेक्ट्रोनिक संसाधनों ने जीवन-प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। दुनिया से नजदीकियाँ बढ़ गई हैं लेकिन परिवार से दूरिया बढ़ती जा रही हैं। मनुष्य एकाकी हो गया है। वह अपनी सुख सुविधाओं एवं साधन जुटाने में इतना व्यस्त रहता है कि परिवार, समाज एवं स्वस्थ गतिविधियों के लिए उसके पास समय नहीं है। सुख-समृद्धि की अंधी दौड़ एवं खण्डित व्यक्तित्व के कारण वह हमेशा तनाव व चिंता में रहता है। यही कारण है कि आजकल आत्महत्या, अपराध एवं कई प्रकार के रोग व डिप्रेशन से पीड़ितों की संख्या बढ़ती जा रही है।

कई वर्षों पहले वैज्ञानिक उपन्यासकार (Scientific Fiction Writer) एलडस हक्सले ने अपनी पुस्तक Brave New World एवं Brave New World Revisited में लिखा था कि जिस गति से वैज्ञानिक अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है उसे देखते हुए वह समय दूर नहीं है जब परिवार नाम की चिड़िया लुप्त हो जाएगी। यह केवल कल्पना मात्र है, लेकिन टूटते सम्बन्ध व बिखरते परिवार के रूप में कुछ परिणाम हमारे सामने आ चुके हैं।

तनाव एवं चिंता से मुक्ति पाने के कुछ उपाय

आज के युग में योग गुरु, मैनेजमेन्ट गुरु, ज्योतिषी, वास्तुविद् कथावाचक व अन्य प्रचारक जीवन-प्रणाली में परिवर्तन लाने व तनाव से मुक्ति पाने के उपाय बताते हैं। जगह-जगह जिम, योगा सेन्टर, प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र आदि पान और गुटखे की दुकानों की तरह खुल गए हैं। हजारों व्यक्ति वहाँ आते हैं कुछ समय तक उनकी बताई हुई जीवन प्रणाली का अनुसरण करते हैं, लेकिन जब वापस सामान्य जीवन में लौटते हैं तो सब भूल जाते हैं और पूर्ववत् चिंता व तनाव युक्त जीवन में संघर्ष करते हैं। आखिर क्या कारण है? सबकुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। लम्बी दौड़ के बाद भी वह अपने आपको वहीं खड़ा पाते हैं जहाँ से दौड़ प्रारम्भ की थी। शायद हमारे सोच में ही कुछ कमी है।

मनुष्य की प्रकृति है कि वह उसके पास जितना है उससे संतुष्ट नहीं होता है, उसका मूल्य नहीं समझता है और जो नहीं है वह उसको बहुत मूल्यवान लगता है। इस सोच में परिवर्तन लाना आवश्यक है। तनाव तथा चिन्ता से मुक्ति के कुछ उपाय इस प्रकार हैं-

1. **जो भी परिस्थिति है उसे स्वीकार करो-** जो जैसा है उसे स्वीकार करके जीने से जीवन का भार कम हो जाता है। रूस के प्रसिद्ध दार्शनिक लियो टोल्सटोय का कहना है- "मनुष्य सबसे अधिक यातना अपने विचारों से ही भोगता है।" किसी भी प्रतिकूलता का प्रतिकार अथवा तिरस्कार करने से वह घटती नहीं, अपितु कई गुना बढ़ जाती है। योगीश्वर श्री कृष्ण ने कितना सुन्दर कहा है-

   स्वयं ही अपना उद्धार करो,
   स्वयं ही स्वयं को नीचे मत गिराओ,
   क्योंकि हम स्वयं ही स्वयं के मित्र हैं,
   और स्वयं ही स्वयं के शत्रु। -भगवद्गीता 6.5

2. **धैर्य-** जीवन में धैर्य बहुत आवश्यक है। खण्डित मानसिकता एवं हर चीज को पाने की शीघ्रता मनुष्य को मानसिक एवं शारीरिक रूप से क्षीण करती है। धैर्य इतना हो कि

चलनी में भी बर्फ जम जाए। मनुष्य को कोई भी कार्य होने पर न तो ज्यादा हर्षित होना चाहिये और न, न होने पर दुःखी। समत्व व समभाव जीवन के पथरीले कंटीले पथ को आसान बना देते हैं। संत कबीर दासजी कहते हैं-

यह जग है कांटो की बाड़ी, देखी-देखी पग धरना।
आँखों देखिबाँ कानो सुनिबाँ, मुख से कुछ न कहना।।

3. **जीवन में योजनाबद्ध तरीके से चलो-** जीवन में नियम बना कर योजनाबद्ध तरीके से कार्य हर चीज को आसान बना देता है। किसी ने ठीक ही कहा है- Plan your work and then work on plan.
जो कार्य करने योग्य है उसे तुरंत करना चाहिये और जो कार्य प्रयास करने पर भी अधूरा रहता है तो उसकी पूर्णता के लिए यथोचित प्रयत्न करना चाहिए तथा वह कार्य अनावश्यक प्रतीत हो तो त्याग देना चाहिए।
भगवान महावीर ने भी कहा है- "**पुरिसा! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि।**"
पुरुष! स्वयं को अनुशासित कर। ऐसे तू दुःख से मुक्त होगा।

4. **कार्य में कुशलता-** किसी भी कार्य को करने के लिए पहले अपने को उसके योग्य बनायें ताकि उसे कुशलता से कर सकें। उसके पश्चात् उसे करने के लिए आवश्यक संसाधन जुटाएं। तत्पश्चात् पुरुषार्थ और परिश्रम आवश्यक है। इससे सफलता तो मिलेगी ही साथ ही हर्ष और शोक से मुक्त रहेंगे। अनासक्त भाव यदि रहेगा तो मन की शांति बनी रहेगी एवं उत्तेजना, चिंता व तनाव कम होगा।
अपने अहं को जितना नियंत्रित रखेंगे उतनी आत्मिक एवं मानसिक ऊर्जा व शक्ति का आभास होगा एवं हीन भावना उत्पन्न नहीं होगी।

5. **मानसिक संतुलन-** अंत में अपना मानसिक संतुलन बनाकर चलना आवश्यक है। जैसे नट और नटनी रस्सी पर लाठी से संतुलन बना कर तालाब को पार कर जाते हैं वैसे ही जीवन में यदि कार्य की डोरी पर विवेक से संतुलन बनाकर चला जाए तो संसार सागर से पार हो सकते हैं।

आधुनिक जीवन प्रणाली व भौतिकता की अंधी दौड़ हमको शांति से अशांति की ओर, सरलता व सादगी से विषमता और विलासिता की ओर, संतोष व समत्व से असंतोष व आसक्ति की ओर ले जा रही है। इससे मुक्ति पाने का एक ही तरीका है कि हम भौतिकवाद से आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हों। आधुनिक जीवन-प्रणाली एवं

भौतिकवाद से जो फायदे हुए हैं, उन्हें नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है, लेकिन साथ ही इसके दुष्परिणामों को नियंत्रित करने के लिए नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा व व्यवहार भी उतना ही आवश्यक है। किसी ने ठीक ही कहा है-

दुनिया में रहता हूँ मगर तलबगार नहीं हूँ।
बाजार से गुजरता हूँ मगर खरीददार नहीं हूँ।

जीवन में दृश्य बन कर नहीं, द्रष्टा बनकर जीना सीखो। जहाँ द्रष्टा भाव आयेगा, वहीं तनाव व चिंता से मुक्ति का आभास होगा व जीवन में सरलता, निर्मलता, मधुरता और विनम्रता का भाव जागृत होगा।

-53, गोपालवाड़ी, जयपुर (राज.)

हास्य-व्यंग्य क्षणिकाएँ

राष्ट्रसंत प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

पाचन

डॉक्टर ने उन्हें
दो गोलियाँ दीं और
निगलने को कहा, पर
वे निगल नहीं पा रहे हैं।
लोगों ने बताया-
अभी कुछ दिनों पूर्व
वे सार्वजनिक चंदा निगल गये
उसे पचा रहे हैं।

सच

एक नेता ने
अपनी पत्नी से कहा-
तुम्हारी अक्ल भैंस चर गई
ऐसा मैंने सुना है।
वह बोली-बिल्कुल सच
तभी तो मैंने आपको
अपना पति चुना है।

कविता

एक सच्ची दास्तां

रेणु सिरोया

उनकी आँखों में छलकता दर्द,
लरजते आँसू, बिखरते शब्द
मानो कुछ कह रहे हैं
मगर लब साथ नहीं दे रहे,
लड़खड़ाते कदम, मुरझाया बदन,
सिमटती सांसें, धड़कता दिल
मानो कुछ कह रहा है, मगर किसे कहें,
तड़फते अरमान, अनसुलझे सवाल,
दबी-दबी आह, सूनी-सूनी राह
मानो ढूँढ रही है किसी अपने को
मगर कोई अपना नहीं,
वो बेबसी और लाचारी से निहार रहे हैं,
सामने बने बंगले की ओर,
भीग रही है आँखों की कोर,
सबसे बेखबर कि कोई
उनके चेहरे पर उभरती हुई
संवेदनाओं को बड़ी संजीदगी से देख रहा है,
मेरा अन्तर्मन तड़फ उठा, मैं पास गई और बोली-
बाबा आप तन्हा और खामोश कब से
उस बंगले की ओर उम्मीद लगाये बैठे हैं,
क्या जान सकती हूँ, मैं दर्द आपका?
बाबा ने खामोशी तोड़ी और
एक लम्बी आह भरके बोले...
बेटा वो बंगला कभी मेरा था,
जिसमें खुशियों का बसेरा था,

मेहनत से बच्चों को पाला था,
बिन माँ के ही संभाला था,
लेकिन आज वक्त ये आया है,
अपनों से ही धोखा खाया है,
सोच रहा हूँ...क्या इसी दिन के लिए
इंसान औलाद चाहता है,
उनकी खुशियों की खातिर
खुद की खुशियाँ लुटाता है,
आँसू छलक पड़े बूढ़ी आँखों से,
लाठी, लुढ़क गई हाथों से, बोले-
अगर बुढ़ापे का अंजाम है यही तो
आखिर क्यों चाहते हैं संतान सभी...
उनकी दर्द भरी दास्तां सुनकर
मैं निरुत्तर हो गई........

-213/12, सिरोया मेडिकल, अशोक नगर, उदयपुर-313001 (राज.)

जीवन की प्रगति के लिए

श्री नितेश नागौता जैन

1. सुनने एवं समझने की रुचि बढ़ायें।
2. परम्परा के व्यामोह का त्याग करें।
3. दृढ़ संकल्पमय जीवन जीयें।
4. क्रोध-अहंकार में कोई कार्य न करें।
5. सभी जीवों को सुखी बनाने की भावना रखें।
6. 'सच्चा सो मेरा' के सिद्धान्त को जीवन-व्यवहार में अपनायें।
7. 'पर' की अपेक्षा 'स्व' का अधिक ध्यान रखें।
8. प्रतिदिन आत्म-चिन्तन एवं सेल्फ ऑडिट की आदत बनायें।
9. लोभ को संतोष से, वासना को त्याग से जीतने का प्रयास करें।
10. सत्य और प्रामाणिकता से घनिष्ठ मित्रता रखें।

-जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

प्रभावशाली निर्दोष चिकित्सा-पद्धति : एक्यूप्रेशर

डॉ. चंचलमल चोरडिया

विश्वसनीय निदान की सरलतम पद्धति एक्यूप्रेशर

शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग का संबंध पूरे शरीर से होता है। इसी कारण जब शरीर के किसी भाग में तीव्र पीड़ा होती है अथवा कष्ट होता है, तो हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। शरीर में प्रत्येक अंग, उपांग, अवयव, अन्त:स्रावी ग्रंथियों आदि से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतिवेदन बिन्दु हमारी हथेली और पगथली में होते हैं। जिस प्रकार किसी भवन की बिजली का सारा नियन्त्रण मुख्य स्विच बोर्ड से होता है ठीक उसी प्रकार ये प्रतिवेदन बिन्दु शरीर के किसी न किसी भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी का पिता, किसी का भाई, किसी का पति तो अन्य किसी का दादा, नाना, पुत्र, चाचा, मामा, मित्र आदि भी हो सकता है। यदि किसी व्यक्ति का फोटो अलग-अलग स्थानों से लिया जाये तो एक ही व्यक्ति के फोटो में अन्तर हो सकता है। ठीक उसी प्रकार से ये प्रतिवेदन बिन्दु भी शरीर के अलग-अलग भागों से संबंधित हो सकते हैं। यानी एक ही प्रतिवेदन बिन्दु के शरीर में अनेक संबंध हो सकते हैं।

सुजोक और रिफ्लेक्सोलॉजी एक्यूप्रेशर के सिद्धान्तानुसार हथेली और पगथली में दबाव देने पर जिन स्थानों पर दर्द का अनुभव होता है, उन स्थानों पर विकार अथवा अनावश्यक विजातीय तत्त्वों का जमाव है। परिणामस्वरूप शरीर में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध हो जाता है। ये प्रतिवेदन बिन्दु बिजली के पंखों, बल्ब या अन्य उपकरणों के स्विच की भांति शरीर के अलग-अलग भागों से संबंधित होते हैं। जिस प्रकार स्विच में खराबी होने से उपकरण तक बिजली का प्रवाह सही ढंग से नहीं पहुँचता, ठीक उसी प्रकार इन प्रतिवेदन बिन्दुओं पर विजातीय तत्त्वों के जमा होने से संबंधित अंग, उपांग, अवयवों आदि में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध हो जाने से व्यक्ति रोगी बनने लगता है।

एक्यूप्रेशर द्वारा रोग-निदान का सिद्धान्त

हथेली और पगथली में आगे-पीछे सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग में अर्थात् पूरी हथेली और पगथली के पूरे क्षेत्रफल में अंगुलियों या अंगूठे से हम सहनीय गहरा दबाव देते हैं तब जहाँ-जहाँ जैसा-जैसा दर्द आता है, वे सारे दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु एक्यूप्रेशर के सिद्धान्तानुसार रोग से संबंधित होते हैं। अर्थात् वे शरीर में रोग के परिवार के सदस्य होते हैं।

एक्यूप्रेशर द्वारा निदान क्यों विश्वसनीय?

1. प्रत्येक व्यक्ति की हथेली और पगथली उसके स्वयं की होती है। अत: इस विधि द्वारा उस व्यक्ति का स्वयं से संबंधित शरीर के सभी रोगों का निदान होता है। जबकि लक्षणों पर आधारित निदान पूर्ण शरीर का नहीं हो सकता। किसी भी दो हृदय रोगियों, मधुमेह के रोगियों अथवा और किसी नाम से पुकारे जाने वाले रोगियों के रोग का परिवार कभी भी पूर्ण रूप से एक सा नहीं हो सकता। अत: लक्षणों एवं यंत्रों पर आधारित रोग का निदान करते समय सहयोगी रोगों की उपेक्षा होना स्वाभाविक है। परन्तु एक्युप्रेशर पद्धति द्वारा जितना सही और विश्वसनीय निदान होता है, अन्यत्र प्राय: संभव नहीं होता।
2. कभी-कभी रोग के कारण कुछ और होते हैं और उसके लक्षण कहीं दूसरे अंगों पर प्रकट होते हैं। जैसे मधुमेह का कारण पाचन तंत्र का बिगड़ना भी हो सकता है, न कि पेन्क्रियाज का खराब होना। हृदय शूल का कारण छोटी आंत में बनी गैस का प्रभाव भी हो सकता है, न कि हृदय की कमजोरी का होना। अस्थमा का कारण बड़ी आंत का बराबर कार्य न करना, न कि फेफड़ों का खराब होना। जब निदान ही अधूरा होता है तो उपचार कैसे स्थायी एवं प्रभावशाली हो सकता है? आधुनिक चिकित्सक ऐसे रोगों को प्राय: असाध्य बतला देते हैं। परन्तु हथेली और पगथली के समस्त प्रतिवेदन बिन्दुओं पर दबाव देने से जहाँ ज्यादा दर्द आता है, वे ही रोग का मुख्य कारण होते हैं, भले ही रोग के लक्षण कहीं अन्य भाग में प्रकट क्यों न हों? इसी कारण एक्युप्रेशर असाध्य रोगों के निदान की प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति होती है।
3. रोग की प्रारम्भिक अवस्था में ही इस विधि द्वारा निदान संभव होता है। जहाँ-जहाँ पर दबाव देने से दर्द आता है, वे सभी प्रतिवेदन बिन्दु भविष्य में शरीर में रोग की स्थिति बनाते हैं। यदि रोग हो गया हों तो वे उसके कारण होते हैं, परन्तु यदि रोग के लक्षण प्रत्यक्ष बाह्य रूप से प्रकट न हुये हों तो, भविष्य में होने वाले रोगों का कारण उन्हीं प्रतिवेदन बिन्दुओं में से होता है। रोग आने से पूर्व उसकी प्रारम्भिक अवस्था का निदान जितना सरल इस पद्धति द्वारा होता है, उतना प्राय: अन्यत्र कठिन होता है।
4. शरीर में रोग कभी अकेला आ ही नहीं सकता। जिन लक्षणों के आधार पर आज रोगों का नाम करण किया जाता है, वे वास्तव में रोगों के नेता होते हैं, जिन्हें सैकड़ों अप्रत्यक्ष रोगों का समर्थन और सहयोग प्राप्त होता है। परन्तु इस विधि द्वारा रोगों के पूरे परिवार का निदान होने से निदान सही और विश्वसनीय होता हैं, जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों में प्राय: संभव नहीं होता।

5. हथेली और पगथली में दबाव देने पर जितने कम प्रतिवेदन बिन्दुओं पर अथवा जितना कम दर्द आता है, उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होता है। जितने ज्यादा दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु उतना पुराना रोग और स्वास्थ्य खराब होता है। इस प्रकार इस निदान पद्धति द्वारा जो रोग आधुनिक पेथालोजिकल टेस्टों अथवा यंत्रों की पकड़ में नहीं आते, उन रोगों के कारणों का सरलता पूर्वक निदान किया जा सकता है। उपर्युक्त निदान अधिक सही और विश्वसनीय होता है। अत: उस निदान पर आधारित उपचार-प्रभावशाली, दुष्प्रभावों से रहित और अल्पकालीन होता है, जिस पर किसी को भी आंशका नहीं होनी चाहियें।

निदान बिल्कुल सरल, सस्ता, सहज, पूर्ण अहिंसक, दुष्प्रभावों से रहित, स्वावलम्बी, सर्वत्र अपने साथ उपलब्ध होता है। शरीर विज्ञान के विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं होने से सभी व्यक्ति स्वयं भी आत्मविश्वास के साथ उपचार कर सकते हैं। पूरे शरीर का निदान होने से शरीर के साथ-साथ, मन और वाणी के विकारों का भी, निदान करने वाला एवं अन्त:स्रावी ग्रन्थियों का सरलतम निदान इस पद्धति द्वारा होता है।

निदान में मूल सिद्धान्तों की उपेक्षा अनुचित

आजकल हम आधुनिक चिकित्सा पद्धति के निदान से इतने अधिक प्रभावित होते हैं कि जब तक उनके द्वारा रोग प्रमाणित नहीं हो जाता, तब तक हम रोग को रोग ही नहीं मानते। अधिकांश एक्युप्रेशर चिकित्सक भी प्राय: उन्हीं रोगों से संबंधित प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दुओं पर उपचार कर रोगी को राहत पहुँचाने तक ही अपने आपको सीमित रखते हैं। सुजोक और रिलोक्सोलोजी के चित्रों में बतलाये गये प्रमुख बिन्दुओं में दर्द की स्थिति देख अधिकांश एक्युप्रेशर चिकित्सक भी कभी-कभी रोग के नाम से निदान करते संकोच नहीं करते। जैसे किसी व्यक्ति के हृदय के प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दु पर दबाव देने से दर्द आने की स्थिति में उसे हृदय का रोगी कह देते हैं। परन्तु ऐसा सदैव सही नहीं होता। हृदय में रोग होने पर निश्चित रूप से हृदय के प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दु पर दबाने से दर्द आता है। परन्तु इसका विपरीत कथन कभी-कभी गलत भी हो सकता है, क्योंकि उस प्रतिवेदन बिन्दु का शरीर के अन्य भागों से भी कुछ न कुछ संबंध अवश्य होता है। जैसे किसी व्यक्ति के पिता की मृत्यु होने पर पुत्र रोता है। इस कारण पुत्र को किसी अन्य कारण से रोते हुये देख यह कहना कि क्या आपके पिताजी की मृत्यु हो गयी है? कहाँ तक तर्क संगत है? अत: एक्युप्रेशर की इस पद्धति में आधुनिक चिकित्सा द्वारा कथित रोगों के नाम से निदान करना उसके मूल सिद्धान्तों के विपरीत होता है। निदानकर्त्ता मात्र इतना कह सकता है कि, दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु, शरीर में उपस्थित रोग का प्रतिनिधित्व करते हैं, भले ही वे किसी

भी नाम से क्यों न पुकारे जाते हों?

एक्यूप्रेशर द्वारा उपचार की विधि

हथेली और पगथली के सभी भागों में दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दुओं का पता लगाने के पश्चात्, प्रत्येक दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु पर दिन में एक या दो बार बीस से तीस सैकण्ड तक, सभी प्रतिवेदन बिन्दुओं पर जमा हुये विजातीय पदार्थों को दूर करने हेतु, अपनी अंगुलियों और अंगूठे से सहनीय घुमावदार दबाव देने से, धीरे-धीरे विजातीय तत्त्व वहाँ से दूर होने लगते हैं। परिणाम स्वरूप शरीर के संबंधित रोग ग्रस्त भागों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह नियमित और संतुलित होने लगता है तथा रोगी रोग मुक्त होने लगता है, तथा प्रत्यक्ष रोग न भी हो तो भविष्य में रोग होने की सम्भावनाएँ नहीं रहती है।

उपचार यथा संभव साधक को स्वयं ही करना चाहिये। स्वयं द्वारा निदान और उपचार करने से व्यक्ति सभी दर्दस्थ प्रतिवेदन बिन्दुओं पर समान दबाव दे सकता है और रोग में जैसे-जैसे राहत मिलती जाती है, उसका आत्म विश्वास और सजगता बढ़ती जाती है। दूसरा व्यक्ति प्राय: सभी दर्दस्थ बिन्दुओं पर दबाव नहीं देता। अत: यथा संभव जितना उपचार रोगी स्वयं कर सकें, उतना तो कम से कम उसको स्वयं ही करना चाहिये, अन्य साधक तथा चिकित्सक का रोग से संबंधित प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दुओं के दबाव हेतु शीघ्र राहत मिलने तक ही सहयोग लेना चाहिए। क्योंकि अधिकांश चिकित्सक भी एक्युप्रेशर सिद्धान्तों के अनुसार न तो रोगों का पूर्ण निदान ही करते हैं और न उपचार। आधुनिक चिकित्सा के निदान को आधार मानकर ही प्राय: नामधारी रोगों के प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दुओं का उपचार करते हैं। सहयोगी रोगों की उपेक्षा करने से उनका उपचार कभी-कभी आंशिक और अस्थायी भी होता है एवं अधिक समय ले सकता है।

परन्तु आजकल हम नामधारी रोग को सीधा नियन्त्रण में करने का प्रयास करते हैं, जो न्यायोचित नहीं होता। सहयोगियों को दूर किये बिना जिस प्रकार नेता पर नियन्त्रण करना कठिन होता है। प्राय: हम अखबारों में पढ़ते हैं और टी.वी. पर देखते हैं कि प्रदर्शनों के समय प्रदर्शनकारियों के नेता को पुलिस सीधा कैद नहीं करती। पहले प्रदर्शन कारियों को प्रार्थना कर शान्त करने का प्रयास करती है, फिर लाठी चलाती है, अश्रु गैस छोड़ती हैं और जब सारी भीड़ चली जाती है तो नेता को आसानी से कैद किया जा सकता है। ठीक उसी प्रकार रोग के परिवार के सहायक रोगों से संबंधित सभी प्रतिवेदन बिन्दुओं का उपचार करने से मुख्य रोग की ताकत स्वत: समाप्त हो जाती है तथा वह शीघ्र नियन्त्रण में लाया जा सकता है। जिस प्रकार जनतंत्र में सहयोगियों का समर्थन न मिलने से नेता की ताकत समाप्त हो जाती है, नेता को पद त्याग करना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार अप्रत्यक्ष सहयोगी रोगों के

दूर हो जाने से मुख्य रोग से शीघ्र एवं स्थायी मुक्ति मिल जाती है। यही एक्युप्रेशर चिकित्सा का मूल सिद्धान्त है।

उपसंहार

स्वास्थ्य विज्ञान जैसे विस्तृत विषय को सम्पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करना बड़ा कठिन है। फिर भी हिंसा द्वारा निर्मित दवाओं का उपयोग न लेने का संकल्प करने वाले प्रत्येक साधक को एक्युप्रेशर, सुजोक, रेकी, मुद्राओं, प्राणिक-हिलींग, दूरस्थ, डाउजिंग, पिरामीड, सूर्य किरण, रंग एवं चुम्बक जैसी बिना दवा उपचार एवं स्वास्थ्य सुरक्षा की स्वावलंबी, प्रभावशाली, अहिंसात्मक, निर्दोष, दुष्प्रभावों से रहित चिकित्सा पद्धतियों की साधारण सैद्धान्तिक जानकारी अवश्य रखनी चाहिए ताकि वे स्वावलंबी बन समाधि में रह सके।

मृत्यु के लिए सौ सर्पो के काटने की आवश्यकता नहीं होती। एक सर्प का काटा व्यक्ति भी कभी-कभी मर सकता है। ठीक उसी प्रकार कभी-कभी बहुत छोटी लगने वाली हमारी गलती अथवा उपेक्षावृत्ति भी भविष्य में रोग का बहुत बड़ा कारण बन साधक की समाधि अथवा शांति भंग कर सकती है। ''आरोग्य आपका'', ''स्वस्थ रहें या रोगी-फैसला आपका'' तथा ''शरीर स्वयं का चिकित्सक'' जैसी पुस्तके अध्ययन करने से अन्य संबंधित विस्तृत जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती है, एवं शंकाओं का समाधान किया जा सकता है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,

Website: www.chordiahealthzone.com

भावाभिव्यक्ति

श्री जौहरीमल छाजेड़

माह जुलाई-2012 की जिनवाणी पत्रिका में 'प्रयोगधर्मिता' संपादकीय लेख पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। लेख को आद्योपान्त अध्ययन करने से ऐसा महसूस हुआ कि संपादक महोदय के विचार जिनवाणी (आगमवाणी) के प्रति कितने अटूट श्रद्धास्पद हैं तथा आपका चिन्तन कितना विस्तृत, गूढ, गहन एवं सटीक है। यूं तो जी रहे थे ज़िन्दगीं में पहले भी, पर 'प्रयोगधर्मिता' लेख ने तो मेरी ज़िन्दगी जीने की शैली में ही परिवर्तन कर दिया।

-जैन धर्म भूषण/स्वाध्यायी श्रावक, पटेल चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती

दोनों की महिमा भारी है

डॉ. अजित एच. जैन रांका

मेरे 'हीरा' गुरु के चरणों में, मैं बलिहारी जाऊँ।
मेरे 'मान' गुरु के चरणों में, मैं बलिहारी जाऊँ।
दोनों 'हस्ती' की हसरत हैं, दोनों की महिमा भारी है।
एक 'प्रवचनप्रभाकर' हैं, दूजे संत शांतमूर्ति आत्मार्थी हैं।
दोनों ही गुणों की खान हैं, 'रत्न' संघ की शान हैं।
संघ समर्पित है चरणों में, ये हम सब के भगवान हैं।
'खुली किताब' जीवन है इनका, 'कथनी' 'करणी' समान है।
संघनायक के रूप में हमको- 'दो नयनों' के समान हैं।
'ज्ञान' 'क्रिया' दोनों में दृढ़ता, दोनों संघ 'सिरताज' हैं।
छः काया के प्रतिपालक हैं ये, हम सब के तारणहार हैं।
'व्यसन मुक्त' हो, 'फैशन छोड़ो' देते यह संदेश हैं।
'सामायिक' 'स्वाध्याय' का करते दूजा घोष हैं।
क्षण निकम्मो रहणो नहीं, करणो आतम काम है।
भणणो, गुणणो, सीखणो, रमणो ज्ञान आराम है।
गुरुवर के इस उपदेश का इन पर दिखता प्रभाव है।
इन दोनों को देख आती, 'गुरु हस्ती' की याद है।
कथनी-करणी इन दोनों की, 'गुरु हस्ती' की पहचान है।
संघ सफलता के शिखर पर, ये इनका ही उपकार है।
'महिमा' दोनों 'गुरुवर' की गाऊँ, संघ भी मेरे साथ है।
'जीवन' सफल बनादो हमारा- दे दो 'सम्यक्ज्ञान है।
'कृपा दृष्टि' ऐसी ही रखना, (सब पर, संघ पर) गुरु महिमा गुणगान है।
बीच 'भंवर' में फंसी है नैय्या, संसार सागर तिरना है।
बनके खिवैय्या, तारो गुरुवर, आप ही एक सहारा हैं।
'चरण-शरण' में आया हूँ मैं, 'अजय' की ये फरियाद है।
गुरु चरणों में स्थान मिले अब, हर 'जनम' में 'कृपानिधान' हैं।
ऐसी महिमा गुरुवर की गाओ, भक्तों का 'बेडा पार' है।
जीवन सफल बनाना हो तो, यही सीधा, सरल उपाय है।
महिमा दोनों गुरुवर की गाऊँ, संघ भी मेरे साथ है।

-'आरोग्यधाम' भडगांव, जिला-जलगांव (महा.)

आत्मालोचन

जीवन की भोर

श्री दिलखुशराज जैन

जीवन की दौड़

सूरज रोज उगे पूरब में, पश्चिम में अस्त चला जावे,
चुपके-चुपके दिन-रात यूं बीते, पांवा री आहट नहीं आवे।
दिन यों बीते, महीना बीते, वर्षों पर वर्ष बीतता जावे,
रे जिवड़ा जरा ध्यान दे किण विध, उमरियां ढलती जावे।
दुनिया में चहुं ओर जो देखो, भगदड़ मची है, शोर मचा है,
कहां है जाना, क्या करना है, न इसकी उसको कोई खबर है।
वो भगता है इस कारण मेरे, मन में भगने की सोच जगी,
वो करता है इस खातिर मेरे, मन में करने की सोच जगी।
वो क्यों करता मालूम नहीं, मैं क्यों करता यह भान नहीं,
सच तो यह है सच को पहचाने, इतना किसको समय नहीं।।

जीवन में मोड़

सतत दौड़ते एक दिन मेरे, तन-मन को जरा थकान लगी,
उसे मिटाने कुछ क्षण रुका, तब दिल में मेरे सोच जगी।
भाग रहा हूँ क्यों मैं और, ये सभी क्यों भाग रहे,
क्या पाया कुछ भी अब तक, या पाने से वंचित रहे।
उसी समय अपने कानों से, मैंने भीतर की बात सुनी,
यह दौड़ है दुःख से बचने की और यही दौड़ सुख पाने की।
भीतर सुख की चाहत है सबको, फिर भी मिलती राह नहीं,
भ्रम भरा इतना भीतर में, खुद की खुद को पहचान नहीं।

जीवन की भोर

मैंने एक आवाज सुनी फिर से, वो भी मेरे अंतर की थी,
जो जाल बिछा भ्रम का भीतर में, उसे तोड़ने वाली थी।

पैसे में सुख खोज रहा, खोजा स्वजन और परजन में,
पद पदवी अधिकार ही क्या, खोजे जग के हर कोने में।
जो नहीं जहाँ पर वो तुझको, नहीं वहाँ मिलेगा भान हुआ,
फिर कहाँ मिलेगा उस क्षण ही, प्रश्न दूसरा खड़ा हुआ।
अब आत्मज्ञानमय जगी चेतना, प्रश्नों का उत्तर देने को,
जब खुद का खुद से हो सामना, प्रश्न बचे नहीं करने को।
मूरख सारे गाँव में ढूंढे, अपने गोदी के बच्चे को,
कस्तूरी मृग घास में ढूँढे, स्वतन की कस्तूरी को।

जीवन की ओर

इसी तरह अज्ञान दशा में, तुम अपना सुख ढूँढ रहे,
जो अपना स्वभाव तुम्हारा, पर पुद्गल में ढूँढ रहे।
जो दौड़ लगाते आये हो, उससे अपने को दूर करो,
जो मिला मोड़ पुण्योदय से, पूरा ही सदुपयोग करो।
जिनवाणी का आलम्बन ले, गुरु आज्ञा में लीन बनो,
ज्ञान-क्रिया के मारग में अधिकाधिक पुरुषार्थ करो।
बस यही राह है पाने की, जिसको तुम पाने दौड़े थे,
बस यही प्रश्न का उत्तर है, जिसको न पाकर भटके थे।
अब दौड़ नहीं कुछ शोर नहीं, न संशय की सत्ता होगी,
बहेगा आनन्द का झरना, भीतर शांति समाधि होगी।।

-303, आगम फ्लेट्स, सुभानपुरा, बड़ौदा (गुजरात)

नन्हीं वय में सामायिक पाठ कण्ठस्थ

सैलाना की नन्हीं बालिका अवधी (उम्र 5 वर्ष) प्रपौत्री स्व. सुश्रावक श्री प्यारचन्द जी रांका, पौत्री श्रीमती शकुन्तलादेवी-रतनलाल जी रांका एवं सुपुत्री श्रीमती रितु-संदीप जी रांका ने इस छोटी सी अवस्था में सामायिक सूत्र याद कर धार्मिक अभिरुचि की जो भावना प्रदर्शित की है, वह अभिनन्दनीय, अनुमोदनीय एवं नन्ही पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है।

बाल-स्तम्भ

स्वतन्त्रता का आनन्द

डॉ. दिलीप धींग

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 सितम्बर 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

ग्रामीण परिवेश में केलू से आच्छादित घर में मेरा जन्म हुआ। घर की दीवारें और आंगन गोबर-मिट्टी (गारे) से पुते हुए रहते थे। रसोई घर (रसोड़े) का आंगन भी गारे से पुता हुआ था। मेरी माताजी (बाइजी) यतनापूर्वक उसे साफ-सुथरा रखती थी। उस रसोड़े के एक कोने में मिट्टी का चूल्हा था, जिसमें ईंधन के लिए जलाऊ लकड़ी और छाणों (गोबर के कण्डों) का उपयोग किया जाता था। वहीं एक-दो समतल पत्थरों से चौका बना रखा था। बाइजी नीचे बैठकर ही मिट्टी की केलड़ी में स्वादिष्ट रोटियाँ बनाती थीं। सामने परात में गूंथा हुआ आटा होता था। गौरैया (चरकली या चिड़िया) आकर गूंथे हुए आटे में निडर होकर-चोंचें मारती और चहकती हुई अपना आहार करती। बाइजी जब गूंथे हुए आटे को भीगे हुए गरणे (पानी छानने का कपड़ा) से ढँककर इधर-उधर के दूसरे काम निपटाती, तब भी गौरैया गरणे के सिरे को ऊपर करके आटा चुरा ले जाती। गौरैया की यह शरारत बाइजी को अच्छी लगती और हम भाई-बहिनों को भी।

जब रोटियाँ बन रही होती थीं, तब कुछ गौरैया उड़-उड़कर बारी-बारी से बाइजी के चौके में चली आती थीं। पास ही हम भाई-बहिन रोटी खा रहे होते थे। बाइजी के कहने पर रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े गौरैया की ओर फेंक देते। गौरैया को तो मजा आ जाता। वे खुश होकर फुदकती हुई रोटी के टुकड़े अपनी चोंच में पकड़ लेती। कोई वहीं बैठी-बैठी अपनी रोटी खाती, तो कोई दूर जाकर; तो कोई घोंसले में प्रतीक्षारत अपने बच्चों के लिए रोटी ले जाती। बाँटकर खाने का वैसा आनन्द तो किसी पाँच सितारा होटल में भी नामुमकिन है।

पुराने घरों में ऐसे स्थान सुलभ होते थे, जहाँ गौरैया अपना घोंसला बना सके। गौरैया और कबूतर, मानव-आवासों के भीतर या आसपास कोई उपयुक्त स्थान देखकर अपना नीड़ सदियों से बनाते आ रहे हैं। मेरे घर में भी और घर के आसपास गौरैया के घोंसले हुआ करते थे। दीपावली या अन्य दिनों में सफाई करते समय बाइजी और हम बच्चे इस बात का ध्यान रखते थे कि गौरैया का घोंसला नहीं टूटे। बाइजी कहा करती थीं कि घोंसले ही पक्षियों के घर होते हैं, इन्हें उजाड़ने से भयंकर पाप लगता है। सह-अस्तित्व और जीव-रक्षा की ऐसी जीवन्त शिक्षा और कहाँ मिल सकती थी?

इधर, एक सुरक्षित चबूतरे पर चिड़िया के लिए कांगणी तथा छोटे अनाज के दाने डाले जाते थे। वहाँ गौरैया सहित दो-चार प्रजातियों की सैकड़ों की संख्या में चिड़िया आती थीं। चतुर चिड़िया अपनी चोंच से कांगणी का छिलका उतारकर कांगणी खाती थीं। वर्षा ऋतु में चिड़िया न जाने कहाँ से अपने पंख रंग लेती थी। ऐसी रंग-बिरंगी चहचहाती चिड़िया को एक साथ दाना चुगते देख हमारा मन नहीं भरता था। गाँव की नीरवता को पक्षियों की कलरव जब भंग करती थी तो कोई व्यवधान नहीं महसूस होता था। अपितु ऐसा लगता था, मानो प्रकृति अपना गीत-संगीत गाकर वातावरण में रस घोल रही है।

ये सारे दृश्य मुझे उस समय तो अच्छे लगते ही थे और अब, जब वो बीते दिन याद करता हूँ तो मेरे स्मृति-लोक में उन दृश्यों की सुन्दरता कई गुना बढ़ जाती है। आज के बालक चिड़िया को अपनी पाठ्य पुस्तकों में देखते हैं। उन्हें देखकर रंग-बिरंगी चिड़िया के चित्र भी बना लेते हैं। लेकिन चिड़िया की वह असली व लम्बी उड़ान, मनमोहक अठखेलियाँ और कर्णप्रिय चहचहाट उन्हें प्रायः देखने-सुनने को नहीं मिलती हैं। चिड़िया की उड़ान व अठखेलियाँ देखने तथा चहचहाट सुनने के लिए उन्हें चिड़ियाघर जाना पड़ता है। लेकिन वहाँ पिंजरे में बन्द चिड़िया की उड़ान का सौन्दर्य तथा चहचहाट का माधुर्य वैसा नहीं होता है, जैसा स्वतन्त्र रहने वाली चिड़िया का होता है।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

प्रश्नः-

1. लेखक को गौरैया की कौनसी बात अच्छी लगती थी?
2. पाँच सितारा होटल में कैसा आनन्द नहीं मिलता?
3. सह-अस्तित्व का अभिप्राय समझाइये तथा इसको कैसे जीवन में अपनाया जा सकता है?
4. ईन प्रत्यय लगाकर दो शब्द बनाइये।
5. इस रचना से मिलने वाली किन्हीं तीन शिक्षाओं का उल्लेख कीजिए।

6. अर्थ बताइये- कलरव, अठखेलियाँ, नीरवता, नामुमकिन
7. आपको ग्रामीण परिवेश में क्या अच्छा लगता है? बताइये।

(बाल-स्तम्भ जून-2012 का परिणाम अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा)

हम स्वतन्त्र हैं

श्रीमती कमला सुराणा

हम स्वतंत्र हैं।
किसने कहा?
सबके मुँह से सुना,
मन हर्षित हुआ, हम स्वतंत्र हैं।

मन ने नचाया नाच गए,
इन्द्रियों ने दबाया दब गए
समाज ने पिटाया पिट गए,
फैशन के दास बन गए।

'कर' की चोरी कर गए,
झूठ के सगे बन गए।
निन्दा के साझीदार बन गए
'नरक' के भागीदार हो गए।
क्योंकि हम स्वतंत्र है।

हे मन! सोच!
यह स्वतंत्रता गर्त में डाल देगी,
यह अनैतिकता हमें जला देगी।
मानव भव का ह्रास कर देगी
अशांति राज फैला देगी

चिन्तन कर मन!
मन का अंधकार हटाने में है,
स्नेह, प्रेम प्रकाशन में है
संघ समाज प्रतिष्ठा में है।
सही स्वतंत्रता सुमार्ग में है।।

-ई 123, नेहरू पार्क, जोधपुर

अभिमत

सन्मार्गदर्शिनी जिनवाणी

श्री त्रिलोकचन्द जैन

'जिनवाणी' संघ की नींव, आधार और पहचान।
मुख पृष्ठ पर शोभित पंच परमेष्ठी महान।।

आदि पृष्ठ पर आगम गाथा, संपादकीय मन को छू जाता।
आगम सूत्र-अमृत चिंतन, प्रभु-गुरु के मुख से निकले वचन।
गुरु भगवंतों के औपदेशिक प्रवचन, श्रावकों के गहरे चिंतन।।

जीवन परिवर्तन करने में सक्षम वीतराग वाणी।
उपकारिणी, तारणहारिणी, सन्मार्गदर्शिनी जिनवाणी।।

शोधपरक लेख विद्वानों का प्रकट करते ठोस ज्ञान।
आओ मिलकर बढ़ायें ज्ञान से होता तत्त्व समाधान।।

पत्र से बोध, युवा से जोश, नारी से जागरण, बाल से संस्कार।
ये चार प्रमुख नियमित स्तम्भ।
पढ़कर पाठकों को मिलता आनन्द।।

बचपन, यौवनवय या वृद्धपन, सभी पीढ़ी के जन का होता प्रमुदित मन।
संवेदना-भावना-धारणा, सन्तों ने भी महिमा मानी।
उपकारिणी, तारणहारिणी, सन्मार्गदर्शिनी जिनवाणी।।

साहित्य समीक्षा से ग्रन्थों की प्रेक्षा।
समाचार विविधा में बधाई व शोक सन्देशा।।

अन्त में उनका नाम, जो करते दान, कहलाते दानी।
उपकारिणी. तारणहारिणी, सन्मार्गदर्शिनी जिनवाणी।।

मेरे मन की इच्छा, विद्वान करते रहे समीक्षा।
किंचित् रहे ना कमी, क्योंकि मंगल मूल धर्म की जननी।।

वैराग्यमयी, कषायमर्दिनी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
उपकारिणी, तारणहारिणी, सन्मार्गदर्शिनी जिनवाणी।।

-37/67, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

आओ जैन श्रावक बनें- प्रवर्तक श्री गणेश मुनि शास्त्री, ***प्रकाशक***- श्री अमर जैन साहित्य संस्थान, गणेश विहार, सेक्टर 11, हिरणमगरी, उदयपुर-313002 (राज.) दूरभाष-0294-2583741, ***पृष्ठ***- 108 (बड़ा आकार, आर्ट पेपर पर), ***मूल्य***-300 रुपये, ***सन्***- 2011

श्रावकाचार को समझाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयत्न होते रहे हैं। प्रवर्तक श्री गणेश मुनि जी शास्त्री ने "आओ जैन श्रावक बनें" पुस्तक में आकर्षक रंगीन चित्रों के साथ श्रावकाचार के आवश्यक बिन्दुओं को संक्षेप में समझाने का प्रयत्न किया है। पुस्तक में 'श्रावक' शब्द का अभिप्राय, श्रावक के 21 लक्षणों, इक्कीस गुणों का परिचय कराने के पश्चात् छह आवश्यकों, षड्कायिक जीवों, नव तत्त्वों एवं पच्चीस क्रियाओं से परिचित कराया गया है। बांये पृष्ठ पर विवेचन है तथा दाहिने पृष्ठ पर सम्बद्ध चित्र हैं। सम्यक्त्व-मिथ्यात्व के स्वरूप, 25 प्रकार के मिथ्यात्व, सम्यक्त्व की 10 रुचियों, श्रावक के तीन मनोरथों पर भी प्रकाश डाला गया है। फिर श्रावक के बारह व्रतों एवं उनके अतिचारों से अवगत कराया गया है। संलेखना-संथारा, श्रावक के चार विश्राम-स्थलों, पाँच अभिगमों को भी समझाया गया है। यथाप्रसंग तत्त्वज्ञानी श्रावक कुण्डकौलिक, दृढ़धर्मी श्रावक अर्हन्नक एवं दृढ़व्रती श्रावक कामदेव के प्रेरक कथानक भी दिए गए हैं। राष्ट्रसंत, प्रज्ञामहर्षि आदि विशेषणों से विभूषित प्रवर्तक सन्त साहित्य सर्जना में निरत रहते हैं। पुस्तक में श्रावक के 21 लक्षण विशिष्ट हैं, जो अन्यत्र दृष्टिपथ में नहीं आते हैं। शेष चित्र-प्रणाली के अतिरिक्त पुस्तक में कोई शैलीगत तार्किकता एवं नूतनता नहीं है।

प्राकृत रत्नाकर- प्रो. प्रेमसुमन जैन, ***प्रकाशक***- राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्री धवल तीर्थ, श्रवणबेलगोला-573135, जिला-हासन (कर्नाटक), ***पृष्ठ***- 6+426, ***मूल्य***- 600 रुपये, ***सन्***- 2012

प्रो. प्रेमसुमन जैन प्राकृत भाषा के विशेषज्ञ विद्वान् हैं। उनकी प्रस्तुत कृति 'प्राकृत रत्नाकर' प्राकृत के प्रमुख ग्रन्थों, ग्रन्थकारों, प्राकृत भाषाओं, प्राकृत साहित्य में वर्णित भारतीय जन-जीवन आदि का निरूपण एनसाइक्लोपीडिया के पैटर्न पर अकरादि क्रम से करती है। पुस्तक में लोक-जीवन के विभिन्न पक्षों, प्राकृत की प्रमुख संस्थाओं, विभागों,

प्राकृत के सम्पादकों, विद्वानों आदि के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गई है। ग्रन्थ के अन्त में शब्दानुक्रमणिका दी गई है, जिससे ग्रन्थ के अभीष्ट विषय को सरलता से ढूँढ कर पढ़ा जा सकता है। प्राकृत भाषा से सम्बद्ध समग्र सामग्री की एक पुस्तक में संयोजना ही इसका वैशिष्ट्य है। परिशिष्ट में प्रकाशित प्राकृत ग्रन्थ सूची में 177 ग्रन्थों के नाम हैं तथा प्राकृत अध्ययन के शोध ग्रन्थों के अन्तर्गत 148 ग्रन्थों की सूची दी गई है। 'प्राकृत रत्नाकर' प्राकृत अध्येताओं के लिए एक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है, किन्तु अभी भी इसमें कुछ सूचनाएँ छूट गई हैं। उदाहरण के लिए मुनि जम्बूविजय जी एवं पं. सुखलाल संघवी के नाम इस ग्रन्थ में दृष्टिपथ में नहीं आए।

श्री पार्श्वनाथ चरित्र- लेखक- पं. काशीनाथ जैन, ***सम्पादक***- मुनि श्री जयानन्द विजय जी, ***प्रकाशक***- श्री गुरु रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल, ***प्राप्ति स्थान***- (1) श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन पेढी, साँथू-343026, जिला-जालोर (राज.), दूरभाष-02973-254221, (2) महाविदेह भीनमाल धाम, तलेटी हस्तिगिरि, लिंक रोड़, पालीताणा-364270, दूरभाष-02848-243018, (3) शाह देवीचन्द छगनलाल जी, सुमति दर्शन, नेहरू पार्क के सामने, माघ कॉलोनी, भीनमाल-343029 (राज.), दूरभाष-02969-220387

श्री उदयवीर गणि विरचित 'श्री पार्श्वनाथ चरित्रम्' मूलतः संस्कृत भाषा का ग्रन्थ है, जिसमें तेबीसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ के जीवन एवं उनके विभिन्न भवों का 8 सर्गों में निरूपण है। श्री उदयवीर गणि तपागच्छ के सन्त थे, जिन्होंने विक्रम संवत् 1654 में यह कृति पूर्ण की थी। उसी का हिन्दी में यह अनुवाद भीनमाल से प्रकाशित हुआ है। इसमें मूल संस्कृत श्लोक नहीं हैं। ग्रन्थ में अनेक प्राचीन एवं नवीन कथानक जोड़े गए हैं। कथाओं के माध्यम से नैतिक आचरण की शिक्षा दी गई है। इससे हिंसा, झूठ, चोरी आदि के त्याग की एवं जीवन-मूल्यों की रक्षा हेतु प्रेरणा मिलती है। कहीं कहीं पूजा, तीर्थ-सेवा आदि की भी प्रेरणा की गई है। प्रवचनों के लिए कथाएँ उपयोगी हैं।

चिन्तन कण

- ज्योतिष आपका भविष्य बता सकता है।
  परन्तु जिनवाणी आपका भविष्य बना सकती है।।
- छोटों को देखकर जीओ, बड़ों को देखकर बढ़ो।
  अच्छे के लिए प्रयास करो और बुरे के लिए तैयार रहो।।

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (29)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा "मई-जून-जुलाई-2012" के अंकों पर आधारित है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर नमन मेहता सुपुत्र श्री सुमतिचन्द मेहता, निदेशक-अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, गजराज नेमीचंद जैन किराणा मर्चेन्ट, सदर बाजार, पीपाड़ शहर-342601 (राज.), फोनः 94141-16766 के पते पर 25 सितम्बर 2012 तक मिल जाने चाहिए। **प्रश्न समझ न आने पर आप फोन के द्वारा सम्पर्क कर समझ सकते हैं।**

विशेष- 1. पहेली प्रश्न 49-50 में संकेत ("   ") में दिए गए हैं।

2. प्रश्नों के उत्तर के साथ पृष्ठ संख्या पूछने पर ही लिखें, अन्यथा नहीं।

(अ) अ/आ से ही उत्तर शुरु कीजिए, उत्तर एक शब्द में ही होने चाहिए।

1. ....जुड़ेगी तो सेवा-भावना का उद्भव होगा।
2. रात को भोजन न करने वाले का...................बढ़ता है।
3. आत्मलक्ष्य की साधना जब होती है तो साधक.............से निहाल हो जाता है।
4. अह कालंमि संपते...............समुस्सयं।
5. प्रदर्शन बाह्य है जबकि दर्शन............या आत्मिक हैं।
6. शव में........... में ही सम्मूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति होने लगती है।
7. ममता त्याग का अभ्यास करने हेतु पहले परिजनों से...........बनाया।
8. ....है बचपन से ही बालक को सही दिशा बोध देने की।
9. शिविर तो............के मौलिक अस्तित्व को दिलाने वाली गिफ्ट है।
10. ....भी हिंसा है।
11. बहुधा................इस भवसागर में, मूढ कठिन दुःख पाते हैं।
12. ....की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।
13. द्रव्यभाव संयोग मुक्त, भिक्षा जीवी...............हैं।
14. ....लोग धर्मक्रिया तो करते हैं, किन्तु परिणाम की प्रगति के प्रति उतनी सावधानी नहीं रखते।
15. तप की..........में नाम का पोषण, स्वार्थ और अहंकृति का पोषण है तो तप का

सार्थक फल प्राप्त नहीं होगा।

16. जिसमें आलोचना नहीं............की जाती है, उसे धर्म कहते हैं।

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक-दो शब्द में दीजिए-

17. किसको पग-पग पर सहज में सुयोग मिलता है?
18. रात्रि-भोजन को महाभारत में किसका द्वार बताया गया है?
19. मुक्ति के लिये किस आचार को अनिवार्य माना गया है?
20. कौनसे प्रकार का श्रावक 12 व्रतों का पालक, 11 उपासक प्रतिमा का आराधक होता है?
21. भारत में कितने (प्रमुखतः) अहिंसा धर्म हैं?
22. मुझे दुःख की अपेक्षा किसको कम करना है?
23. संत की निर्मलवाणी हो तो वह कैसी प्रतीत होती है?
24. हर जीव से हमने कितने रिश्ते बनाए?
25. माया को किससे जीत सकते हैं?
26. ज्ञान, श्रद्धा और आचरण किसके उपादान हैं?
27. सकल गुण के निधान कौन हैं?
28. ईशावास्योपनिषद् में कुल कितने मंत्र हैं?
29. काँच की मणि किसकी तरह चमकती है?
30. सामुदायिकता को चिरंजीवी कौन बनाता है?
31. प्रीवेन्शन एक्ट में संशोधन के साथ कितने रूपों के अपराधों से निपटने का प्रावधान किया गया है?
32. छेद वाली छलनी से भी सुभद्रा ने किसके बल पर कुएँ से पानी निकाला?

(स) मुझे पहिचानो- कुछ तो जानो।

33. मैं सदा मानव के मन में चंचलता पैदा करता हूँ।
34. मेरी शुद्धता के लिए आहार का शुद्ध होना आवश्यक है।
35. कर्म मेरा अनुसरण करता है।
36. मैं समान आचार-विचार के व्यक्तियों का समूह हूँ।
37. मेरे जग जाने पर तप भी हल्का लगने लगता है।
38. मैं आत्म-विकास की पहली सीढ़ी हूँ।
39. मैं मानव का सहज स्वभाव हूँ, क्रोध से पाता अभाव हूँ।

40. हमारे दरबार में किसी तरह का भेद नहीं है।
41. रूप-अरूपी, अज्ञात है आकार, उपयोग है मेरी असली पहचान।
42. मैं ज्ञान और दर्शन से मिलकर बना हूँ।
43. मेरे अभाव में विकास ही नहीं होता।
44. मेरे भोग में सुख का कोई स्थान नहीं है।
45. मैं कर्मक्षय हेतु तप के साथ किया जाने वाला सरलतम उपाय हूँ।
46. मेरे बिन मिलता नहीं मोक्ष, मेरे बिन मिटता नहीं दोष।
47. आत्मा और परमात्मा में मेरा ही भेद है।
48. मैं आचार्यादि से आचार सीखकर उन्हीं की निन्दा करता हूँ।

(द) पहेली प्रश्न बुझाओ-

ध्यातव्य बिन्दु-1. जिनवाणी में आए विभिन्न शीर्षकों में से उचित शीर्षक लिखिए।
2. शीर्षक में से कुछ उत्तर न लिखकर "पूरा शीर्षक" लिखना है।

49. मैं 'माँगू' मुझको 'धूतकारे', मैं मांगू तो मिलता 'मान'।
शैली-शैली में 'फर्क' है मित्रों! गवेषणा का कार्य महान्।।

50. आवश्यकता जब महसूस होती, आविष्कार हो जाता है,
ढूँढ-ढूँढ कर हंसराज भी, अपना मोती खाता है।
प्यास लगने पर जलकण भी, सागर का रूप दिखाता है,
'खोज' करे जब स्वयं 'स्वयं' की, निज स्वरूप को पाता है।।

गुरु-शरणम्

श्री निर्मल जामड़

गुरु चरणन् में शीश धरयो जब, कौन बिगाड़ करे, है तेरो।
जिनशासन में ऐसे गुरु का, दुर्लभ होवे है, पगफेरो।।
पंचम काल के चक्रव्यूह में, और उलझते जाते हम हैं।
कर्म वेदना बढ़ती जाये, पाप को संचय कियो घनेरो।।
मानव तो हम सब कहलाये, मानवता कहीं नज़र ना आये।
भूख, भोग और अहम् के कारण, जीवन में घनघोर अंधेरो।।
श्रद्धा में विश्वास जमायें, ज्ञान-आचरण में हम लायें।
सद्गुरुओं के सत्संगों से, पुण्य लाभ होवे बहुतेरो।।

-2/175, जवाहर नगर, जयपुर (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (29)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह दूसरी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 सितम्बर 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.51 से 115 तक से प्रश्न)

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:-

1. आचार्यों को प्रवचन की......हेतु गादी-तकिये, सिंहासन पर बैठना चाहिए।
2. अभयदेवसूरि ने 9 आगमों की........ की रचना की।
3. ये सब के सब नियम शास्त्रों से .... विपरीत हैं।
4. श्रमणों ने उपाध्याय धर्मसागर को .... घोषित कर संघ से बहिष्कृत कर दिया।
5. चैत्यवासी साधु को .... में कभी निवास नहीं करना चाहिए।
6. शनैः शनैः वाद्य यन्त्रों की धुन के साथ भजनों और कीर्तनों से ... की सरिताएँ प्रवाहित होने लगीं।
7. वर्द्धमानसूरि की परम्परा के श्रमण गणधरों द्वारा .... शास्त्रों को ही प्रमाण मानते थे।
8. चैत्यवासियों ने ..... की सुविधा के लिए ऐसे दस नियम बनाये।

9. .... की शिथिल नींव पर चैत्यवासी का विशाल भवन खड़ा किया गया।

10. जो हाथ मां आव्यो तेने मूंड़ी ने, पोतना बाड़ा मा........माड़्या।

11. सुविहित परम्परा के श्रमणों को .... के लिए जाना कल्पनीय नहीं है।

12. गुजरात में वर्धमानसूरि और जिनेश्वरसूरि ने प्रथम बार .....की स्थापना की।

जोड़ी मिलानाः-

	अ		ब
13.	दुर्लभराजा	-	उद्यानवास
14.	सोमसुन्दर	-	प्रवचनविच्छेद
15.	भयावह	-	समवायांग सूत्र
16.	गर्व-दर्प	-	श्रमण जीवन
17.	ऐश्वर्यशाली	-	जिनेश्वरसूरि
18.	ज्ञाताधर्मकथा	-	मुनिसुन्दरसूरि
19.	तीर्थोच्छेद	-	भयाटवी
20	पर गृहवास	-	प्रमाद

किसने कहा?

21. रोग को उठते ही नष्ट कर देना, यही बुद्धिमत्ता है।

22. जब तक इस संशय को नहीं मिटाया जाएगा तब तक व्याख्यान नहीं उठेगा।

23. हे नृपशिरोमणि! गद्दी पर बैठने से साधु, लोगों में हंसी का पात्र बनता है।

24. चिन्ता-सागर में डूबे हुए किस कारण बैठे हो?

25. इनके मठ में जाओ और शास्त्रों के बस्ते लेकर शीघ्र आओ।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (27) का परिणाम

जिनवाणी जून, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 223 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- बलवन्त सिंह चोरडिया-झालरापाटन

द्वितीय पुरस्कार- मनोज कोठारी-उदयपुर (राज.)

तृतीय पुरस्कार- शकुन्तला खुशालचन्द जी-जलगांव (महा.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. अन्जना जैन-देवास
2. मधुबाला प्रमोदकुमार वोरा-इचलकरंजी (महा.)

3. ममता जैन-सवाईमाधोपुर (राज.)

4. सूर्यकला बाघमार-चेन्नई (तमिलनाडू)

5. वन्दना अनिल खींचा-सूरत (गुजरात)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता–Aarti Rajendramalji Mutha-Amaravati, Aarti tater-Jodhpur, Abhilasha hirawat-Mumbai, Anil Alokji Munuot-Ichalkaranji, **Anjana jain-Devas**, Anu jain-Hoshiarpur, Aruna jain-Hoshiarpur, Babulal K.Katariya-Hyderabad, **Balwant singh choradia-Jhalara Patan,** Bhagyawati tater-Jodhpur, Bhikamchand kothari-Chennai, Bhopal chand sathiya-Jodhpur, Chandan mal palrecha-Jodhpur, Chandni jain-Indore, Chandrakala mehta-Bangalore, Chirag jain-Sawai madhopur, Chitra bhandari-Jodhpur, Dal chand jain-jaipur, Dharam chandra dhammani-Ahmedabad, Divya daga-jaipur, Hansa devi surana-Bikaner, Harshit jain-Sawai madhopur, Hemlata jain-Beawar, Jaya bhandari-Beawar, Joharimal Chajjed-Jodhpur, Jyoti bhansal-Bangalore, K.kothari-jaipur, Kamal choradia-jaipur, Kamala surana-Jodhpur, Kamalesh gelda-Ajmer, Kanhaiyalal jain-Bhilwara, Kiran jain-Hoshiarpur, Kuntal kumari jain-jaipur, Kusum bafna-Chennai, Kusum singhvi-Jodhpur, Laxmi jain-Aligarh, **Madhubala pramod kumarji bora-Ichalkaranji**, **Mamta jain-Sawai madhopur**, Manila Parakh-jaipur, Manju Bhandari-Beawar, Manjula vasant kumarji jain-Mumbai, **Manoj kothari-Udaipur**, Meena choradia-Chennai, Meenabai rajkumarji nahar-Ichalkaranji, Meera jain lohiya-Sawai madhopur, Milap p.Lunawat-Ahmedabad, Mohani lodha-Ajmer, Narendra Gopichand Bomb-Mumbai, Neetu gulecha-Secunderabad, Nenchand bafna-Jodhpur, Nilima yogesh chopra-Ichalkaranji, Nirmala H.Surana-Bikaner, Prabha gulecha-Bangalore, Prakash bai premchand-Bhandara, Pramila mehta-jaipur, Pramila sajjanrajsa mehta-Bangalore, Pramila vinod kumar-Pali, Priya mehta-Jodhpur, Priyanka mukesh chopra-Ichalkaranji, Pukh raj jain-Ajmer, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Pushpa jain-jaipur, Pushpa kankariya-Raichur, R.padma bohra-Raichur, R.T.Jain-Jalgaon, Rajkumar batiya-pali, Rajkumari jain-Delhi, Ratan chand mehta-Jodhpur, Rishabjain-Bundi, Rohit oswal-jaipur, Sadhana dilipji gugale-Ichalkaranji, Sangeeta Baid-Chennai, Sangeeta Nainsukhji-Jalgaon, Saroj khabiya-Mysore, Saroj nahar-Delhi, **Shakuntala bai khushal chandji-Jalgaon**, Shanta mahendraji bafna-Nasik, Shantu Chamanji-Amaravati, Shashi kataria-Bhilwara, Shobha Nandlalji Gugale-Ichalkaranji, Shobha Rajendra jain-Jalgaon, Siddhi shubhendra bafna-Jodhpur, Sudha bhansali-Jodhpur, Sugan chand chajjed-Jodhpur, Sujata hirawat-Mumbai, Sumita navlakha-Kota, Sunil jain-Mysore, Sunita doshi-Beawar, Sunita singhvi-Chennai, Sunita tater-Jodhpur, Surepha ji nahar-jaipur, **Suryakala bagmar-Chennai**, Susheela E.Ranka-Julgaon, Susheela naginchand kucherima-Julgaon, Susheela S.suhana-Nasik, Upma chowdhary-Ajmer, Usha G.Surana-Jaipur, Usha Lunawat-Ajmer, **Vandana Anil Khicha-Surat**, Vandana punamia-Pali, Vidhya singhvi-Badnavear, Vijaya devi rikabchandji bagmar-Gajendrged, Vinod kumar-Jodhpur.

24 अंक प्राप्तकर्ता– Anil kumar jain-kota, Anurag surana-Ajmer, Beena Abar-Chennai, Bhagwanraj singhvi-Pali, Chetanaji bothra-Mumbai, Deepmala singhvi-pali, Devendra nath modi-Jodhpur, Dharmesh punamia-Pali, Dilkushraj jain-Vadodara, Dr.Padam chand munuot-jaipur, Ghewarchand chajed-Bellary, Gyanchand kothari-Ajmer, Hansraj jain monhot-jaipur, Hema jain-jaipur, Hemraj surana-jaipur, Javer narendra shah-Belgaum, Kalpana dhakad-Gurgaon, Kamala modi-Jodhpur, Kamala singhvi-jaipur, Kanak jain-Delhi, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Kewel Nitta Kakaria-Bangalore, Khimji R.Shah-Mumbai, Kusum pareshji punamia-Ichalkaranji, Madanlal sancheti-Hyderabad, Madhubala ostwal-Nasik, Manju jain-Karauli, Manju kanstiya-Kolkata, Meena vijay bora-Mumbai, Meenu jain mehta-jaipur, Minisha jain-Ajmer, Munnalal bhandari-Jodhpur, Natmal kothari-Balod, Neelam jain-Ajmer, Neelam jain-

Gurgaon, Nutan Ajitji Bhandari-Kolhapur, Pooja nitinji bora-Ichalkaranji, Poonam jain-Faridkot, Prasan kotari-Jodhpur, Pratibha jain-Chittorgarh, Premlata saand-Pali, Rajani jain-Sawai madhopur, Rajeshjain-Sawai madhopur, Ranulal M.kochar-Nasik, Ratan karnawet-jaipur, Reema jain-Ludhiana, Reena kothari-Balod, Rekha kothari-Ajmer, Sagarmal jinahar-Chittorgarh, Saroj devi-Mysore, Seema dhing-Udaipur, Seema kataria-Udaipur, Shilpa surana-Ajmer, Shobha nahar-Secunderabad, Subash mohanlalji dhadiwal-Thane, sudha dagar-Bikaner, Suneka A.Bhandari-Nasik, Sunita-jaipur, Sunita oswal-jaipur, Suresh chand jain-Alwer, Suresh kumar saand-Pali, Sushila j.Begani-Bikaner, Suvarna nitinji bora-Ichalkaranji, Swathi sreepalji chopra-Mysore, Ugam mulchand dosi-Secunderabad, Urmila mehta-jaipur, Vibha makkana-kota, Vijaya laxmi-Ajmer, Vikas bamb-Mumbai, Vimal ranralal kochar-Nasik, Vinod jain-shimoga.

23 या उससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Ashish jain-chauth ka Barwara, Babu lal Jain-jaipur, Bharati sunilji surpure-Ichalkaranji, Bhaveka M.Shah-Belgaum, Heera Rameshji Karnawat -Ahmadnagar, Indu kamleshji jain-Malad, Lata anchaliya-Dhuliya, Madhuji pipada-Bhilwara, Manju Dilip jain-Mumbai, Maya alijar-Secunderabad, Nilam chipar-jaipur, Prasan gang-Mumbai, Preeti gugaliya-Bhilwara, Preeti khincha-jaipur, Pushpa navalkha-jaipur, R.M.surana-Solapur, Rakhi jain-Dooni, Rikhab raj bohra-Delhi, Sarita manoj babel-Ichalkaranji, Shakuntala bohra-Secunderabad, Shashikala P.lunavat-Nasik, Shiromani jain-Shahajapur, Shweta jain-Dooni, Smita nilishji muthiyan-Ichalkaranji, Sushila bhandari-Bangalore, Trisula jain-Nagpur, Basanta madnlalji sanklecha-Dhuliya, Chandrakala dilipji ranka-Jalgaon, Devi lal bhanawat-Udaipur, Kanchan lodha-Nasik, Kiran pramod tated (jain)-Dewas, Lalita Ajit Bafna-Nagpur, Leena jain-Chiplun, Nirmala kumarji hirawat-jaipur, Pramila B. pokhrana-Dhule, Pramila kothari-Jodhpur, Prem jain-Alwer, Premlata lodha-jaipur, Priyanka nagaraj sancheti-Jalgaon, Sangeeta A.Singhvi-Nasik, Seema jain-Aligarh, Shashikala sukhlecha-Halsur, Sushma dhariwal-jaipur, Ugama devi-Bangalore, Kamal ankur kothari-Baroda, Shabnam kdrh-jaipur, Yugal nemichand ranka-Ahmedabad, Vimla N.Mehta-Jodhpur.

लेखकों से निवेदन

- 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका के लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी मौलिक रचनाएँ ही जिनवाणी को प्रेषित करें। यदि अपनी रचना में किसी आचार्य, विद्वान्, कवि आदि की कृति से उद्धरण देते हैं तो उनका नामोल्लेख अवश्य करें। लेखन के क्षेत्र में यह प्रामाणिकता आवश्यक है।
- यदि कोई संकलित रचना प्रेषित करते हैं तो उसके मूल स्रोत एवं रचनाकार का नामोल्लेख अवश्य करें।

समाचार प्रकाशन

- जिनवाणी मासिक पत्रिका के प्रत्येक प्रकाश्यमान अंक में वे ही समाचार प्रकाशित हो सकेंगे जो उस माह के पूर्व 25 तारीख तक 'जिनवाणी' के जोधपुर स्थित कार्यालय को प्राप्त हो सकेंगे। विलम्ब से प्राप्त समाचारों को प्रकाश्यमान अंक में सम्मिलित करना सम्भव नहीं हो सकेगा।

-सम्पादक, जिनवाणी,

द्वारा स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

जिनवाणी की श्रेष्ठ रचनाओं के पुरस्कार घोषित

जिनवाणी के जनवरी से दिसम्बर 2010 एवं जनवरी से दिसम्बर 2011 के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ रचनाओं का चयन दस सदस्य समिति ने मूल्यांकन के आधार पर किया है। परिणाम इस प्रकार हैं-

(1) आध्यात्मिक/ नैतिक शिक्षा परक लेख/चिन्तन परक लेख/संगोष्ठी आलेख

1. जैन धर्म की हिन्दू धर्म से पृथक्ता (नवम्बर-2010)
   डॉ. अनेकान्त कुमार जैन 5100/-
2. अध्यात्म और भ्रष्टाचार (दिसम्बर- 2011)
   डॉ. दयानन्द भार्गव 5100/-

(2) शोधालेख/ वैज्ञानिक लेख/स्वास्थ्य विषयक लेख/प्रासंगिक लेख

1. इक्कीसवीं शताब्दी का धर्म : जैन धर्म (अगस्त-2010)
   श्री मुजफ्फर हुसैन 5100/-
2. जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा (जुलाई-अगस्त-2011)
   डॉ. जीवराज जैन 5100/-

(3) आगमिक/तात्त्विक/जीवन-शैली/आचार्य हस्ती शताब्दी संबद्ध लेख

1. अमरत्व का वह उपासक (सितम्बर-2010)
   श्री सम्पतराज जी चौधरी 5100/-

(4) अंग्रेजी भाषा की रचनाएँ

1. Religion and Happiness (अगस्त-2010)
   श्री के.एस. गलुण्डिया 5100/-
2. Ṛṣibhāsita : A Prākṛta Work of Universal Value 1-2 (जुलाई-अगस्त-2011)
   प्रो. सागरमल जैन 5100/-

(5) युवा स्तम्भ-

1. अहिंसामय जीवन (अप्रेल-2010)
   श्री चतरसिंह मेहता 5100/-
2. विकास की अवधारणा में आध्यात्मिक मूल्यों का महत्त्व (जुलाई-2011)
   श्री सलमान अर्शद 5100/-

(6) नारी स्तम्भ-

1. छोटी बहू का जादू (अक्टूबर-2010)
   श्री जशकरण डागा 5100/-

2. नारी में संस्कार सर्जन का बोध (दिसम्बर-2011)
डॉ. मंजुला बम्ब 5100/-

(7) बाल स्तम्भ-

1. कोई नहीं (2010)
2. बोरियत से कैसे बचें? (सितम्बर-2011)
श्री कैलाश जैन 5100/-

(8) श्रेष्ठ कविता-

1. हम नन्हें-नन्हें श्रावक हैं (जुलाई-2010)
डॉ. दिलीप धींग 3100/-
2. रत्नत्रय के दीपकों से संयम-ज्योति जगमगा लो (अप्रेल-2011)
श्री देवेन्द्रनाथ मोदी 3100/-
3. हे मना! (जून-2011)
श्री निलेश कुमार जैन 3100/-

(9) संवाद स्तम्भ/प्रेरक प्रसंग/क्षणिकाएँ/विचार/एकांकी/नाटक

1. अध्यात्म-चेतना के उन्नायक (मार्च-2010)
डॉ. रमेश मयंक 3100/-
2. विनय और अहंकार में अन्तर (मई-2011)
श्री नितेश नागोता जैन 3100/-

(10) विशेषांक आलेख

1. जैन साधना में सद्गुरु का महत्त्व (दिसम्बर-2010 एवं जनवरी-2011)
प्रो. पुष्पलता जैन 5100/-

(11) नवीन/विशेष लेखन

1. आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ
श्री धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार 5100/-
2. धरोहर (धारावाहिक) (जनवरी-फरवरी 2010)
श्रीमती पारसकंवर भंडारी 5100/-

उपर्युक्त पुरस्कारों का वितरण यथावसर किसी समारोह में किया जाएगा। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमल जी सुराणा के सौजन्य से प्रदान की जाएगी। पुरस्कार हेतु संत-सतीवृन्द की रचनाओं एवं संकलित रचनाओं को सम्मिलित नहीं किया गया है।

-विरदराज सुराणा, मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर के सान्निध्य में जयपुर चातुर्मास में धर्माराधना का अपूर्व उत्साह

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा का महावीर नगर, जयपुर के सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मास-प्रवेश से ही धर्माराधना एवं जिनवाणी-श्रवण का उत्साह बना हुआ है। शहर से दूर होने पर भी प्रवचन में सराहनीय उपस्थिति रहती है। रविवार को 1000-1200 श्रोताओं से प्रवचन सभागार खचाखच भरा रहता है। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा, 3 जुलाई 2012 को चौमासी पर्व के दिन भी श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति आकर्षक रही। प्रवचन सभा में जो पहले पहुँचा उसे स्थान मिल गया, बाद में आने वालों को बाहर बैठकर या खड़े रहकर संतोष करना पड़ा। चतुर्विध संघ की भव्य उपस्थिति से धर्मसभा का स्वरूप समवसरण जैसा प्रतीत हो रहा था। अधिकतर भाई-बहिनों ने तीन से पाँच सामायिकें कीं। एकाशन एवं उपवास के प्रत्याख्यान अच्छी संख्या में हुए। दयाव्रत, आयंबिल, नीवी एवं बड़ी तपस्या करने वालों ने भी अपने पुरुषार्थ का परिचय दिया। वर्षों पश्चात् आचार्यप्रवर के चातुर्मास का योग मिलने से सभी श्रावक-श्राविका हर्षित एवं पुलकित हैं। शहर के विभिन्न भागों से श्रद्धालु श्रोताओं की नियमित उपस्थिति रहती है।

चातुर्मास में प्रातःकालीन प्रार्थना श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. कराते हैं। प्रवचन श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. फरमा रहे हैं। पूज्य आचार्यप्रवर प्रायः प्रवचन सभा में पधार रहे हैं। रविवार, पर्व तिथि एवं बाह्य संघों के आगमन के दिन आचार्यप्रवर प्रवचनामृत का पान कराते हैं। प्रायः मांगलिक से पूर्व संक्षिप्त मार्मिक उद्बोधन से आचार्यप्रवर अनुगृहीत कर रहे हैं। प्रवचन सभा का संचालन मंत्री श्री विमलचन्द जी डागा करते हैं। दोपहर में 2 से 3 बजे पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में आगम वाचनी होती है। सम्प्रति महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आचारांग सूत्र का वाचन कर रहे हैं। संत-सतीवृन्द सहित जिज्ञासु भाई-बहिनों की अच्छी उपस्थिति रहती है। वाचनी सरल एवं सुबोध भाषा में विवेचन सहित होने के कारण हृदयग्राही है। दिन में 3 से 4 बजे तक सीखने-सिखाने का क्रम चल रहा है। संत भगवंतों की सन्निधि में स्वाध्याय रसिक बन्धु अपने-अपने रुचि के विषयों का ज्ञानार्जन कर रहे हैं। प्रातःकाल एवं अन्य उपलब्ध समय में भी श्रावक-श्राविका लाभ लेने का बराबर लक्ष्य रखते हैं। उभयकाल प्रतिक्रमण करने वालों की

संख्या भी पर्याप्त है। अनेक श्रावक गुरुदेव की पावन सन्निधि में एवं श्राविकाएँ महासती मण्डल की सन्निधि में दोनों समय प्रतिक्रमण कर रहे हैं। पर्व तिथि, शनिवार एवं रविवार को संवर करने वालों की संख्या 100 के लगभग रहती हैं। सामान्य दिनों में भी 50 के लगभग संवर-आराधना करने वाले उपस्थित रहते हैं। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री राजेन्द्र जी पटवा की संवर के लिए प्रतिदिन प्रेरणा रहती है।

अन्य धार्मिक प्रवृत्तियाँ-

- प्रत्येक रविवार को प्रातः बालक-बालिकाओं का धार्मिक संस्कार शिविर चल रहा है। प्रारम्भ में यह संख्या 350 थी जो बढ़कर 500 से अधिक हो गई है।
- 15 से 19 जुलाई तक पचरंगी के अन्तर्गत दयाव्रत की आराधना हुई। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा की गई प्रेरणा से 150 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने दयाव्रत का आराधन किया। पाँचों ही दिन वातावरण धर्ममय रहा।
- 15 से 20 जुलाई के मध्य स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 165 स्वाध्यायियों ने लाभ लिया।
- 21 एवं 22 जुलाई को संघ के शीर्ष पदाधिकारियों की संघ-उन्नयनपरक चिन्तन बैठक आयोजित हुई, जिसमें संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन श्री मोफतराज जी मुणोत, शासनसेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी, पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा सहित अनेक सदस्यों ने भाग लिया।
- 23 जुलाई को प्रवचन सभा समय में प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सागरमल जी जैन, शाजापुर ने सामायिक, स्वाध्याय और ध्यान की जीवन में उपयोगिता विषय पर वक्तव्य दिया। विद्वान् वक्ता ने लगभग 40 मिनिट अपने विचारों का सम्प्रेषण करते हुए कहा कि अपने भीतर के कचरे को जानना स्वाध्याय है, उदित होने वाले विकारों के समय समता में रहना सामायिक है तथा पूर्व संचित आंतरिक कचरे का क्षय ध्यान-साधना द्वारा संभव है।

तपाराधना

- पूज्य आचार्यप्रवर के जयपुर पदार्पण से 26 जुलाई तक 15 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत के खंद पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से ग्रहण किये हैं। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने पांच महीने के लिये ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया।
- लगभग 15 अठाई, 9 दिवसीय पाँच एवं एक अर्द्धमासखमण हो चुका है। कुछ भाई-बहिनें उग्र तपस्या के लक्ष्य से आगे बढ़ रहे हैं। एकासन, उपवास, दया एवं आयंबिल की लड़ी चल रही है। साधक आत्माएँ तपाराधन में पुरुषार्थ कर रही हैं। व्याख्यात्री महासती

श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. दीर्घ तपाराधन में आगे बढ़ने का क्रम बनाए हुए हैं। महासती श्री देवांगना जी म.सा. 5 जुलाई से उग्र तपस्या में अपने कदम बढ़ा रही हैं। आचार्य हस्ती शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत छात्र उपवास एवं संवर-साधना में अच्छा योगदान कर रहे हैं। छात्र विकास ने अठाई एवं गजेन्द्र ने नौ की तपस्या की है।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 2 लालभवन में विराज कर अनुभवी साधक श्री मोहनलाल जी मुथा से आगम एवं थोकड़ों का ज्ञान कर रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 चौमासी के दूसरे दिन से बारह गणगौर के स्थानक में विराज रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 9 महावीर नगर में विराज रहे हैं।

दर्शनार्थ आने वाले श्रावक-श्राविकाओं का क्रम अनवरत बना हुआ है। दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, बैंगलोर, पूना, जलगाँव, लोनावला, बीजापुर, शोरापुर, हैदराबाद, इन्दौर, कोटा, हिण्डौन, भरतपुर, अलवर, जोधपुर, पाली आदि क्षेत्रों से श्रद्धालु गुरुभक्त जिनवाणी श्रवण एवं धर्माराधना का लाभ ले चुके हैं। सवाईमाधोपुर पोरवाल क्षेत्र से तो गुरुभक्तों का अच्छी संख्या में प्रतिदिन आगमन होता है। जयपुर संघ की अतिथि सत्कार एवं स्वधर्मी वात्सल्य की भावना प्रमोदजन्य है। स्व. श्रावकरत्न श्री केवलमल जी लोढ़ा के सकल परिवार की वर्षों से लगी आशा सफलीभूत हुई है। समस्त परिवार समर्पण भावना के साथ समयदान दे रहा है। जयपुर संघ आतिथ्य सेवा में पूर्णतः तत्पर है।

चातुर्मास स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, सेन्ट्रल बैंक की गली, टोंक रोड, जयपुर-302018, फोन नं. (0141) 3101991

सम्पर्क सूत्र-

संयोजक-चातुर्मास समिति- श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-0141-2620809, 98281-63380

कार्यालय व्यवस्था समिति- श्री नरपतचंद जी सिंघवी-9829793416, श्री एन.एल. जैन-0141-2711518

आवास व्यवस्था समिति- श्री अनिलकुमार जी सिंघवी-9829198293, श्री पुखराज जी जैन-9414042498, श्री सुनील जी हीरावत-9828602030, श्री सुभाष जी चोरडिया-9829854854

यातायात व्यवस्था समिति- श्री संजयकुमार जी कोठारी (संजय)-9829755265, श्री वीरेन्द्रजी चोरडिया (वीरूजी)-9828406869

उपाध्यायप्रवर के मेड़ता चातुर्मास में धर्मध्यान की अपूर्व लहर

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 का मेड़ता सिटी चातुर्मास ऐतिहासिकता की ओर आगे बढ़ रहा है। प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्र-वाचन में उत्साहजनक उपस्थिति रहती है। प्रवचन में हर व्यक्ति जिज्ञासु बनकर, पिपासु बनकर, सांसारिक व्यवसाय आदि कार्यों को छोड़कर प्रवचन का लाभ ले रहा हैं। पूरा हॉल एवं चारों ओर के बरामदे खचाखच भर जाते हैं। प्रवचन सभा में जब तपस्याओं के प्रत्याख्यान का दौर चलता है तब तपोमय वातावरण को देखकर हर किसी के मन में तपस्या की उमंग जग जाती है। जिन्होंने पहले कभी तपस्या नहीं की, वे भी तपस्या कर रहे हैं। 21 जुलाई तक के अल्पकाल में ही 11, 10, चार 9 दिवसीय एवं नौ अठाई तप हो चुके हैं। दो पचोले और पन्द्रह तेले तथा पचरंगी हो चुकी है। पन्द्रह, सात, छः आदि की तपस्याएँ आगे बढ़ रही हैं। पूरा शहर तप, दयाव्रत एवं संवर की साधना में रंग गया है। हर परिवार में तपस्या की होड़ लगी हुई है। प्रत्येक रविवार को बालक-बालिकाओं का धार्मिक शिक्षण शिविर गतिशील है। बालकों में धार्मिक ज्ञानार्जन का उत्साहित वातावरण देखकर बड़े-बुजुर्गों के मन में आत्म-संतोष का भाव उभर रहा है। दर्शनार्थी बन्धुओं का निरन्तर आवागमन बना हुआ है।

चातुर्मास-स्थल- वीर भवन, जयमल जैन छात्रावास, पुराने राजकीय अस्पताल के पास, मीरा मन्दिर मार्ग, पो. मेड़ता सिटी-341510, जिला-नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री हस्तीमल जी डोसी-मंत्री, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, डोसी ब्रदर्स, गांधी चौक, पो. मेड़ता सिटी-341510, जिला-नागौर (राज.), फोन नं. 01591-220181, 220772, 9413368997, 9414119152
2. श्री गौतमराज जी सुराणा, मो. 9940558888, 9460067122
3. श्री महावीर जी ओस्तवाल, मो. 9414608948

महासती-मण्डलों के चातुर्मास में धर्माराधन

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7 घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में विराज रहे हैं। चातुर्मास में शक्तिनगर के युवक प्रति सप्ताह प्रार्थना के समय आकर सामायिक में प्रार्थना के पश्चात् साध्वीप्रमुखा जी से 45 मिनिट धार्मिक प्रश्नोत्तरों के माध्यम से निरन्तर अपने ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं। प्रतिदिन

लक्ष्मीनगर-पावटा, हाउसिंग बोर्ड से बस द्वारा अनेक श्रावक-श्राविका घोड़ों का चौक आकर प्रवचन का लाभ ले रहे हैं। दया-उपवास के मासखमण चल रहे हैं। दस तेलों के अलावा 7 एवं 6 की तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। प्रत्येक अष्टमी को लगभग 60-65 नींवी तप सामूहिक रूप से किया जा रहा है। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. के पुण्य-स्मृति दिवस पर चार पचरंगी दया एवं उपवास की हुईं। व्याख्यान के पश्चात् धार्मिक प्रश्नोत्तर का आयोजन होता है। दोपहर 2 से 3 बजे तक स्थानांग सूत्र की वाचनी हो रही है तथा सीखने वाली बहिनों को सती-मण्डल थोकड़े आदि का ज्ञान करा रहा है।

कंवलियास- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। प्रातः प्रवचन में सभी श्रावक सामायिक वेशभूषा में जिनवाणी का रसास्वादन कर रहे हैं। आयंबिल, एकासन तप, उपवास की लड़ी चल रही है। दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। कंवलियास गुलाबपुरा से 21 कि.मी. दूर है, जहाँ से हर बीस मिनिट में साधन मिल जाता है। भीलवाड़ा से कंवलियास की दूरी 45 कि.मी. एवं अजमेर से 91 कि.मी. है। ब्यावर से प्रायः बसें मिलती रहती हैं।

फुलियाकलां (भीलवाड़ा)- सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा तीन 19 जुलाई को धनोप के निकटवर्ती ग्राम फुलियाकलां में आचार्यप्रवर की आज्ञा से साधु मर्यादानुसार धनोप से (चातुर्मास प्रवेश पश्चात्) धर्माराधना हेतु पधारे। उनके प्रवेश पर छात्रावास के बच्चों तथा ग्राम के जैन-अजैन भाई-बहिनों की सराहनीय उपस्थिति थी। मंगलप्रवेश के दिन से ही उपवास, आयम्बिल एवं एकाशन की लड़ियाँ एक साथ निर्विघ्न रूप से चल रही हैं। सुबह प्रार्थना एवं 9 बजे से व्याख्यान तथा शाम को प्रतिक्रमण का कार्यक्रम लगातार चल रहा है। लगभग पाँच बन्धु प्रतिक्रमण एवं दस श्राविकाएँ दस थोकड़े सीख रही हैं।

कोयम्बतूर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में कोयम्बतूर चातुर्मास में 24 तीर्थंकर की आराधना व 20 बोल की साधना हुई, जिसमें 56 बहिनों ने भाग लिया। सभी बहनों ने 24 दिन की इस आराधना में स्थानक भवन में रहकर महासती जी के निर्देशानुसार साधना की। इस साधना कार्यक्रम के समापन कार्यक्रम में अतिथि के रूप में संघ-संरक्षक मण्डल के चेयर पर्सन श्री मोफतराज जी मुणोत, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, सुश्रावक श्री ज्ञानराज जी मेहता, सुश्रावक श्री बालचन्द जी बोथरा पधारे।

विज्ञान नगर-कोटा- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 के चातुर्मास में प्रारम्भ से ही तेले, उपवास, एकासन, आयम्बिल/नींवी की लड़ी निरन्तर चल रही है। 15 जुलाई को एकासन दिवस पर 40 सामूहिक एकासन तप हुए। 18 एवं 19 जुलाई को धर्मचक्र की आराधना की गई। 23 जुलाई तक यहाँ 3 अठाई तप, 5 एवं ग्यारह तेले की तपस्या तथा 8

बेले हो चुके हैं। दयाव्रत की भी आराधना हुई है। प्रातः प्रार्थना के पश्चात् 8.45 बजे प्रवचन एवं दोपहर 2 बजे आगम-वाचनी होती है। प्रत्येक रविवार को विशेष धर्माराधना होती है। इस दिन बालकों का संस्कार शिविर प्रारम्भ किया गया है, जिसमें 100 से अधिक बच्चे भाग ले रहे हैं। परिवार-परिचय के साथ पूरे परिवार के सदस्यों को धर्म की प्रेरणा दी जाती है। सप्ताह में दो बार महिला मण्डल की सदस्याएँ प्रातः 10 से 12 बजे तक थोकड़ों का अभ्यास करती हैं। स्थानीय स्तर पर माह में दो बार परीक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है।

नोट- सभी महासती-मण्डल के चातुर्मास सम्पर्क-सूत्र हेतु जिनवाणी का माह जून 2012 का अंक द्रष्टव्य है।

वीर परिवारों का सम्मान-समारोह 22-23 सितम्बर को जयपुर में

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा चातुर्मासार्थ गुलाबीनगरी-जयपुर में विराजित हैं। परमहर्ष का विषय है कि यह वर्ष परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं परमपूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का दीक्षा अर्द्ध शताब्दी वर्ष है, जिसे तप-त्याग, ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधनापूर्वक मनाया जा रहा है। जिनशासन सेवा में अपनी संतति व परिजनों को समर्पित करने वाले सुज्ञ सुश्रावकगण व सुश्राविकाओं का योगदान अभिनन्दनीय है। संयमसुमेरु गुरु हीरा-मान के दीक्षा अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर संघ ने वीर परिवारों का अभिनन्दन करने का निर्णय लिया है। यह अभिनन्दन कार्यक्रम 22-23 सितम्बर 2012 को जयपुर में आयोजित होगा। सभी वीर परिवारों के सभी सदस्यगण इस अवसर पर सादर आमंत्रित हैं। वीर परिवार के सभी सदस्यगण इस सम्मान समारोह में अवश्य पधारें, परन्तु कितने सदस्य कब पधार रहे हैं इसकी अग्रिम जानकारी सम्पर्क-सूत्र पर अवश्य प्रदान करें, जिससे हम उनकी आवास व यातायात व्यवस्था को मूर्तरूप दे सकें। वीर परिवार सम्मान-समारोह में पधारकर संघ को कृतार्थ करेंगे, ऐसी आशा है। जयपुर पधारने पर सभी वीर परिवारजनों को आराध्य गुरुवर्य सहित संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सेवा-भक्ति का सहज सुयोग भी प्राप्त होगा।

सम्पर्क सूत्रः-

1. चातुर्मास स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, सेन्ट्रल बैंक की गली,

टोंक रोड़, जयपुर-302018, फोन नं. (0141) 3101991

2. श्री विनयचन्द जी डागा, मोबाइल-9314506509
3. श्री आनन्द जी चौपड़ा, मोबाइल-7568620000
4. श्री नरपतचन्दजी सिंघवी, फोन नं. 0141-2553416/98297-93416

पूरणराज अबानी-महामंत्री

संघ की साधारण सभा का आयोजन अक्टूबर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा रविवार, 21 अक्टूबर 2012 को दोपहर 1 बजे जयपुर में रखी गई है। जयपुर में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 12 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ भी प्राप्त होगा। संघ के सभी सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि संघहित में आप बैठक में कोई सुझाव रखना चाहें तो अपने सुझाव लिखित में संघ के प्रधान कार्यालय को 21 सितम्बर 2012 तक भेजने की कृपा करें। संघहित के उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार व निर्णय करने का हमारा प्रयास रहेगा। **संघ-सदस्यों को साधारण सभा में भाग लेने की आप अपने क्षेत्र में सूचना करें।** *-पूरणराज अबानी, महामंत्री*

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों का मनोनयन/चुनाव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा 21 अक्टूबर 2012 को जयपुर में रखी गई है। वार्षिक साधारण सभा में आगामी तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए संघाध्यक्ष/मण्डल अध्यक्ष/युवक परिषद् अध्यक्ष व श्राविका मण्डल अध्यक्ष का मनोनयन/चुनाव किया जाना प्रस्तावित है। उपर्युक्त पदों के लिए नामों पर चिन्तन करने हेतु संघ संरक्षक मण्डल की बैठक शनिवार, 20 अक्टूबर 2012 को जयपुर में होगी।

इस हेतु आप कोई भी नाम/सुझाव देना चाहें तो संघ-संरक्षक मण्डल की बैठक के पूर्व 21 सितम्बर 2012 तक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत (संयोजक, संरक्षक मण्डल), मुणोत विला, वेस्ट कम्पाउण्ड फिल्ड लेन, 63-के, भूला भाई देसाई रोड, मुम्बई-400026(महा.), ई-मेल-mpm@kalpataru.com अथवा संघ के प्रधान

कार्यालय अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) के पते पर भिजवाने का कष्ट करावें। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री*

संघ द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमंत्रित

आचार्य श्री हस्ती-स्मृति सम्मान- जैन आगम, जैन दर्शन व जैन जीवन पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध व जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान पर।

युवा प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

1. **प्रशासनिक चयन-** राज्य एवं केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
2. **प्रोफेशनल विशिष्ट-** डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट, कम्पनी सचिव, व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
3. **शोध-** वैज्ञानिक खोज (अंहिसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली) हेतु।
4. **संघ सेवा-** चतुर्विध संघ-सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक-लेखन आदि के आधार पर।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)-

कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा देने पर। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष की छूट दी जा सकेगी।)

गुणी-अभिनन्दन-

1. **तपस्या-** कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।
2. **अन्य-** सेवा, साधना, संघ-उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान।

नोटः- उक्त सम्मान हेतु अपनी प्रविष्टियाँ 05 अक्टूबर, 2012 तक संघ कार्यालय के इस पते पर भिजवाएँ।

पूरणराज अबानी-महामंत्री,

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक,

जोधपुर-342001 (राज.),

फोनः- 0291-2636763, 2641445

श्राविका मण्डल द्वारा अध्यात्म चेतना शिविर जयपुर में

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की ओर से जयपुर में परमपूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में 31 अगस्त से 2 सितम्बर 2012 तक अध्यात्म-चेतना शिविर का आयोजन जैन स्थानक, महावीर नगर, टोंक रोड पर रखा गया है। सभी इच्छुक श्राविकाएँ 30 अगस्त के सायंकाल तक शिविर स्थल पर पहुंचने का लक्ष्य रखें। **2 सितम्बर 2012 को अपराह्न 4 बजे अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक रखी गयी है, जिसमें सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थित है।** -शशि टाटिया, महासचिव

षट् दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

स्वाध्यायियों के ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु स्वाध्याय संघ द्वारा आचार्यप्रवर के सान्निध्य में प्रतिवर्ष स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाता है, जिससे आचार्यप्रवर के साथ-साथ मुनिवृन्दों का आशीर्वचन स्वाध्यायियों को प्राप्त हो सके। इसी उद्देश्य से षट्दिवसीय स्वाध्याय शिविर का आयोजन दिनांक 15 जुलाई से 20 जुलाई तक किया गया। इस शिविर में जोधपुर, सवाईमाधोपुर, आलनपुर, अलीगढ़, बजरिया, बेगूं, देवली, जरखोदा, खेरली, कोटा, कुश्तला, इन्द्रगढ़, सुमेरगंजमण्डी, नदबई, सूरत, ब्यावर तथा स्थानीय जयपुर शहर एवं जयपुर संस्थान के छात्रों सहित 165 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। इसके अलावा भी कुछ स्थानीय स्वाध्यायियों ने अंशकालीन ज्ञानार्जन प्राप्त किया। पर्युषण पर्व से पूर्व आयोजित इस शिविर में पर्युषण की तैयारी हेतु आवश्यक विषयों के साथ-साथ सूत्र-तत्त्वों की विशेष जानकारी हेतु भी विषय रखे गए। स्वाध्यायी कैसा होना चाहिए, उसकी दिनचर्या एवं उनसे अपेक्षाओं की जानकारी भी इस शिविर में दी गयी। इन सभी विषयों को प्रभावशाली तरीके से समझाने में श्री मूलचन्द जी बाफना-जोधपुर, श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्रीमती अकलकंवर जी मोदी-जोधपुर, श्रीमती शान्ता जी मोदी-जयपुर, श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर, श्री दिलीप जी जैन-जयपुर, श्री राकेश जी जैन-जयपुर जैसे विशिष्ट अध्यापकों की सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रात: 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक की दिनचर्या में प्रात:कालीन प्रार्थना एवं सामूहिक ध्यान के साथ शुरुआत होती, जिसमें विरक्ता बहन सुश्री नेहा जैन ने अपनी सेवाएं प्रदान की। स्वाध्यायियों की पुण्यवानी रही कि प्रवचन में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के ओजस्वी प्रवचन निरन्तर प्राप्त होते रहे। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के तात्त्विक एवं श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. के सत्प्रेरक मार्मिक प्रवचन को श्रवण कर सभी स्वाध्यायियों को आत्म-निरीक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके साथ ही आचार्यप्रवर ने महती कृपा कर प्रतिदिन श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. एवं महासती श्री

मुदित प्रभा जी म.सा. को भी स्वाध्यायियों को विशेष ज्ञानार्जन कराने हेतु आज्ञा प्रदान की। शिविरार्थियों को 4 कक्षाओं में विभक्त कर नियमित कालांशों के साथ ही प्रतिदिन 2 से 3 बजे तक सामूहिक कालांश भी रखा गया, जिसमें आदरणीय श्री डी.आर. मेहता साहब, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री शांतिलाल जी डूंगरवाल, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पदमचन्द जी गांधी, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री आनन्द जी चौपड़ा, युवारत्न श्री जितेन्द्र जी डागा, युवारत्न श्री विवेक जी लोढ़ा ने अपने-अपने विषयों पर स्वाध्यायियों को विशेष जानकारी प्रदान की। सभी कालांशों के पश्चात् सायं 5 से 5.20 तक दिन भर में हुई कक्षाओं के विषयों में शंका-समाधान का सत्र रखा गया। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् रात्रि में प्रतिदिन विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से स्वाध्यायियों की प्रतिभा का दिग्दर्शन किया गया। शिविर के सुव्यवस्थित संचालन में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर द्वारा सुन्दर व्यवस्था की गई। शासन सेवा समिति के सह संयोजक एवं जयपुर चातुर्मास समिति के संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, स्थानीय संघ मंत्री श्री विमलचन्द जी डागा, संस्थान संयोजक श्री विनयचन्द जी डागा ने समय-समय पर शिविर व्यवस्था की जानकारी ली। शिविर की सुन्दर व्यवस्था में श्री नरपतमल जी सिंघवी एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था हेतु श्री प्रमोद जी लोढ़ा की सेवाएं भी अनुकरणीय रही। *-राजेश भण्डारी, संयोजक*

पोरवाल क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 05 से 09 जुलाई 2012 तक पोरवाल क्षेत्र के बजरिया, सवाईमाधोपुर, श्योपुरकलां, कुश्तला, पचाला, चौरू, चौथ का बरवाड़ा, उनियारा, अलीगढ़, इन्द्रगढ़, सुमेरगंजमण्डी, जरखोदा, देई, दूणी, देवली, रामपुरा कोटा, विज्ञाननगर कोटा आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सचिव श्री सुभाष जी हुण्डीवाल-जोधपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं परामर्शदाता शाखा पोरवाल श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, पोरवाल शाखा के संयोजक श्रीमान् हरकचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर तथा स्वाध्याय संघ कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी-जोधपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान संचालित संस्कार केन्द्रों का निरीक्षण किया गया

तथा आवश्यक निर्देश अध्यापकों को प्रदान किए गए। लगभग सभी स्थानों पर रविवारीय संस्कार केन्द्र भी प्रारम्भ किए गए। पर्युषण में स्वाध्यायी आमंत्रित करने हेतु प्रेरणा की गयी। आगामी पर्युषण हेतु पोरवाल क्षेत्र से 14 मांगें प्राप्त हुई तथा 39 स्वाध्यायियों की स्वीकृति प्राप्त की गई। सभी क्षेत्रों पर स्थानक में आकर सामूहिक स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा की गई। *-नवरतन डागा, संयोजक*

संस्कार केन्द्र द्वारा प्रचार एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा 24 से 25 जुलाई को पोरवाल एवं पल्लीवाल क्षेत्रों में दो दिवसीय प्रचार-प्रसार यात्रा एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम रखा गया। इस यात्रा में संस्कार केन्द्र के सचिव श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, स्वाध्याय संघ शाखा पल्लीवाल के संयोजक श्री कृष्णमोहन जी जैन-हिण्डौन सिटी, शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री महावीरप्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी तथा कार्यालय सहायक श्री गजेन्द्र जी ने सेवाएँ प्रदान कीं। यात्रा के दौरान कुश्तला, महुवा, खेरली, वर्द्धमान नगर-हिण्डौन, मांगरोल, नसिया गंगापुर, गंगापुर सिटी, हरसाना, करौली, खौह, गढी सवाईराम, नदबई, दयौपुरा, सूरवाल आदि क्षेत्रों में संस्कार केन्द्र के छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। सभी स्थानों पर संचालित संस्कार केन्द्रों की समीक्षा की गई तथा अध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं को आवश्यक निर्देश प्रदान किए गए।

अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा स्वर्ण जयन्ती (50वें दीक्षा वर्ष) के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया है। निबन्ध का विषय **"पूज्य उपाध्यायप्रवर मानचन्द्र जी म.सा. का साधनामय जीवन"** रखा गया है। इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के बालक, बालिका, श्रावक एवं श्राविकाएँ भाग ले सकते हैं। निबन्ध मौलिक एवं तथ्यात्मक हो एवं 1000 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।

इस प्रतियोगिता में वरीयता से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को क्रमशः 1100, 750 एवं 500 रुपये का नकद पुरस्कार तथा दो सौ रुपये के 10 सांत्वना पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। कृपया अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर इस प्रतियोगिता को सफल बनावें। निबन्ध भिजवाने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर 2012 निर्धारित है। अपने निबन्ध निम्न पते पर भिजवाएँ- *श्री मनोज कांकरिया, बंगला नम्बर 03, समर्थ नगर, जालमविलास, पावटा बी रोड, जोधपुर (राज.) 342006*

स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम की परीक्षा 6 जनवरी को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा तत्त्वज्ञान का क्रमिक एवं व्यवस्थित अध्ययन करवाने हेतु जैनागम स्तोक वारिधि पंचवर्षीय पाठ्यक्रम गत वर्ष से प्रारम्भ किया गया है। इस पाठ्यक्रम में प्रत्येक प्रश्नपत्र में पाँच-पाँच थोकड़े रखे गए हैं। इस पाठ्यक्रम से संबंधित परीक्षा 6 जनवरी 2013, रविवार को मध्याह्न निम्नानुसार आयोजित की जाएगी-

प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष दोनों का प्रथम प्रश्नपत्र- 11.30 से 01.30 बजे तक
प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष दोनों का द्वितीय प्रश्नपत्र- 02.00 से 04.00 बजे तक

आवेदन पत्र, पाठ्यक्रम एवं संबंधित पुस्तकों के लिए सम्पर्क करें-सुशीला बोहरा, संयोजक-9414133879, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-9351589694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय- 0291-2630490, Email: info@jainratnaboard.com, Website : www.jainratnaboard.com

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है, जिनके परिवार की मासिक आय रुपये 10000/- से अधिक नहीं है, वे छात्रवृत्ति के लिये आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पत्र मंगाने के लिए, अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता मय पिन कोड, दो लिफाफों पर लिखकर प्रत्येक में 5/- रु. का डाक टिकट रखकर दोनों लिफाफों को पत्र में रखकर, निम्न पते पर भेजें। डाक टिकट लिफाफे पर चिपकाये नहीं। पत्र के साथ अंकतालिका भेजना आवश्यक है। आवेदन पत्र में छात्रवृत्ति क्यों चाहिये, कृपया लिखें। आप क्या करते हैं, आपकी और आपके परिवार की मासिक आय कितनी है। आय विवरण लिखकर भेजें। पत्रोत्तर का पता - ***श्री लाभचन्द जी कोठारी, सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापू नगर, जयपुर-302015, मोबाइल नं. 93140-03637***

विधवाओं एवं जरूरतमन्दों को सहयोग

श्वेताम्बर जैन ओसवाल समाज की विधवाएं एवं जरूरतमन्द परिवार जिनको जीवन यापन में कठिनाई है, जिन्हें कहीं से भी सहयोग नहीं मिल रहा हो और मासिक आय रुपये 3000/- से अधिक न हो, आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिए अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता मय पिन कोड, दो लिफाफों पर लिखकर प्रत्येक में 5/-रु. का डाक टिकट रखकर दोनों लिफाफों को पत्र में रखकर, आवेदन पत्र मंगाने के लिए निम्नलिखित पते पर

भेजें- *गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री लाभचन्द जी कोठारी, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड़, बापू नगर, जयपुर-302015, फोन : 93140-03536 (मोबाइल)*

करुणा अन्तरराष्ट्रीय : सुसंस्कारों का संवाहक (1995-2012)

करुणा अन्तरराष्ट्रीय भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड से मान्यता प्राप्त एक मुनाफा रहित संस्थान है, जो विगत 17 वर्षों से शिक्षण संस्थानों में 'करुणा क्लबों' का गठन कर, विद्यार्थियों में अहिंसा, करुणा एवं मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहा है। वर्तमान में देश के विभिन्न राज्यों में कुल 2000 करुणा क्लब, 35 करुणा केन्द्र एवं 800 कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित हैं।

संस्थान का उद्देश्य: करुणा क्लबों के माध्यम से विद्यार्थियों के बालमन में प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, अहिंसा, दया, आपसी सौहार्द, पशु कल्याण, पर्यावरण चेतना, नैतिकता, व्यसनमुक्ति, देशभक्ति आदि मानवीय मूल्यों की स्थापना करना, जिससे वे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 ए(जी) के अनुसार अपने मूलभूत कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होकर सुनागरिक बनने में सक्षम हों।

संचालित किए जाने वाले कार्यक्रम: (1) मानवीय शिक्षा पर आधारित अध्यापक एवं विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यक्रम (2) करुणा, अमन-शांति एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु रैलियों का आयोजन (3) करुणा विषयक रंगोली, कविता लेखन, गीत गायन, एकाभिनय, विचित्र वेशभूषा आदि अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताएं (4) शाकाहार मेला, प्रदर्शनियां, कार्यशालाएं एवं सी.डी. प्रदर्शन आदि (5) वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण, भूमंडलीय तापन (Global Warming) आदि के प्रति सतर्क करते हुए संगोष्ठियां एवं पोस्टर, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं। (6) मासिक न्यूजलेटर सहित करुणा, अहिंसा एवं शाकाहार विषयक साहित्य का प्रकाशन (7) राष्ट्रीय स्तर पर करुणा की कथाओं पर आधारित प्रतियोगिता (8) अखिल भारतीय/क्षेत्रीय सम्मेलनों एवं करुणा रत्न अवार्ड का आयोजन।

प्रमुख उपलब्धियां: (1) 1,00,000 विद्यार्थियों ने जो पूर्व में मांसाहार लेते थे, पूर्णत: शाकाहार अपनाने का संकल्प लिया। (2) 15 लाख विद्यार्थियों एवं 40 हजार शिक्षकगणों को मानवीय शिक्षा प्रशिक्षण का लाभ मिला। (3) 1,20,000 विद्यार्थियों ने चमड़े के जूते, बेल्ट एवं अन्य चमड़े की वस्तुओं का परित्याग किया।

समाजहित में करुणा क्लबों की उपयोगिता: अहिंसा,करुणा एवं शाकाहार का संदेश अध्यापकों/विद्यार्थियों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचता है, बच्चे सुसंस्कारित होते हैं। इस संस्थान के संपर्क में आने के पश्चात् मांसाहारी परिवार प्रेम से/अपनी इच्छा से शाकाहारी बनते हैं, जैसाकि अब स्पष्ट रूप से सिद्ध हो चुका है,पर्यावरण के प्रदूषित होने में

मांसाहार का चलन भी एक प्रमुख कारण है। अतः शाकाहार को प्रोत्साहन देने से परोक्ष रूप से पर्यावरण संरक्षण का कार्य भी होता है। अनेक करुणाप्रेमियों ने उन समस्त वस्तुओं का परित्याग किया है,जो किसी भी जीव-जंतु की हत्या या उन पर क्रूरता कर तैयार की गई हों।

यदि आप और हम मिलकर समस्त विद्यालयों में करुणा क्लबों का गठन कर उनको सक्रिय रखने में सक्षम हो जाते हैं तो हमारी भावी पीढ़ी सुसंस्कृत एवं समृद्ध होकर विश्व के समक्ष गौरवान्वित होगी। इस नेक कार्य से जुड़ने हेतु संपर्क करें-*कैलाशमल दुगड़ (98410 08585)-अध्यक्ष, सुरेश कांकरिया (94440 24446)-महामंत्री, करुणा अंतरराष्ट्रीय, 70, शंभुदास स्ट्रीट, चेन्नई-600001, दूरभाष: 25231714, 42061663, Email- karunainternational@yahoo.co.in*

पंचगव्य केन्सर उपचार थेरेपी निःशुल्क उपलब्ध

प्रदूषित खाद्यपदार्थ, धूम्रपान, मद्यपान, माँसादि का सेवन, गुटखा-पानमसाला आदि विषैले मुखवास, टी.वी., मोबाइल, कम्प्यूटर आदि उपकरणों द्वारा फैलने वाली रेडियोधर्मिता के दुष्परिणाम व अन्य अनेक कारणों से केन्सर के रोगियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। केन्सर की आधुनिक चिकित्सा पद्धतियाँ इतनी महंगी, दर्दनाक एवं दुष्परिणाम युक्त हैं कि चिकित्सा कराने वाला उसके दबाव से ही अधमरा हो जाता है। अतः अ.भा. गोसेवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पंचगव्य केन्सर उपचार थेरेपी के प्रेरक श्री केशरीचन्द जी मेहता के मार्गदर्शन में वाघलधरा (गुजरात) में आर.एम.डी. केन्सर हॉस्पिटल चार साल पहले शुरु हुआ था। इसमें केन्सर रोगी की उपचारादि सारी व्यवस्था निःशुल्क उपलब्ध है। सम्पर्क करें- *डॉ. बंशीलाल जैन (दुगड), पंचगव्य केन्सर उपचार मार्गदर्शक, पो. पाचोरा, जिला-जलगांव (महा.), मो. 09422774579*

देश के नौ राज्यों में गुटखा पर प्रतिबन्ध

गुटखा निकोटिन एवं तम्बाखू के कारण कैंसर उत्पन्न करता है, इसके साथ ही परिवार पर आर्थिक बोझ बढ़ाता है। इसका दुष्प्रभाव सन्ततियों पर भी पड़ता है। इस प्रकार के विभिन्न कारणों को देखते हुए देश के नौ राज्यों में राज्य सरकारों ने गुटखा के उत्पादन, विक्रय एवं भण्डारण पर रोक लगा दी है। वे नौ राज्य हैं- राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, केरल, हरियाणा, हिमाचल, छत्तीसगढ़ एवं झारखण्ड।

संक्षिप्त-समाचार

कोलकाता- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता के तत्त्वावधान में आचार्य श्री शोभाचन्द जी म.सा. की 86वीं पुण्यतिथि यहाँ चातुर्मास हेतु विराजित पूज्या महासती श्री विजयाश्रीजी म.सा. 'सुमन' एवं श्री वनिता श्रीजी म.सा. 'दर्शन' के सान्निध्य में मनायी

गई। इस अवसर पर डॉ. निर्मला पीपाड़ा ने आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. पर विचार व्यक्त किए। पुण्यतिथि के आयोजन पर प्रमुख श्रावकों सहित संघ के 50 सदस्यों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

नाथद्वारा- उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी 'कमल' के महनीय प्रयास से धर्मकथानुयोग, गणितानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग का संकलन कर प्रकाशन हुआ है। ये ग्रन्थ मूल एवं गुजराती भाषा के 11 भाग सहित रुपये 6000/- के हैं, किन्तु जन्म-शताब्दी वर्ष के शुभअवसर पर यह 1100/-+200(डाक खर्च) में उपलब्ध है। हिन्दी के अनुयोगों में द्रव्यानुयोग के भाग व चरणानुयोग के 2 भाग उपलब्ध हैं तथा शेष प्रकाशनाधीन हैं। इच्छुक व्यक्ति क्रय एवं सहयोग के लिए दीपावली तक निम्न पते पर सम्पर्क करें-महावीर मधुरम्, पूज्य मान गुरु जैन सेवा संस्थान, तहसील रोड, बस स्टेण्ड के पास, पो. नाथद्वारा (राजसमन्द), फोन-02953-234207, मो. 9828353568, 9928506675

नई दिल्ली- पर्युषण आराधना के अवसर पर 'जिन-स्तुति' पुस्तिका की यथेष्ट प्रतियां श्री संघ से निःशुल्क मंगवा सकते हैं। श्री रिखबचन्द जी जैन द्वारा संकलित, सम्पादित इस पुस्तिका में भजन संग्रह, उपदेश-कण एवं जैन धर्म विषयक लघु परिचय है। पत्रोत्तर का पता- श्री महेन्द्र राणा, टी.टी.चेरिटेबल ट्रस्ट, 879, मास्टर पृथ्वीनाथ मार्ग, अजमल खां पार्क के सामने, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, मो. 9899170717

बधाई/चुनाव

अलीगढ़ (टोंक)- श्री वैभव जैन सुपुत्र श्रीमती सुनीता-सुनीत जैन (सुपौत्र श्रीमती संतोष-

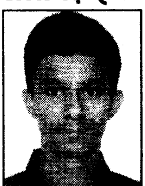

संघसेवी श्री सोभागमल जी जैन, व्याख्याता), महारानी फार्म, जयपुर के सीबीएसई-2012 में 92 प्रतिशत अंक प्राप्त करने एवं AIEEE में 4179 रेंक प्राप्त कर MNIT, Jaipur में Computer Engineering ब्रांच में प्रवेश लेने पर बधाई।

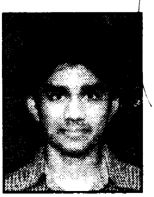

सवाईमाधोपुर- स्वाध्यायी श्री हरकचन्द जी जैन, बैंक मैनेजर के सुपौत्र श्री पुलकित जैन (सुपुत्र श्रीमती भारती-दिनेश जी जैन, जयपुर) एवं श्री आयुष (सुपुत्र श्रीमती अनीता-सुधीर जी जैन, जयपुर) ने AIEEE में अच्छी रैंक के साथ MNIT में प्रवेश प्राप्त किया है।

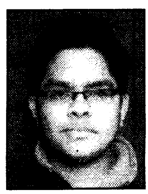

थांवला- श्री रोहित जैन सुपुत्र श्री गौतमचन्द जी डूंगरवाल, थांवला ने एमसीए की परीक्षा पंजाब टेक्निकल यूनिवर्सिटी से 78.14 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।

जोधपुर- सुश्री शिवांगी चौपड़ा सुपुत्री श्रीमती अन्नपूर्णा-महीपतराज जी चौपड़ा एवं सुपौत्री श्रीमती संतोषदेवी-नरपतराज जी चौपड़ा ने सीपीटी की परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर की वरीयता सूची में 18वाँ स्थान तथा जोधपुर में छठा स्थान प्राप्त किया है। आपने 12वीं सीबीएसई बोर्ड में भी 93.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

पांढरकवड़ा- सुश्री चारुलता लोढ़ा सुपुत्री श्रीमती वन्दना-महेश जी लोढ़ा ने बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण कर IITJEE में सफलता प्राप्त की।

जोधपुर- सुश्री निशा मेहता सुपुत्री श्रीमती स्नेहलता-रमेश जी मेहता (सुपौत्री सुश्रावक श्री विजयमल सा मेहता) ने प्रथम प्रयास में सीए की परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा जोधपुर की वरीयता सूची में तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

धुलिया-श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ में हुए नये चुनावों में श्री कांतिलाल भीकचन्द जी चोरडिया-अध्यक्ष, श्री नन्दलाल हुकमीचन्द जी रूणवाल-कार्याध्यक्ष, श्री शांतिलाल लालचन्द जी सांड-महामंत्री एवं श्री के.के. ताथेड़-मंत्री के पद पर मनोनीत किए गए।

उदयपुर- श्री संजय भंडारी अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेन्स द्वारा राजस्थान प्रान्त युवा शाखा के अध्यक्ष मनोनीत किए गए।

सी.ए. में उत्तीर्ण

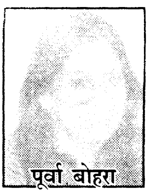
पूर्वा बोहरा

हिना कोठारी

नेहा भण्डारी

कमल गांधी

चेतना सुराणा

अंशुल मेहता

हिरेन भंडारी

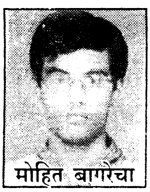
मोहित बागरेचा

अंकित मेहता

रक्षिता मेहता

जोधपुर- सुश्री पूर्वा बोहरा सुपुत्री श्रीमती सन्ध्या-अनिल जी बोहरा एवं सुपौत्री श्रीमती सुशीला जी बोहरा।

जयपुर- सुश्री हिना कोठारी सुपुत्री श्रीमती मंजू-अशोक कोठारी एवं सुपौत्री श्रीमती लाडकंवर-स्व. श्री नथमल जी कोठारी।

अहमदाबाद- सुश्री नेहा भंडारी सुपुत्री श्रीमती सरिता एवं श्री सुशील जी भंडारी।

जोधपुर- श्री कमल गांधी, पुत्र श्रीमती मंजू-राजेन्द्र जी गांधी एवं सुपौत्र स्व. श्रीमती जतनकंवर-स्व. श्री पारसमल जी गांधी।

चेन्नई- सुश्री चेतना सुराणा सुपुत्री श्रीमती ललिता-नरेन्द्रमल जी सुराणा (नागौर) एवं सुपौत्री श्रीमती सिरदारकंवर-स्व. श्री मानमल जी सुराणा 9 उपवास की तपस्या भी कर चुकी हैं।

जोधपुर- श्री अंशुल मेहता सुपुत्र श्रीमती मंजू-विरेन्द्र जी मेहता एवं सुपौत्र स्व. श्री नृसिंगराज जी मेहता।

ब्यावर- श्री हिरेन भंडारी सुपुत्र श्री नन्दलाल जी भण्डारी एवं प्रपौत्र सी.ए. श्री मूलचन्द जी भंडारी।

जोधपुर- श्री मोहित बागरेचा मेहता सुपौत्र श्री रतनचन्द जी सूरजकंवर एवं सुपुत्र श्रीमती अरूणा- राजेन्द्र जी बागरेचा।

जोधपुर- श्री अंकित मेहता एवं सुश्री रक्षिता मेहता सुपुत्र एवं सुपुत्री श्रीमती नीलम-श्री चन्द्रप्रकाश जी हुण्डिया मेहता, सुपौत्र स्व. श्री जसराज जी हुण्डीया, दौहित्र एवं दौहित्री स्व. श्री नरपतराज जी भंडारी।

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर- वयोवृद्ध स्वाध्यायी श्रावकरत्न श्री केवलमल जी लोढ़ा का 97 वर्ष की वय में 28

जुलाई 2012 को समाधिभावों में संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। सरकारी नौकरी में पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से कार्य करते हुए भी आचार्य भगवन्त श्री पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से रात्रि में संवर की साधना में, बड़े और छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. से बोल-थोकड़े सीखकर आपने अपने जीवन को इतना आगे बढ़ाया कि संत-सतियों, विरक्त-विरक्ताओं को थोकड़े आदि सिखाकर शासन की महती सेवा की। 5 पुत्र और 4 पुत्रियों की जिम्मेदारी निभाते हुए कभी भी न्याय-सम्पन्न-विभव के गुण में रत्ती भर भी आँच नहीं आने दी। पारिवारिक सदस्यों को सदा-सर्वदा सादगी, अल्प सामग्री से जीवन-यापन की प्रेरणा के साथ पुत्र, पुत्रवधुओं, पुत्रियों, पौत्र-पौत्रियों, दौहित्र-दौहित्रियों आदि को सामायिक, प्रतिक्रमण, संवर, दया आदि में भी आगे बढ़ाने के साथ अनेक लोगों को भी व्रत-नियम से श्रावक-श्राविका बनाने वाले सुज्ञ श्रावकजी ने मण्डल से प्रकाशित थोकड़ों, प्रश्नोत्तरों आदि की पुस्तकों में भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया। स्वाध्याय-संगम के संवत्सरी अंक का सम्पादन कर आगम टीकाओं के आधार से चौमासी से 50वें दिन सम्वत्सरी का आराधन करना, वीतराग आज्ञा के अनुरूप सिद्ध करना; उनकी विद्वत्ता के साथ आगम व्याख्या

साहित्य में गहरी अवगाहना प्रदर्शित करता है। श्रावकरत्न श्री लोढ़ा साहब को गतवर्ष संघ द्वारा 'आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान-2011' से सम्मानित किया गया था। 10 मार्च 1915 से प्रारम्भ हुई उनकी जीवन की यात्रा शनिवार 28 जुलाई 2012 को प्रातः 10.05 पर आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से प्रत्याख्यान ग्रहण कर अंतिम पड़ाव पर पहुँची। वर्षों से पूरे परिवार सहित प्रत्येक चातुर्मास में दर्शन-वन्दन कर आपकी विनति चलती रही, जयपुर महावीर नगर में चौमासा दो....। शायद उन्हें आभास सा था कि उसी चौमासे में ही उनका यह जीवन पूर्ण होगा। मध्याह्न 1.30 बजे तक निरन्तर संत-प्रवरों के मुखारविन्द से भजन, प्रेरणा, बड़ी संलेखना आदि पाठ सुनते-सुनते उनका जीव नश्वर शरीर को छोड़ विदा हो गया। संघ की गतिविधियों में लोढ़ा परिवार का सक्रिय सहयोग रहता है। हाल ही में लोढ़ा परिवार ने महावीर नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन के निर्माण का लाभ लिया है। गुरुदेव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जयपुर चातुर्मास में प्रारम्भ से ही चतुर्विध संघ-सेवा में लोढ़ा परिवार पूर्णतः सन्नद्ध है। आपके पुत्ररत्न श्री प्रतापसिंह जी, डॉ. प्रेमसिंह जी, श्री प्रवीण जी, श्री विनोद जी एवं श्री प्रमोद तथा सम्पूर्ण परिवार की धर्मनिष्ठा एवं गुरुभक्ति सराहनीय है।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त, संत-सेवी, वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक श्री सम्पतराज जी

बाफना का 28 जुलाई 2012 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। सुश्रावक श्री बाफना सा. श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। परमश्रद्धेय आचार्यभगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में वे सदैव तत्पर रहते थे। गुरु हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। आपका अधिकांश समय धर्म-साधना में व्यतीत होता था। गुरु हस्ती की प्रेरणा से आपने कई वर्षों तक पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी सेवा प्रदान की थी तथा नये स्वाध्यायियों को तैयार किया। आप परिवारजनों की सेवा के साथ अन्य असहाय व्यक्तियों की सेवा में भी तत्पर रहते थे। साहित्य पठन-पाठन के साथ अच्छा साहित्य लोगों को निःशुल्क वितरण करने का भी कार्य वर्षों तक आपने किया। अपने घर पर ही बहुत सुन्दर पुस्तकालय का निर्माण भी आपने कराया। श्रुत-सेवा का प्रचार-प्रसार उनके जीवन का परम ध्येय था। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान भी अंगीकार कर रखे थे। सादा जीवन उच्च विचार की लोकोक्ति आपके जीवन में परिलक्षित होती थी। जोधपुर के साधनाशील श्रावकों में आपका प्रमुख स्थान था। आपकी सतत साधना का ही सुफल था कि शरीर की अस्वस्थता होने पर आपने परिवारजनों से संथारा स्वीकार करने की

भावना व्यक्त की एवं परिवारजनों ने भी आपकी भावना का समादर करते हुए संथारा ग्रहण करने में सहयोग प्रदान किया। आपके पुत्ररत्न श्री प्रकाशचन्द जी, श्री उमरावमल जी, श्री स्वरूपचन्द जी एवं सम्पूर्ण बाफना परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन-निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है तथा संघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय सहयोग प्रदान करता है।

कोटा- सुश्राविका श्रीमती बिरधीबाई का 26 जुलाई 2012 को लगभग 97 वर्ष की आयु में 11 दिवसीय संथारे सहित समाधिभावों में महाप्रयाण हो गया। आपको 16 जुलाई को रामपुरा (कोटा) में चातुर्मास हेतु विराजित परम विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी ने तिविहार संथारे के पच्चक्खाण करवाये। पूज्य महासतीवृन्द एक-दो दिन के अन्तराल में नियमित रूप से आपके घर पहुँचकर मंगलपाठ आदि का श्रवण कराती थीं। आपका परिवार दिगम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखते हुए भी पूज्या महासती श्री से आपने संथारा ग्रहण किया, जो कि स्थानकवासी संघ/परम्परा के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा का परिचायक है। अंतिम संस्कार में कम से कम दोष लगें, इसलिए संथारा सीझने के बाद लगभग एक घंटे में सूर्यास्त के पहले आपका अंतिम संस्कार करके आपके परिवारवालों ने धर्माचरण का एक आदर्श समाज के सामने रखा। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

जलगाँव- संघवी परिवार के प्रमुख सुश्रावक श्री गुलाबचन्द जी संघवी का 23 जून 2012

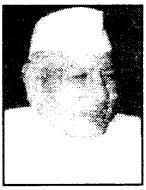

को संथाराव्रत के साथ समाधिमरण हो गया। 22 जून को उन्हें राष्ट्रसंत श्री कमलमुनि जी (कमलेश) के मुखारविन्द से सचेत अवस्था में संथारा व्रत के प्रत्याख्यान करवाये गये। संथारा लगभग 21 घंटे का सम्पन्न हुआ। श्री गुलाबचन्द जी संघवी का जीवन सरल, सादगीपूर्ण, मिलनसार व त्याग-प्रत्याख्यान से युक्त था। रात्रिभोजन, जमीकन्द आदि के आपके त्याग थे। आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के धारक संघवी जी प्रतिदिन 2-3 सामायिक करके ही आहारादि ग्रहण करते थे। आचार्य श्री हस्ती, हीरा, मान के प्रति उनकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। प्रतिवर्ष पूरे परिवार के साथ आचार्य श्री की सेवा में दर्शनार्थ 3-4 दिन रुककर सेवा करने का आपका क्रम जारी था। उनके पीछे उनकी धर्मसहायिका धर्मनिष्ठ सुश्राविका स्वाध्यायी श्रीमती केशरबाई जी, उनके चार सुपुत्र श्री भंवरलाल जी, कंवरलाल जी, जवाहरलाल जी, कमलकिशोर जी, दो सुपुत्रियाँ, पौत्र, पौत्री, प्रपौत्र, प्रपौत्री आदि 20 सदस्यों का भरापूरा परिवार है, जो एक ही छत के नीचे संयुक्त रूप से रहते हुए धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक सभी क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। आपके सुपुत्र श्री

कंवरलाल जी गत 5-6 वर्षों से पर्युषण में स्वाध्यायी के रूप में सेवा प्रदान कर रहे हैं। आप महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के उपाध्यक्ष भी हैं। जलगांव के भाउमण्डल की गतिविधियों के संचालन में भी आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है।

आलनपुर- धर्मप्रिय सुश्रावक श्री सूरजमल जी जैन सुपुत्र स्व. श्री रामकरण जी जैन (पुसेदा वाले) का 75 वर्ष की आयु में 28 मई 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप सहज, सरल एवं निष्कपट प्रवृत्ति के श्रावक थे एवं रात्रि-भोजन के त्यागी थे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित है एवं संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव अग्रणी रहता है।

जबलपुर- श्री विशित जैन सुपुत्र श्री शांतिलाल जी बाघमार एवं सुपौत्र श्री बाबुलाल जी

बाघमार (जबलपुर वाले) का 20 जून 2012 को 24 वर्ष की अल्पायु में हृदय गति रुक जाने से दुःखद निधन हो गया। आपने बी.ई. पुणे से, एम.बी.ए. गाजियाबाद से एवं केट की परीक्षा 99.45 प्रतिशतांक के साथ उत्तीर्ण की थी। आप आईएमटी कॉलेज गाजियाबाद के स्टुडेन्ट कौंसिल के चीफ सेक्रेटरी रहे एवं आपने अनेक उपलब्धियाँ जीवन में प्राप्त की थीं।

गंगापुर सिटी- सुश्राविका श्रीमती सरबती देवी जैन धर्मपत्नी श्री रामदयाल जैन

(फाजिलाबाद वाले) का 85 वर्ष की आयु में 22 मई 2012 को देहावसान हो गया। आपका जीवन धर्मनिष्ठ एवं त्यागमय रहा। आप प्रतिदिन सामायिक करती थीं। आपके जीवन पर्यन्त रात्रि-भोजन का त्याग था। आपकी रत्नसंघ में अटूट आस्था थी।

मदनगंज-किशनगढ़- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती शकुन्तलादेवी जी मेहता धर्मपत्नी

तपस्वी श्रावकरत्न श्री नरेन्द्र कुमार जी मेहता का 10 जुलाई 2012 को समाधि भाव के साथ परलोकगमन हो गया। आप विनम्र, सरल, सहिष्णु, मिलनसार, त्याग-तपस्या करने वाली सुश्राविका थीं। आप व आपका पूरा परिवार देव,गुरु, धर्म के प्रति समर्पित, श्रद्धाशील, सेवाभक्ति, वात्सल्य भावना वाला उत्कृष्ट परिवार है।

जयपुर- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती लीला जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री सज्जनसिंह जी मेहता का 16 जुलाई 2012 को स्वर्गगमन हो गया। सुश्राविका विगत कुछ समय से केन्सर जैसे असाध्य रोग से ग्रसित थी, परन्तु उनके चेहरे पर सदा अपूर्व शांति रही। समीपस्थ बजाज नगर में विराजित अपने धर्माचार्य धर्मगुरु पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. के दर्शन कर आपने जीवन का अन्त समय जानकर सभी प्रकार की पाप-प्रवृत्तियों का त्याग कर मंगलपाठ सुना। श्राविकारत्न ने

जीवन पर्यन्त सम्पर्क में आने वालों के साथ सहज स्नेह रखा, सबके साथ प्रेम-प्रीति बनाए रखी।

नवसारी- श्रीमती मन्नुजी जैन धर्मपत्नी श्री पार्श्वकुमार जी जैन (आलनपुर निवासी) का

71 वर्ष की वय में 20 जून 2012 को साध्वी श्री रश्मिता जी के मुखारविन्द से अन्तिम समय में भवआलोयणा, सभी प्रकार के परिग्रह के प्रत्याख्यान, मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात् देवलोकगमन हो गया। आपमें सरलता, सहजता, मिलनसारिता व सहिष्णुता के विशेष गुण थे। आपका जीवन धर्मनिष्ठ एवं त्यागमय रहा। आपके अष्टमी, चतुर्दशी के दिन हरी सब्जी का त्याग, जमीकन्द की मर्यादा, सदैव व्रत-नियम में रहना एवं नियमित सामायिक करना प्रमुख ध्येय थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के बीजापुर चातुर्मास में आपने सजोड़े शीलव्रत ग्रहण किया था।आपकी रत्नसंघ के प्रति अनन्य श्रद्धाभक्ति थी।

नारनोल- धर्मसाधिका श्रीमती राजरानीजी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन

सुराना का 11 जून 2012 को 95 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आप मधुरभाषी, कर्त्तव्यनिष्ठ, सरल एवं सहज थीं। आप प्रतिदिन सामायिक की आराधना करती थीं। संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में आप सदैव तत्पर रहती थीं। अपने अन्तिम समय तक आप त्याग-प्रत्याख्यान में सजग रहीं।

मदनगंज- सुश्राविका श्रीमती धन्नाकंवर कोचेटा धर्मपत्नी स्व. श्री उगमराज जी का 17 मई

2012 को समाधिभावों में प्रयाण हो गया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की सुशिष्या तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से 16 मई को सभी आरम्भ-परिग्रह आदि पापों का त्याग एवं आलोचना कर आपने संथारा ग्रहण किया। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ने सायंकाल पधार कर सुश्राविका जी को इस जीवन में एवं पूर्वभव में किये कर्मों एवं पापों का प्रायश्चित्त करवाया। आपके जीवन में कई व्रत-प्रत्याख्यान थे। आपकी रत्नसंघ के प्रति गहरी श्रद्धा थी।

भोपाल- सेवानिष्ठ सुश्रावक श्री भूपेन्द्र जी जैन सुपुत्र श्री पदमचन्द जी जालोरी का 32 वर्ष की आयु में 9 जून 2012 को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। आप साधु-साध्वियों की वैयावृत्त्य, सात्विक चिकित्सा आदि में सन्नद्ध रहते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13712 श्री इन्द्राजी जैन, 6-ए, महावीर कॉलोनी, अशोक नगर, उदयपुर (राजस्थान)
13713 श्री विकासजी जैन, ई-40, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राजस्थान)
13714 Smt. S. Monikaji Jain, Chennai (Tamilnadu)
13715 Shri R. Suniljі Dhoka, Chennai (Tamilnadu)
13716 श्री कल्याणमलजी डागा, सिटी पुलिस के सामने, जोधपुर (राजस्थान)
13717 श्री आर. के. जैन सा (आई.ए.एस.), 5, सत्यविहार, जयपुर (राजस्थान)
13718 श्री रमेश कुमारजी कोठारी, 122, मालदारु मार्ग, उदयपुर (राजस्थान)
13719 श्री हेमचंदजी सकलेचा, आमापारा, धमतरी (छत्तीसगढ़)
13720 श्री चहितजी नाहर, 192, लक्कड पीठा, रतलाम (मध्यप्रदेश)
13721 श्री दिलीपजी गाँधी, 117, कैलाशपुरी, निम्बाहेड़ा रोड़, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
13722 Shri Vinod Kumarji Tarawat, Coimbature (Tamilnadu)
13723 Shri JayM.Mahaveerchandji Jain,vellore (Tamilnadu)
13724 Shri Pradeep Kumarji Surana, Village-katha, (H.P.)
13725 श्री गणेशमलजी सुराणा, ग्राम-जसवंता बड़, जिला-नागौर (राजस्थान)
13726 श्री अनिल कुमारजी जैन, महावीर नगर-द्वितीय, कोटा (राजस्थान)
13727 श्री नरेन्द्रजी सुराणा, रानी बाजार इण्डस्ट्रियल एरिया, बीकानेर (राजस्थान)
13731 Shri Dilipji Bhandari. Kondithop, Chennai (Tamilnadu)
13738 Shri Sanjayji Lodha, Andheri (E), Mumbai (M.H.)
13739 Shri Nitinji Mohnot, Dugrapura, Jaipur (Rajasthan)
13780 श्रीमती रजनीजी कुमट, 22/5, वाई. एन. रोड़, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13797 Shri Deepesh Chand ji Surana, Chennai (Tamilnadu)
13798 श्री सूरजकरणजी सुराणा, ए-111, जनता कॉलोनी, जयपुर (राजस्थान)
13799 श्री कुशलचंदजी बड़ेर, 14, तख्तेशाही रोड़, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर (राज.)
13800 Shri Sagamalji Kothari, Choolai, Chennai (Tamilnadu)

250/-(अर्द्धमूल्य योजना) जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता

श्री प्रसन्नचंदजी, पुनवानचंदजी, हस्तीमलजी, लिलमचंदजी, शांतिलालजी ओस्तवाल, भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई के सौजन्य से

13728 श्री सागरमलजी दुहीडिया (जैन), बस स्टैण्ड, मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राज.)
13729 Shri Narender Singhji Jain, Chidambaram (Tamilnadu)
13730 Shri Rajesh ji Mehta, Worlinaka, Mumbai (M.H.)
13732 श्री जतनमलजी सिंघवी, अरविन्द नगर, एयरफोर्स एरिया, जोधपुर (राजस्थान)
13733 श्री पंकज कुमार जी बाफणा, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर (राजस्थान)
13734 श्री सुनीलजी चौपड़ा, नूर मार्केट, त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर (राजस्थान)

13735 श्रीमती इन्दु जी मोहनोत, डी-5, दासपा हाउस, रातानाडा, जोधपुर (राजस्थान)
13736 श्री राजकुमारजी बाँठिया, मण्डिया रोड़, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
13737 श्री रामसिंहजी चौहान (जैन), मौहल्ला काजीपुरा, कन्नौज (उत्तरप्रदेश)
13740 श्री मन्नालालजी जैन, यूआईटी कॉलोनी, प्रताप नगर, जोधपुर (राजस्थान)
13741 श्री दीपकजी जैन, गुलूभाई टेकरा, अम्बावाड़ी, अहमदाबाद (गुजरात)
13742 डॉ. अनिलजी भंडारी, बाल निकेतन स्कूल के सामने, जोधपुर (राजस्थान)
13743 श्री रोमिलजी मेहता, 197 ए, प्रथम सी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)
13744 श्री मानचंदजी मेहता, पहला पुलिया, चौपासनी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
13745 श्री बाबूलालजी हुण्डिया, वार्ड नं. 12, बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राजस्थान)
13746 श्री कुलदीपजी जैन, अरविंद नगर, एयर फोर्स एरिया, जोधपुर (राजस्थान)
13747 श्री दीपचंदजी टाटिया, महिला बाग अस्पताल के पास, जोधपुर (राजस्थान)
13748 श्री धनराजजी पारख, मेन बाजार, दुर्गावता बालेसर, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
13749 श्री तरुणजी चौपड़ा, बी.के. शोपिंग सेन्टर, त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर (राज.)
13750 श्री राहुलजी मेहता, पासन, सूस रोड़, पूना (महाराष्ट्र)
13751 श्री संदीपजी मेहता, आदर्श मौहल्ला, सूचना केन्द्र के पीछे, भीलवाड़ा (राज)
13752 श्रीमती रिंकूजी कोठारी, शंकर मार्केट, राजवाड़ा, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13753 श्री रविकुमारजी मोदी, सिलावटी मौहल्ला, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
13754 श्री कन्हैयालालजी बोहरा, लक्ष्मीबाई मार्ग, जावरा, जिला-रतलाम (मध्यप्रदेश)
13755 श्री जयेशकुमारजी जैन, पचाला, तहसील-उनियारा, जिला-टोंक (राजस्थान)
13756 श्री इन्द्रमोहनजी जैन (अध्यापक), पोस्ट-उनियारा, जिला-टोंक (राजस्थान)
13757 श्री ओमप्रकाशजी जैन, विश्वकर्मा मंदिर के पास, उनियारा, जिला-टोंक (राज)
13758 श्री ऋषभ कुमारजी जैन, आयकर विभाग, बूंदी (राजस्थान)
13759 श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन, कपड़े के व्यापारी, पोस्ट-इन्द्रगढ़, जिला-बूंदी (राज)
13760 श्री महावीर प्रसादजी पोरवाल, सुमेरगंजमंडी, जिला-बूंदी (राजस्थान)
13761 श्री राजेन्द्रजी जैन, मेनरोड़, सुमेरगंजमंडी, जिला-बूंदी (राजस्थान)
13762 श्री मनीष कुमारजी जैन, पी-32, विजयविहार, उत्तम नगर, नईदिल्ली (इंडिया)
13763 श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन (जिंदल), पोस्ट-देई, जिला-बूंदी (राजस्थान)
13764 श्री सुनील कुमारजी बम्ब, पोस्ट-देवली, जिला-टोंक (राजस्थान)
13765 श्री नितिनजी सुराणा, जतना कॉलोनी, लाल कुटीर, देवली, जिला-टोंक (राज)
13766 श्री गुलाबचंदजी पोखरणा, पटेलनगर, पोस्ट-देवली, जिला-टोंक (राजस्थान)
13767 श्री श्रेयांसजी सुराणा, विवेकानन्द कॉलोनी, पोस्ट-दवेली, जिला-टोंक (राज)
13768 श्री दीपक कुमारजी लोढ़ा, गणेश रोड़, पोस्ट-देवली, जिला-टोंक (राजस्थान)
13769 श्री दीपकजी छाजेड़, ककोड़, तहसील-उनियारा, जिला-टोंक (राजस्थान)
13770 श्री पारसचंदजी जैन, जनता कॉलोनी, पोस्ट-देवली, जिला-टोंक (राजस्थान)
13771 श्री दीपकजी पोखरणा, विवेकानन्द कॉलोनी, पोस्ट-देवली, जिला-टोंक (राज)
13772 श्री डी.सी. जैनजी, विवेकानन्द कॉलोनी, पोस्ट-देवली, जिला-टोंक (राजस्थान)
13773 श्री कमल कुमारजी जैन, तलवंडी, राधाकृष्ण मंदिर के पास, कोटा (राजस्थान)
13774 श्री मोहनलालजी जैन (रूणवाल), 51, पैलैस रोड़, रतलाम (राजस्थान)

13775 श्री प्रतीक कुमारजी ढड्ढा, मकान नं. 1-झ-83, विज्ञान नगर, कोटा (राजस्थान)
13776 श्री पंकज कुमारजी जैन ढड्ढा, नं. 2-म-34, विज्ञान नगर, कोटा (राजस्थान)
13777 श्री शैलेष कुमारजी ढड्ढा, मकान नं. 1-ख-3, विज्ञान नगर, कोटा (राजस्थान)
13778 श्री भुनेश कुमारजी जैन, 251, शोपिंग सेन्टर, कोटा (राजस्थान)
13779 श्री विशाल कुमारजी जैन, कार्यालय के पास, मेन रोड़, छावनी, कोटा (राजस्थान)
13781 श्री जितेन्द्र कुमारजी लुणावत, श्यामनगर द्वितीय, अजमेर रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13782 श्री संजय कुमारजी जैन, 33 ए, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)
13783 श्री सुनील कुमारजी मेहता, सुन्दर विहार, सागर भवन, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
13784 श्री राजेन्द्र कुमारजी नागौरी, हिरण मगरी, सेक्टर नं. 3, उदयपुरसिटी (राज)
13785 श्री अंकित कुमारजी लोढ़ा, बजाज खाना, कोटा (राजस्थान)
13786 श्री सुभाष जे. मुथाजी, 'सूरज' मुणोत स्टेट, स्टेशन रोड़, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
13787 श्री गौतमजी जैन, बोर का चौक, बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राजस्थान)
13788 Shri Abhinavji Singhvi, Hari Nagar, New Delhi
13789 श्री लादूलालजी काठेड़, 'ऋषभ', गली नं. 7, रामनगर, अजमेर (राजस्थान)
13790 श्री अशोक कुमार जी जैन, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13791 Shri Mahendra Kumar ji Jain, Rohini, New Delhi
13792 श्रीमती मीनाक्षीजी जैन, विद्या निकेतन कैम्पस, पिलानी, जिला-झुन्झुनूँ (राज.)
13793 श्रीमती शशिजी जैन, चित्रकूट स्कीम, वैशाली नगर, जयपुर (राजस्थान)
13794 Shri Manishji Kothari, Tilak Nagar, Jaipur (Rajasthan)
13795 Smt. Mansiji Jain, Post-virar (e), Distt. Thane (M.H.)
13796 श्री अशोक कुमारजी जैन (निगम वाले), गुलाबबाड़ी, कोटा (राजस्थान)
13801 श्री राजेन्द्र कुमारजी जैन, बी-61, मालवीय नगर, अलवर (राजस्थान)
13802 डॉ. वीरेन्द्रजी गाँधी, स्पाई सी क्विज के पीछे, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
13803 श्री योगेशजी गाँधी, कबूतरों का चौक, जोधपुर (राजस्थान)
13804 श्रीमती सुषमाजी सिंघवी, 227, सुभाषनगर, पाल-रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
13805 श्री छगनराजजी जैन, 29 ए, कांतीनगर, बनीपार्क, जयपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

15000/-श्री महावीरचन्द जी, मनोज जी, कमलेश जी बाफना, जोधपुर, जिनवाणी बालस्तम्भ के पुरस्कार हेतु।

5100/- श्री सुनीलजी, अनिलजी, प्रेरकजी, प्रखरजी, आदित्यजी कोठारी, मेड़तासिटी, श्री ताराचंदजी-कान्ताजी कोठारी, मेड़तासिटी की शादी की 50वीं सालगिरह दिनांक 7 जुलाई, 2012 की खुशी में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री पारसमलजी, कुणाल कुमारजी खारीवाल, मैसूर, चि. कुणाल कुमारजी के शुभ-विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री बाबूलालजी, शांतिलालजी बाघमार, जबलपुर, प्रिय सुपुत्र विशित का दिनांक 20/6/2012 को अल्पायु में आकस्मिक निधन हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

2000/- श्री दिलीपजी सुगनचंदजी भंडारी, रत्नागिरि, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

प्रभृति संत-सतीवृन्द के महावीर नगर, जयपुर में दर्शन लाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1501/- श्रीमती ललिताजी धर्मपत्नी श्री महेन्द्रजी गांग (जोधपुर वाले), सूरत, श्री अनुपम गांग, हॉल निवासी यूएसए, श्री अभिषेक जी गांग के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती किरणजी जैन, होशियारपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं संत-सती वृन्द के जयपुर में परिवार सहित दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती मैनाबाईजी बागमार धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी बागमार, मैसूर, आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री बस्तीमलजी, अमित कुमारजी श्री श्रीमाल, शिमोगा, वीर माता श्रीमती धनवंती बाईजी धर्मसहायिका वीर पिता श्री बस्तीमलजी श्री श्रीमाल का प्रथम वर्षीतप सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री नरेन्द्र कुमारजी, विजय कुमारजी मेहता, किशनगढ़, श्रीमती शकुन्तलादेवी जी मेहता की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती कौशल्या देवी जी बाफना, जोधपुर, सहायतार्थ।

1100/- श्री सुरेन्द्रसिंह जी, नरेन्द्रसिंह जी बागरेचा मेहता, जयपुर, श्रीमती लीला जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री सज्जनसिंह जी मेहता के 16 जुलाई 2012 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री विजयकुमार जी खिंवसरा, मांडल, जिला-जलगांव (महा.), आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री विजयमल जी मेहता, अपनी सुपौत्री सुश्री निशा मेहता सुपुत्री श्रीमती स्नेहलता-रमेश जी जैन के सीए प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण होने तथा जोधपुर में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर सप्रेम भेंट।

1001/- श्री बाबूलालजी, पंकज कुमारजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. अतुल कुमारजी सुपुत्र श्री बाबूलालजी जैन का शुभ-विवाह सौ.कां. प्रियंकाजी सुपुत्री श्री सुरेशचंदजी जैन, कुश्तला के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री दौलतमलजी, हर्ष कुमारजी मेहता, तलवंडी-कोटा, स्व. श्रीमती सूरजबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री सुजानमलजी मेहता, चौथ का बरवाड़ा-सवाईमाधोपुर की दिनांक 13 जुलाई 2012 को प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री पार्श्व कुमारजी जैन, (आलनपुर वाले), नवसारी, श्रीमती मन्नूजी जैन का दिनांक 20.06.2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री महावीर प्रसादजी, योगेन्द्र कुमारजी जैन (देवली वाले), सवाईमाधोपुर चि. जितेन्द्रजी सुपुत्र श्री महावीरप्रसादजी जैन के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री त्रिलोकचंदजी, पवन कुमारजी जैन (छारोदा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. प्रवीणजी सुपुत्र त्रिलोकचंदजी जैन संग सौ.कां. कविताजी सुपुत्री श्री दिनेश बाबूजी जैन-आवासन मंडल, सवाईमाधोपुर के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री सुरेशचंदजी, मनोज कुमारजी जैन, कोटा, चि. धर्मेन्द्र सुपुत्र श्रीमती अशादेवीजी-सुरेशजी जैन (श्यामपुरा वाले) का शुभविवाह सौ.कां. ममताजी सुपुत्री श्रीमती शकुन्तलादेवीजी-धर्मचंदजी जैन (मंडावरा वाले) के साथ सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री राजेन्द्रजी चौधरी, हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, चि. विजय कुमारजी का शुभ-विवाह दिनांक 14 जून 2012 को सौ.कां. अंजनाजी सुपुत्री श्री हरकचंदजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा के

संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री हेमन्त कुमारजी, विजय कुमारजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. विजयजी जैन सुपुत्र श्री हेमन्त कुमारजी संग सौ.कां. कनिकाजी सुपुत्री प्रकाशचंदजी जैन, इन्दौर के साथ सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री मोहनलालजी, ताराचन्दजी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. पवनजी सुपुत्र श्री ताराचंदजी जैन का शुभ-विवाह सौ.कां. पिंकीजी सुपुत्री श्री महावीरप्रसादजी जैन, आदर्श नगर-सवाईमाधोपुर के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती संतोष-सोभागमलजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, सुपौत्र चि. वैभवजी सुपुत्र श्रीमती सुनीताजी-सुनीतजी जैन, महारानी फार्म-जयपुर के सीबीएसई परीक्षा विज्ञान वर्ग में 92% अंक प्राप्त करने एवं एमएनआईटी, जयपुर में कम्प्यूटर इंजीनियरिंग ब्रांच में प्रवेश लेने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री हरकचन्द जी जैन बिलोता वाले, सवाईमाधोपुर-जयपुर, चि. पुलकित सुपुत्र श्री दिनेश-भारती जी जैन एवं आयुष सुपुत्र श्री सुधीर-अनीता जी जैन का एमएनआईटी में प्रवेश होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री अनिलजी, महेन्द्रजी, ऋषभजी जैन (पुसेदा वाले) आलनपुर-सवाईमाधोपुर, श्रीमान् सूरजमलजी जैन का 28 मई, 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री राजकुमारजी कर्णावट, जयपुर, चि. श्रेयांसकुमारजी कक्षा 10वीं में सीबीएसई की परीक्षा सुबोध पब्लिक स्कूल से ए श्रेणि से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती सरिताजी-रिखबचंदजी बोहरा, जयपुर, पूज्य पिताश्री ताराचंदजी एवं मातुश्री श्रीमती कांताजी कोठारी, मेड़तासिटी की शादी की 50वीं सालगिरह दिनांक 07 जुलाई 2012 की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रेमचंदजी कोचेटा, मदनगंज-किशनगढ़, श्रीमती धन्नाकँवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री उगमराजजी कोचेटा के समाधिमरण के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री आयुषजी बोहरा, दिल्ली, परदादा स्व. श्री बस्तीमलजी बोहरा की 22वीं पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री सुरेशकुमारजी, अशोक कुमारजी, देवराजजी, यशवंतजी खींचा, अशोकनगर-बेंगलोर चि. पवन कुमारजी सुपुत्र श्री सुरेशकुमारजी का शुभ-विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रेमचन्दजी जैन, जयपुर, श्री अमितजी जैन का चयन चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें जयपुर, राजस्थान में फर्मासिष्ट पद पर नियुक्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

45000/-श्री ज्ञानचन्द जी अमरचन्द जी लुणावत (तिलोरा वाले), अजमेर, ज्ञानचन्द जी एवं श्रीमती लीला जी लुणावत ने महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में पुस्तक 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' संक्षिप्त भाग 1 का पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट किए।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

4000/- श्री महावीरचन्द जी मनोजकुमार जी, कमलेश जी बाफना, जोधपुर, सहायतार्थ।

1150/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्योपुरकलां (म.प्र.) पर्युषण सहायतार्थ।

1100/- श्री कृष्णमोहन जी जैन, हिण्डौन सिटी, अपने सुपुत्र श्री ऋषभ जैन के सीपीटी की परीक्षा में सफल होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री विनोद कुमारजी जैन (बरगमा वाले), चाकूस, चि. जयकुमारजी जैन के शुभ-विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री लल्लूलाल जी धर्मेन्द्रकुमार जी जैन, पुसेदा वाले, आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर, चि. सन्नी (कुलदीप) जैन सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र कुमार जी संग सौ. कां. सपना सुपुत्री श्री रमेशचन्द जी जैन, इन्दौर के शुभ विवाहोपलक्ष्य में शाखा बजरिया को सप्रेम भेंट।

501/- श्री त्रिलोकचन्द जी, पवन कुमार जी जैन, छारोदा वाले, बजरिया, चि.प्रवीण जैन सुपुत्र श्री त्रिलोकचन्द जी जैन संग सौ.कां. कविता जैन सुपुत्री श्री दिनेशबाबू जी जैन, आ.म., सवाईमाधोपुर के शुभ विवाहोपलक्ष्य में शाखा बजरिया को सप्रेम भेंट।

501/- श्री जयकुमार जी जैन सुपुत्र श्री विनोद कुमार जी जैन, चाकसू (बरगमा वाले), श्री जयकुमार जी जैन के विवाहोपलक्ष्य में बजरिया शाखा को सप्रेम भेंट।

501/- श्री राजेन्द्र जी चौधरी, हा.बोर्ड, सवाईमाधोपुर, चि. विजयकुमार का शुभ विवाह सौ. कां. अंजना सुपुत्री हरकचन्द जी जैन-अलीगढ़ के विवाहोपलक्ष्य में शाखा बजरिया को सप्रेम भेंट।

500/- श्री सुरेशकुमार जी सुपुत्र श्री जौहरीलाल जी चौधरी, सिरकाली, परमपूज्या साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

12000/-श्रीमती कुशल जी मेहता, जोधपुर।

12000/-श्री बाबूलाल जी शांतिलाल जी बाघमार, जबलपुर, स्व. श्री विशित जैन की पुण्य-स्मृति में।

12000/-श्रीमती पिस्ताकंवर जी चौधरी, चेन्नई, स्व. श्री रतनराज जी चौधरी की पुण्य-स्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

प्रथम भाद्रपद कृष्णा 12 मंगलवार	14.08.2012	पर्युषण पर्व प्रारम्भ
प्रथम भाद्रपद कृष्णा 14 गुरुवार	16.08.2012	चतुर्दशी, पक्खी
प्रथम भाद्रपद शुक्ला 4 मंगलवार	21.08.2012	संवत्सरी
प्रथम भाद्रपद शुक्ला 8 शनिवार	25.08.2012	अष्टमी
प्रथम भाद्रपद शुक्ला 14 गुरुवार	30.08.2012	चतुर्दशी
प्रथम भाद्रपद शुक्ला 15 शुक्रवार	31.08.2012	पक्खी
द्वितीय भाद्रपद कृष्णा 8 शनि-रवि	08-09.09.2012	अष्टमी
द्वितीय भाद्रपद कृष्णा14 शनिवार	15.09.2012	चतुर्दशी, पक्खी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान) फोन नं. 2575997, 2571163 फैक्स नं. 0141-2570753

प्रकाशित साहित्य-सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	दर रु.
1.	अमरता का पुजारी	15
2.	अमृत-वाक्	10
3.	अजीव पर्याय	5
4.	आवश्यक सूत्र (हिन्दी-अंग्रेजी)	10
5.	आहार संयम और रात्रि भोजन त्याग	4
6.	आचारांगसूत्र (मूल)	10
7.	आध्यात्मिक आलोक	40
8.	आध्यात्मिक पाठावली	2
9.	आनुपूर्वी	10
10.	अहिंसा निउणा दिट्ठा	40
11.	अध्यात्म की ओर*	30
12.	अन्तगडदसासूत्र	30
13.	भक्तामर स्तोत्र	10
14.	चौदह नियम	4
15.	24 ठाणा का थोकड़ा	5
16.	दशवैकालिकसूत्र	40
17.	दशवैकालिकसूत्र (हिन्दी भावार्थ)	20
18.	दीक्षा कुमारी का प्रवास	25
19.	दो बात	5
20.	दुर्गादास पदावली	5
21.	एकादश चरित्र संग्रह*	15
22.	गजेन्द्र सुक्ति सुधा*	20
23.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-1	15
24.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-2	15
25.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-3	15
26.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-4	15
27.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-5	15
28.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-6	15
29.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-7	15
30.	गजेन्द्र पद मुक्तावली	5
31.	गमा का थोकड़ा	10
32.	गुणस्थान स्वरूप	3
33.	गुरु गरिमा एवं श्रमण जीवन	100
34.	ज्ञातासूत्र की कथायें	10
35.	ज्ञान लब्धि, द्रव्येन्द्रिय का थोकड़ा	2
36.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1*	15
37.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-2	25
38.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-3*	15
39.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-4	25
40.	जैन इतिहास के प्रसंग भाग-1 से 40	5
41.	जैन आचार्य चरितावली	15
42.	जैन स्वाध्याय सुभाषित माला*	10
43.	जैन तमिल साहित्य और तिरुकुरल	20
44.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-1*	225
45.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-2	225
46.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-3	225
47.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-4	225
48.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास संक्षिप्त	75
49.	जैनागम	50
50.	जैन विचारधारा में शिक्षा	25
51.	जैन धर्म में ध्यान	70
52.	झलकियाँ जो इतिहास बन गई	15
53.	जीवन निर्माण भजनावली	2
54.	जीवन अमृत की छाँव*	20
55.	जीव धड़ा	3
56.	जीव पज्जवा, काय स्थिति	5
57.	कर्म प्रकृति	2
58.	कर्मग्रन्थ	15
59.	कुलक कथायें	20
60.	कायोत्सर्ग	50
61.	लघुदण्डक	3
62.	नवतत्त्व	5
63.	निसीहज्झयणं (मूल)	10
64.	निर्ग्रन्थ भजनावली	40
65.	नमो गणि गजेन्द्राय	20
66.	पच्चीस बोल (विवेचन सार्थ)	10
67.	25 बोल (मूल)	3
68.	पाँच बात	5
69.	पथ की रुकावटें	15
70.	प्रश्नव्याकरणसूत्र भाग-1	45
71.	प्रश्नव्याकरण सूत्र भाग-2	35
72.	प्रार्थना प्रवचन	15
73.	प्रथमा पाठ्यक्रम (प्रतिक्रमणसूत्र)	5
74.	प्रतिक्रमण विशेषांक	50
75.	प्रेरक कथाएँ	20
76.	पर्युषण साधना	5
77.	पर्युषण सन्देश	20
78.	पर्युषण पर्वाराधन	15
79.	मुक्तक-मुक्ता	15
80.	मुक्ति का राही	100
81.	रत्नसंघ के धर्माचार्य*	20
82.	रत्नस्तोक मंजूषा	5
83.	67बोल उपयोग, संज्ञा और	2
84.	47 बोल, 50 बोल व 800 बोल	3
85.	समिति गुप्ति-गति आगति	2
86.	सामायिक सूत्र प्रवेशिका पाठ्यक्रम	5
87.	सप्त कुव्यसन*	5
88.	षड्द्रव्य एवं विचार पंचशिका	5
89.	सिरि अन्तगडदसाओसुत्त	35
90.	सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी	5
91.	शिवपुरी की सीढ़ियाँ*	15
92.	शास्त्र स्वाध्याय माला	20
93.	श्रमण आवश्यक सूत्र	10
94.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	5
95.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	10
96.	श्रावक के बारह व्रत	5
97.	श्री सामायिक सूत्र (सार्थ)	3
98.	श्री नवपद आराधना*	5
99.	श्री नन्दीसूत्रम्	40
100.	सुख विपाक सूत्र*	10
101.	स्वाध्याय स्तवन माला	30
102.	सामायिक साधना और स्वाध्याय	10
103.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1	30
104.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-2	50
105.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-3*	50
106.	उत्तराध्ययनसूत्र हिन्दी	50
107.	उत्तराध्ययनसूत्र पद्यानुवाद	20
108.	युवा सँवारे यौवन	20
109.	वैराग्य शतक	5
110.	व्रत प्रवचन संग्रह	10
111.	बृहत्कल्पसूत्रम् (सटीकम्)	30
112.	बृहद् आलोयणा	5

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निवेदन को स्वीकार कर संघ द्वारा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा-दिवस के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना का विस्तार किया गया है।

इस योजना के माध्यम से गत 6 वर्षो से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं । छात्र चयन समिति के पास से आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

नियमावली

1 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

2 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

3 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

4 आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा ।

5 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	**Up to Class 10th**	**11th & 12th**	**Graduation & Post Graduation**	**Professional Etc.**
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

6 चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।

7 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.- 044-42728476 ,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.co.in

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है । आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है । आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन-पत्र Download कर सकते हैं।

जिनवाणी पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने हेतु प्रारूप

(इच्छुक पाठक जो जिनवाणी की सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं निम्नांकित प्रारूप में अपनी सम्पूर्ण जानकारी भरकर नीचे लिखे पते पर प्रेषित करें।)

मैं.............................पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री....................................

पता..

....

फोन नं. :.................................मो. :.....................................

ई-मेल..

जिनवाणी मासिक पत्रिका की आजीवन सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ। इस हेतु मैं 500/-रुपये (अर्धमूल्य योजना के अन्तर्गत 250 रुपये) का चैक/ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। कृपया मुझे पत्रिका नियमित प्रेषित करावें।

स्तम्भ सदस्यता-21,000/- आजीवन विदेश में-12,500/-

संरक्षक सदस्यता- 11,000/- त्रैवार्षिक सदस्यता-120/-

हस्ताक्षर

प्रारूप भेजने का पता:-विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.), फोन नं. 0141-2575997

विज्ञापन

जैन छात्रों के लिए चेन्नई में आवास-व्यवस्था

- जो प्रतिभाशाली जैन छात्र चेन्नई में रहकर अपना अध्ययन करना चाहते हैं, उनके लिए चेन्नई महानगर में आवास-व्यवस्था की गई है। कमजोर वित्तीय स्थिति वाले उन धर्मनिष्ठ मेधावी छात्रों को आमंत्रित किया जाता है जो अपने जीवन में पढ़-लिखकर संघ-समाज, देश व जिनशासन की सेवा के साथ अपने जीवन को संवारना चाहते हैं। चयन में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल तथा अन्य धार्मिक जानकारी एवं योग्यता रखने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी। पारिवारिक, शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक और अन्य आवश्यक तथ्यों के साथ पूर्ण विवरण सहित निम्नांकित पते पर आवेदन करें। आधे-अधूरे आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

Dr. Dileep Dhing
Surana & Surana International Attorneys
61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore, Chennai-600004
Phone: 044-28120000/28120002

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस
खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी ।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

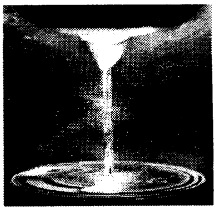
Electric Arc Furnace

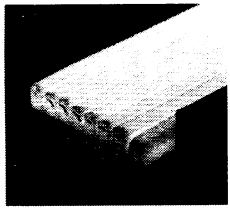
Billets

Rolling Mill

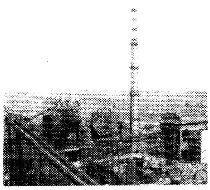
Captive Power Plant

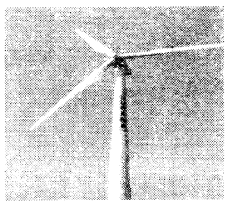
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

समस्त गुरु भाईयों को सादर जय जिनेन्द्र।

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत 1008 श्री हस्तीमल जी म. सा. एवं आचार्य हस्ती के पट्टधर सरल, निरपेक्ष, दीर्घदृष्टा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं शान्त–दान्त–गम्भीर, परम तेजस्वी उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. एवं संत–सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ, गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत छः वर्षों से युवारत्न छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रुप से चल रही हैं।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निवेदन को स्वीकार कर संघ द्वारा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना का विस्तार कर दिया गया हैं।

हमारा यह विश्वास है कि यह योजना न केवल छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से भी नींव का पत्थर साबित होगी। छात्रवृत्ति योजना के तहत् संचालित शिविरों के माध्यम से अनेक छात्र–छात्राएँ संघ के कर्मनिष्ठ स्वाध्यायी एवं ऊर्जावान कार्यकर्त्ता के रूप में उभरेगें।

आप सभी गुरुभाइयों से सनम्र निवेदन है कि इस योजना के उद्धेश्यों को सफल बनाने हेतु हम अपने गुरुभाइयों के व्यवहारिक एवं धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु इस योजना के आवदेन पत्र भरवाकर अपना कर्त्तव्य निभाएगें एवं आप स्वयं एवं संघ समर्पित गुरुभाइयों को इस योजना में अर्थ सहयोग करावें एवं छात्र–छात्राओं का भविष्य उज्जवल बनाने में सहायक बनें।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के प्रत्येक कार्यक्रम व आयोजन आपके स्नेह व निरन्तर सहयोग से ही गतिमान है, तथा इस योजना की सफलता में भी आपके गतिमान निरन्तर सहयोग की अपेक्षा है।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते है, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

Scholarship Fund Bank A/c Details
A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168

सहयोग राशि भेजने एवं योजना संबंधित अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

1. **Ashok Kavad,** Chennai (9381041097)
2. **Sumtichand Mehta,** Pipar (9414462729)
3. **Mahendra Surana,** Jodhpur (9309087760)
4. **Budhmal Bohra,** Chennai (9444235065)
5. **Rajkumar Golecha,** Pali (9829020742)
6. **Manoj Kankaria,** Jodhpur (9414563597)
7. **Praveen Karnavat,** Mumbai (9821055932)
8. **Kushalchand Jain,** Sawai Madhopur (9460441570)
9. **Jitendra Daga,** Jaipur (9829011589)
10. **Mahendra Bafna,** Jalgaon (9422773411)
11. **Harish Kavad,** Chennai (9500114455)
12. **Manish Jain,** Chennai (9543068382)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

श्री मदन मोहनजी साखला,
सौ. हेमलता मदन साखला
श्री मेहुल मदन साखला
सौ. प्रणिता मेहुल साखला और
बेबी गुणम मेहुल साखला

चौबासौ तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर सर रखते है
और
विनम्रता तथा सार्थ अभिमान से
जाहीर करते है की
''जीनवाणी'' के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
तथा सदैव सहकार्य रहेगा ।

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Maan

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अगस्त, 2012 ★भाद्रपद, 2069

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित। सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन